॥ श्री ॥

आधुनिक तेजी-मंदी का विधान

अर्थात्

अंशात्मक १७७१ दृष्टि योगों का विश्लेषण

(तेजी मन्दी का अनुपम ग्रन्थ)



रचयिता—

गणक-भास्कर श्री पं० गंगाप्रसाद जी ज्योतिषाचार्य,

ज्योतिर्विज्ञारत्न,

मुरार (मध्य प्रदेश)

प्रकाशक—श्री महालक्ष्मी पब्लिकेशन्स्

मुरार (मध्य प्रदेश)

प्रथमावृत्ति १०००

मूल्य ... ८)

विषय—अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ क्रमांक
प्रस्तावना	१...११
वायदा व्यापार की आवश्यकता	१...८
सूर्य के द्वारा तेजी-मंदी का महत्व ...	१...३
राशियों के अन्तर्गत भिन्न-भिन्न देश व नगर	३...४
अंशात्मक दृष्टि योग विचार ...	५...१४
वस्तुओं का राशि विचार ...	१४...१५
वस्तुओं का आधिपत्य ग्रह	१६...१७
राशि व ग्रहों का तेजी-मंदी ज्ञान चक्र	१७...१८
ग्रहों का शर विचार	१९...२०
दृष्टि योगों का प्रभावकाल	२१...२२
तेजी मंदी जानने के नियम	२३...२४
नवांशों का सामान्य ज्ञान	२४...२७
दृष्टि योगों का व्यापार पर प्रभाव	२७...२८
सूर्य का चन्द्र के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव ...	२८...३२
सूर्य का मंगल " " " ...	३२...३६
सूर्य का बुध " " " ...	३६...४०
सूर्य का गुरू " " " ...	४०...४४
सूर्य का शुक्र " " " ...	४४...४८
सूर्य का शनि " " " ...	४८...५२
सूर्य का राहु " " " ...	५२...५५
सूर्य का केतु " " " ...	५६...५९
सूर्य का हर्शल " " " ...	६०...६३
सूर्य का नेपच्यून " " " ...	६३...६७
सूर्य का प्लूटो " " " ...	६७...७१

चन्द्र का सूर्य	,,	,,	,,		...	७१...७५
चन्द्र का मंगल	,,	,,	,,		...	७५...७६
चन्द्र का बुध	,,	,,	,,		...	७६...८३
चन्द्र का गुरू	,,	,,	,,		...	८३...८७
चन्द्र का शुक्र	,,	,,	,,		...	८७...९१
चन्द्र का शनि	,,	,,	,,		...	९१...९५
चन्द्र का राहु अथवा केतु के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव					...	९५...९९
चन्द्र का हर्शल के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव					...	९९...१०३
चन्द्र का नेपच्यून	,,	,,	,,		...	१०४...१०८
चन्द्र का प्लूटो	,,	,,	,,		...	१०९...११२
मंगल या प्लूटो का सूर्य के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव					...	११३...११५
,,	,,	चन्द्र	,,	,,	...	११६...११८
,,	,,	बुध	,,	,,	...	११९...१२१
,,	,,	गुरू	,,	,,	...	१२२...१२४
,,	,,	शुक्र	,,	,,	...	१२५...१२७
,,	,,	शनि	,,	,,	...	१२८...१३०
,,	,,	राहु अथवा केतु	,,	,,	...	१३१...१३३
,,	,,	हर्शल	,,	,,	...	१३४...१३६
,,	,,	नेपच्यून	,,	,,	...	१३७...१३९
मंगल का		प्लूटो	,,	,,	...	१४०...१४२
बुध या शुक्र का सूर्य के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव					...	१४३...१४५
,,	,,	चन्द्र	,,	,,	...	१४६...१४८
,,	,,	मंगल	,,	,,	...	१४९...१५१
,,	,,	गुरू	,,	,,	...	१५२...१५४
बुध का		शुक्र	,,	,,	...	१५५...१५७
बुध या शुक्र का		शनि	,,	,,	...	१५८...१६०

"	"	राहु अथवा केतु	"	"	...	१६१...१६३
"	"	हर्शल	"	"	...	१६४...१६६
"	"	नेपच्यून	"	"	...	१६७...१६९
"	"	प्लूटो	"	"	...	१७०...१७२
गुरू या नेपच्यून का सूर्य के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव					...	१७३...१७५
"	"	चन्द्र	"	"	...	१७६...१७८
"	"	मंगल	"	"	...	१७९...१८१
"	"	बुध	"	"	...	१८२...१८४
"	"	शुक्र	"	"	....	१८५...१८७
"	"	शनि	"	"	....	१८८...१९०
"	"	राहु अथवा केतु	"	"	...	१९१...१९३
"	"	हर्शल	"	"	...	१९४ . १९६
गुरू का नेपच्यून के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव					...	१९७...१९९
गुरू या गेपच्यून का प्लूटो के साथ			"	"	.	२००...२०२
शनि या हर्शल का सूर्य के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव					...	२०३...२०५
"	"	चन्द्र	"	"	...	२०६...२०८
"	"	मंगल	"	"	...	२०९ . २११
"	"	बुध	"	"	...	२१२...२१४
"	"	गुरू	"	"	....	२१५...२१७
"	"	शुक्र	"	"	...	२१८...२२०
"	"	राहु या केतु	"	"	...	२२१...२२३
शनि का हर्शल			"	"	...	२२४...२२६
शनि या हर्शल का नेपच्यून			"	"	...	२२७...२२९
"	"	प्लूटो	"	"	...	२३०...२३२
राहु या केतु का सूर्य के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव					....	२३३...२३५
"	"	चन्द्र	"	"	...	२३६ . २३८

,,	,,	मंगल	,,	,,	...	२३९...२४१
,,	,,	बुध	,,	,,	...	२४२...२४४
,,	,,	गुरू	,,	,,	...	२४५...२४७
,,	,,	शुक्र	,,	,,	...	२४८...२५०
,,	,,	शनि	,,	,,	...	२५१...२५३
,,	,,	हर्शल	,,	,,	...	२५४...२५६
,,	,,	नेपच्यून	,,	,,	...	२५७...२५९
,,	,,	प्लूटो	,,	,,	...	२६०...२६२
परिशिष्ट		...	....		...	२६३...२६९

प्रस्तावना

इस पुस्तक के सम्बन्ध में कुछ जानकारी देने के पूर्व हमने जिस विषय पर यह पुस्तक लिखी है उस विषय के सम्बन्ध में परिचित करा देना हम अपना कर्त्तव्य समझते हैं वैसे तो इस पुस्तक के नाम से ही आप भलि भांति समझ गए होंगे कि यह पुस्तक तेजी मंदी के सम्बन्ध में लिखी गई है फिर भी इस तेजी मंदी का सिद्धांत क्या है और इसका संबंध किससे है यह बताना आवश्यक ही है। जैसे-जैसे सभ्यता का विकास होता गया वैसे-वैसे ही मानव अपनी उन्नति की ओर अग्रसर होता गया तथा अपने जीवन को सुखमय बनाने के लिये उसने नए-नए अविष्कार किए। उन्हीं आविष्कारों में एक आविष्कार मुद्रा का प्रचलन भी है और जब मुद्रा के प्रचलन में वृद्धि लाने का प्रयत्न किया गया होगा तो यह आवश्यक था कि विज्ञानवेत्ताओं ने अपनी बौद्धिक खोज से व्यापार का मार्ग ढूंढ निकाला होगा और जैसे-जैसे मानव अपनी ओर उन्नति करता गया तो वैसे ही वैसे व्यापार चलन में भी वृद्धि के साथ ही साथ अति सरल और सुविधा पूर्ण हो ऐसी परिस्थिति में सोचा गया कि व्यापार में ऐसी पद्धति निकाली जाय जिससें कम सें कम पूंजी में अधिक धन प्राप्त किया जा सके इसके लिये साधन उपलब्ध किया गया जिसका नाम रखा वायदा-व्यापार. जिसका प्रचलन आज कल सभी व्यापारिक केंद्रों में पाया जाता है।

वायदा व्यापार हर व्यापारिक केंद्रों (मंडी) में वहां के व्यापारियों द्वारा संस्थापित संस्थान जिसे चेम्बर ऑफ कॉमर्स भी कहते हैं—के नियमानुसार होता हैं, वैसे तो प्रत्येक व्यापारिक केंद्र के चेम्बर्स के नियम अधिकांशत: एक से ही होते हैं परन्तु कुछ नियमों में वहां की परिस्थिति एवं शासकीय नियंत्रण के कारण कुछ न कुछ भिन्नता अवश्य हो जाती है। चेम्बर द्वारा निश्चित मितियों की

डिलेवरी के सौदों का लेबान-बेचान की व्यवस्था को ही वायदा व्यापार कहते हैं और जो व्यापारी निश्चित मितियों की डिलेवरी के सौदों के भावी रुख (धारण) को सही रूप में आंक लेता है वही व्यापारी इस व्यापार से अति लाभ प्राप्त कर लेता है।

वायदा व्यापार में राजनैतिक, समाजिक तथा सुभिक्ष व दुर्भिक्ष संबंधी अनेकों घटनाओं का प्रभाव पड़ता है, इसके अतिरिक्त व्यापारियों की मनोवृति, उपज, खपत, आयात-निर्यात आदि की परिस्थितियां भी बदलती रहती हैं जिसका इस व्यापार पर भी प्रभाव पड़ता है क्यों कि मनोवृतियों के बदलने से ही व्यापारी खरीद या बेच में पड़ जाता है जिधर की संख्या में अधिकता हुई अर्थात् खरीददार अधिक हुये तो बाजार में तेजी और बेचान अधिक हुये तो बाजार में मंदी निकलती है।

इस पुस्तक में दी गई तेजी-मंदी की जानकारी के अतिरिक्त वायदा व्यापार में सफलता प्राप्त करने के लिये निम्न बातों की जानकारी ध्यान में रखना उचित ही न होगा बल्कि आपको यथोचित मार्ग दर्शन मिलते हुए आपके हित के लिये आवश्यकीय हैं।

(१) अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार थोड़ा ही व्यापार करें। सदैव उतने ही लाभ की आशा करके व्यापार करें जितना की साधारणतः हानि उठा सकने की सामर्थ है।

(२) सहस्त्रों बार सौदा करने के बजाय १२ बार ही सौदा करें किंतु हो अपनी स्थिति के अंतर्गत ही जिसे आप सम्हाल सकें।

(३) बाजार अपने प्रतिकूल जाने पर घबड़ाहट में कोई भी सौदा उल्टा सीधा न करना चाहिये बल्कि धैर्यपूर्वक अपने मत को स्थिर रखना चाहिये।

(४) जिस वस्तु का वायदा-व्यापार करें उस वस्तु के उत्पादन, खपत, स्टॉक, आयात-निर्यात तथा विदेशिक मांग एवं जहां पर उस वस्तु का उत्पादन अधिक हो, वहां की जलवायु व ऋतु सम्बन्धी एवं राजनैतिक आदि की परि-स्थिति से पूर्ण परिचित रहना अथवा ऐसे साधन रखना चाहिये जिनसे समय-समय पर उपरोक्त विषयों का ज्ञान प्राप्त होता रहे।

(५) समय-समय पर अर्थ विशेषज्ञों की सलाह लेते रहना चाहिये कभी ऐसे मित्र की सलाह पर विश्वास न करना चाहिए जो अपने स्वार्थवश कुछ सलाह दे अथवा जिनका दृष्टिकोण शून्य हो।

(६) सदैव समय के साथ बाजार के रुख के साथ चलना चाहिये। समय ही व्यापार की सफलता का मुख्य साधन है।

(७) कभी भी अचूक चांसों के चक्कर में न पड़ना चाहिए चाहे ब्रह्मा ने स्वयं स्वप्न में आपको कोई अचूक चांस दे दिया हो, फिर भी अपनी स्थिति से अधिक के सौदे न करना चाहिये। सदैव ऐसे ही ज्योतिषी की सलाह माननी चाहिये जिसके चांसों का आपने परीक्षण कर लिया हो और जो सही निकले हों।

(८) ऐसे समय में व्यापार करना चाहिये जब कि बाजार एक रुख पर चलते हों ऐसे समय पर हानि की अधिकता नहीं होती।

(९) जिस वस्तु का स्टॉक गत वर्ष से अधिक हो जो शासकीय गजट से भी ज्ञात हो सकता है उस वस्तु के सौदे की खरीद और जिस वस्तु का स्टॉक मांग की अपेक्षा कम हो उसका बेचना कम करना चाहिये। यदि किसी अज्ञात अवस्था के कारण बाजार प्रतिकूल चले तो थोड़ी सी रिस्क उठाकर सौदा समाप्त कर देना चाहिये।

(१०) खरीदे हुये सौदों में तेजी या बेचे हुये सौदों में मंदी आपके अनुकूल चलने लगे तो सौदा अन्तर के साथ हिसाब से उस अवस्था में अवश्य डबल कर लेना चाहिये जबकि आपकी धारणा अच्छी तेजी या अच्छी मंदी की हो और बाजार का रुख भी उसी ओर को चल रहा हो जिस ओर में आपके सौदे हैं। उस अवस्था में डबल किए हुए सौदे को निश्चित तेजी अथवा मंदी जो आपके मतानुसार थी उससे पूर्व ही समाप्त कर लेनी चाहिये क्योंकि तेजी मंदी का चक्र जल्दी से लौट भी जाया करता है।

(११) बाजार में अच्छी तेजी आ चुकी हो तथा सभी का ध्यान तेजी की ओर हो एवं बाजार में खाँऊ-खाँऊ का स्वर बुलन्द हो और ग्रह चाल के अनुसार भी तेजी का रुख समाप्त हो रहा हो तो उस समय माल बेंचने में ही लाभ है और जिस समय बाजार अच्छी तथा आवश्यकता से अधिक मंदी में हो एवं बाजार में बेचू २ का ही स्वर चारों ओर बुलन्द हो तथा ग्रह चाल के अनुसार भी मंदी समाप्त हो रही हो तो ऐसे समय में सौदे खरीद लेना ही लाभदायक है।

(१२) बार बार अपने मतानुसार सौदे करने पर भी हानि हो या ऐसे साधन उपस्थित हो जाते हैं जिससे हानि ही होती है तो ऐसे समय में कुछ अवधि तक सौदे करने का कार्य बन्द कर देना चाहिए और फिर कालान्तर में अपने शुभ समय को विचार कर अथवा किसी गुणी दैवज्ञ से शुभ समय विचार कर जब बाजार का रुख एक सा आजाय तो पुनः सौदे करना चाहिये।

(१३) लम्बी रुखी तेजी मन्दी की लाइन का ज्ञान देश, काल, एवं उपरोक्त बताई हुई अनेकों परिस्थितियों से स्वयं अनुभव में आता रहता है फिर भी किसी अच्छे ज्योतिर्विज्ञ की सलाह ले लेनी चाहिये।

(१४) ऐसा विचार न करना चाहिए कि जिस दिन बाजार में जांय उसी ही दिन सौदा अवश्य करना चाहिए अपितु बाजार के रुख को भलीभांति समझकर जिस दिन आपकी रुख की लाइन का पलटने का वक्र (रियेक्शन) पड़ने का पूर्ण विश्वास हो जाय उसी दिन ही सौदा आरम्भ करना चाहिए।

(१५) सौदों में थोड़ा सा लाभ होने पर ही समाप्त करने का स्वभाव न डालना चाहिये अपितु लाभ में प्रतीक्षा करना और छोटे वक्रों (रियेक्शन) के झंझट में न फंसकर अपने अनुकूल बाजार चलने पर सौदा बढ़ाते जाना और बड़े वक्र से लाभ उठाने का स्वभाव डालना चाहिए।

(१६) यह स्मरण रखना चाहिए कि बाजार में घटा-बढ़ी नित्य प्रति नहीं चला करती अपितु कई दिनों तक यथा सप्ताहों या कई महिनों तक भाव एक सीमा के अन्तर्गत घूमते रहते हैं।

(१७) यह भी ध्यान रहे जैसे राजनीति के लिए समाचार-पत्र सहायक होता है उसी प्रकार वायदा-व्यापार के लिए धन सहायक होता है अतः लाभ प्राप्त होने के उपरान्त ही उस धन को अपने जीवन स्तर को ऊंचा उठाने या फिजूल खर्च में मत लगाओ वरन भविष्य के व्यापार के लिये रखो, समय पर वही धन सहायक होता है क्योंकि माना कोई लाइन या आपकी धारणानुसार महीने दो महीने बाजार चला उससे आपको दस-बीस हजार रुपया प्राप्त हो गया अब दो-तीन माह तक बाजार आपके प्रतिकूल चला या आप बाजार के रुख को समझने में असमर्थ रहे इस कारण आपको आमदनी न हो सकी इसी ही लिए आमदनी प्राप्त होने के उपरान्त अपने मन को स्थिर रखें।

(१८) बड़े सटोरिये या मोटे लाभ प्राप्त करने वाले व्यापारी की लेवान-बेचान पर भी ध्यान रखना चाहिए किन्तु उसके लेवान-बेचान की ओर झुक नहीं जाना चाहिए वल्कि उसके ऊपर ध्यान रख कर अपने मत को बनाना चाहिये या उसके इस प्रकार से सौदा करने से बाजार रुख को पहचान कर इस बाजार से लाभ उठाने की चेष्टा करनी चाहिये।

(१९) यह याद रखिये कि दूसरों की विवशता से ही लाभ उठाया जा सकता है अत. ऐसे अवसर को मत चूकिये।

उपरोक्त १९ चेतावनियां वायदा-व्यापार में सफलता प्राप्त करने की कुंजी है। वायदा-व्यापार को और भी सुगम बनाने की दृष्टि से तथा थोड़ी-सी पूंजीवाला इससे लाभ उठा सके इसलिए इसमें तेजी-मन्दी के नजराने को भी स्थान दिया गया है।

व्यापार करने के लिए सबसे अच्छा ढंग एवं सरल तथा अच्छा साधन वायदा व्यापार ही है इसमें न तो वस्तुओं में मिलावट करने की, न झूंठ बोलने की, न कम तोलने की, न किसी को रिश्वत (घूंस) देने की और न माल संग्रह करने की तथा न ही अधिक व्यक्तियों की आवश्यकता है अपितु एक बार इसके तेजी मन्दी चलने के सिद्धान्तों से भलीभांति परिचित तथा सौदा करने के सिद्धान्तों को हृदयांगम कर लिया तो थोड़ी सी पूंजी वाला साधारण पढ़ा लिखा अर्थात शिक्षित व्यक्ति अपना व अपने कुटुम्ब का पालन पोषण कर दूसरों की सेवा के लिये समय निकाल सकता है, परन्तु यह तभी सम्भव हो

सकेगा जब कि वायदा व्यापार को अच्छी तरह समझ जाय। वैसे तो श्रेष्ठ से श्रेष्ठ वस्तु का दुरुपयोग होने पर वह हानिकारक होती है। अच्छाई बुराई किसी वस्तु या सिद्धान्त में नहीं होती वरन उपयोग करने के ढंग में होती है। अतः वायदा व्यापार का सदुपयोग किये जाने पर वह कभी हानिकारक नहीं हो सकता।

प्रत्येक व्यापारी की यह महत्वाकांक्षा रहती है कि बाजार की कब-कब, क्या स्थिति रहेगी और अमुक-अमुक समय पर हमें क्या करना चाहिए जिसके लिये वह हर प्रयत्न करता रहता है। इसकी जानकारी केवल दैवज्ञ नियम से ही मिल सकती है।

देश, काल तथा वस्तुमात्र का ग्रह एवं राशि मण्डल से बहुत गहरा सम्बन्ध है इसी के द्वारा ही भिन्न-भिन्न देशों, भिन्न-भिन्न समयों में जगत के सभी जड़ चेतन पदार्थों की उत्पत्ति व लय आदि होती रहती है। ग्रह एवं राशियों की ईश्वर प्रदत्त अलौकिक शक्ति के द्वारा ही प्रतिक्षण सर्व पदार्थों में परिवर्तन होता रहता है। सांसारिक सभी जड़-चेतनात्मक वस्तुओं का मेषादि १२ राशियों में समावेश है यहां तक कि ग्रह मण्डल भी इन्हीं राशियों में आश्रय पाता हुआ अपनी-अपनी गति के अनुसार भ्रमण करता हुआ अपने अपने अधिकार की वस्तुओं पर यथासमय न्यूनाधिक मात्रा में अच्छा या बुरा प्रभाव डालता है यह प्रभाव वायदा बाजार से भी सम्बन्ध रखता है।

संसार के सभी पदार्थों को ग्रहण कर लेने वाले या जकड़ लेने वाले अथवा नियंत्रण में रखने वाले ग्रह होते हैं तथा समुदाय संग्रह या इकट्ठा करने अथवा अपने में सभी पदार्थों का समावेश करने वाली राशियां होती हैं। जब ग्रह भ्रमण करता हुआ राशि भोग करता है तो उसकी हर परिस्थिति का प्रभाव वस्तु पर पड़ता है यह प्रभाव वस्तु में परिवर्तन करते हैं और इन्हीं परिवर्तनों से वस्तु में घट-बढ़ होती है जिसे हम तेजी-मन्दी भी कह सकते हैं।

उपरोक्त विषय से हम इस तथ्य पर पहुंचे कि ज्योतिष-शास्त्र का, वायदा व्यापार से गहरा सम्बन्ध है जब तक ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान प्राप्त न हो सके तब तक वायदा व्यापार के एक विषय से अनभिज्ञ रहेंगे अतः यहां

ज्योतिष के कुछ पहलू जिनका कि वायदा-व्यापार से सम्बन्ध है बताना आवश्यक समझते हैं। इसके पूर्व की घटा बढ़ी के कुछ आधार और बतला दें।

आज कल यह प्रत्यक्ष देखने में अथवा सुनने में आता है कि अमुक व्यापारिक केन्द्र में अमुक व्यापारी जिसकी दूकान में मुट्ठी भर अन्न नहीं वह लाखों टन गल्ला बाजार में खरीद या बेच सकता है तथा दिन भर में ही लक्ष्मी पति बन बैठता है। इसे ही आजकल लोग 'सट्टा' कहते हैं। सट्टा का अर्थ है आगे की धारणा बनाना।

बड़े-बड़े नगरों में एसोशियेसन, चेम्बर, आदि प्रशस्त कहीं जाने वाली अनेक संस्थायें हैं जो योग संचालकों द्वारा नियमति रूप से काम कर रहीं हैं। हजारों व्यापारी स्वयं या उनके प्रतिनिधिगण, कमीशन एजेन्ट, ब्रोकर (दलाल) आदि वहां पर बराबर क्रय-विक्रय करते रहते हैं और उसके फलस्वरूप व्यापारिक वस्तुओं का भाव भी घटता-बढ़ता रहता है। इस विषय में जब किसी वस्तु के खरीददारों की संख्या अधिक हो जाती है तो उस वस्तु के भाव बढ़ जाते हैं और जब उस वस्तु के बेचने वाले अधिक होते हैं तो उस वस्तु के भाव घट जाते हैं। परन्तु वास्तविकता बिल्कुल विपरीत होती है क्योंकि मनुष्य-मात्र के सभी कार्य उसकी इच्छा शक्ति से हुआ करते हैं। मानस जो कुछ अपने मन में सोचता है उसे वाणी से कहता है तथा अन्य इन्द्रियों की सहायता से उसे कर डालता है इस किये हुए कार्य का फल ही सुख दुख अथवा हानि-लाभ है। अतः यह स्पष्ट है कि हानि लाभ को स्वमेव उत्पन्न करने वाला मन इन्द्रिय सभी मनुष्यों के पास है और उसी के द्वारा ही मनुष्य मात्र व्यापार करता है और हानि-लाभ उठाता है।

किसी विचार का मन में उठना और तदनुसार कार्य करना भी ग्रहों का मनुष्यों के ऊपर सत्ता होने का कारण हुआ करता है। इतना ही नहीं ग्रहों का हमारे आत्मा, मन, हस्त, पदादि कर्मइन्द्रियों तथा आंख, कानादि, ज्ञानेन्द्रियों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। ज्योतिषशास्त्र प्रवर्तक ऋषियों ने बताया है कि

लोग जिसे आत्मा कहते हैं वह ज्योतिषशास्त्र संकेतिक सूर्य है, जिसके द्वारा मनुष्य मात्र के पुण्यात्मा अथवा पापात्म, सदाचारी या दुराचारी होने का अनुसंधान किया जा सकता है मन को ज्योतिषशास्त्र में चन्द्र शब्द से व्यवहृत किया गया है इसलिए चन्द्र के द्वारा मनुष्यों के मानसिक विचारों को ज्ञात किया जा सकता है इसी प्रकार भौमादि ग्रहों का शरीर गत रक्त, मांस मज्जादि पदार्थों पर प्रभुत्व बतलाया गया है। यह तो हुई हमारे शरीर की बात किन्तु इन्हीं सूर्यादि ग्रहों का व्यापारिक वस्तुओं पर भी स्वतन्त्र अधिकार है, जिनके द्वारा व्यापारिक वस्तुओं की घटा-बढ़ी के समय एवं कितनी घटा-बढ़ी ? का सही-सही अनुमान का ज्ञान इन ग्रहों की गति आदि से प्राप्त किया जा सकता है।

प्रत्येक व्यापारी यह चाहे कि वह ज्योतिष शास्त्र से भलीभांति परिचित हो जाय, यह असम्भव सा है। यह पूर्व में ही बता चुके हैं कि ग्रह और राशियों का परस्परसापेक्ष ऐसा सम्बन्ध है, जिससे संसार के सभी जड़ चेतन वस्तुओं में प्रतिक्षण बराबर परिवर्तन होता रहता है अर्थात् इन दोनों के पारस्परिक सम्बन्धों के द्वारा ही प्रभाव पड़ता है अतः यह जानने के लिए कि दोनों का किन-किन वस्तुओं पर एवं कब और कितना प्रभाव पड़ेगा—किसी दैवज्ञ की आवश्यकता अवश्य पड़ेगी। अपितु दैवज्ञ का निर्णय करने से पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि वह ज्योतिष-शास्त्र का अच्छा ज्ञाता हो, लग्न-कुण्डली की विशेषताओं को भली-भांति जानता हो, ग्रह और राशियों के स्वभाव, गुण आदि से भी भली-भांति परिचित हो, वह गणित के द्वारा ग्रहों के पारस्परिक दृष्टि सम्बन्धों को निर्माण करके उनके शुभा-शुभत्व का यथार्थ विचार करने में कुशल और कौनसा ग्रह किस समय किस राशि में प्रवेश कर रहा है ? उसका किस वस्तु पर कैसा और कितना प्रभाव पड़ेगा ? कौनसा व्यापार किस प्रकार से किया जाता है इत्यादि बातों का निर्णय बिना किसी की सहायता के करने में कुशल हो अन्यथा इन बातों से अपूर्ण दैवज्ञ से सलाह लेकर व्यापार करने में अपने को हानि की ओर धकेलना है।

हमारे देश में आज कल सैकड़ों पंचांग प्रकाशित होते हैं क्योंकि सामाजिक व्यवहार में इसका बहुत ही महत्व है तिथि, त्योहार, व्रत, जन्म, विवाह आदि अनेकों ऐसे कार्य हैं जिनका निर्णय आदि पंचांग के द्वारा किया जाता है। पंचांग के निर्माण के लिये वर्तमान समय में दो पद्धतियाँ है। निरयन और सायन। अपने देश में प्रायःसर्वत्र निरयन पद्धति का ही प्रचार है और पाश्चात्य देशों में अबोध रूप से सायन पद्धति का। सायन अथवा निरयन किसी भी पद्धति से पंचांग बना हो किन्तु उसका गणित विधान कैसा हो इसके सम्बन्ध में ज्योतिषशास्त्र प्रवर्तक महर्षियों तथा उच्च कोटि के अनुभवी विद्वानों का यही एक मत है कि "वही गणित सत्य एवं फल की सत्यता को प्रमाणित करने वाला होता है जिसका आकाशस्थ ग्रह, नक्षत्र आदि से ठीक ठीक मिलान हो जाय और उसके आधार पर निश्चित किया हुआ फल का समय भी पल.विपल तक सही हो।" अतएव यह निर्विवाद है कि फलादेश के लिए विविध यन्त्रों द्वारा सिद्ध स्पष्ट ग्रह गणित को ही काम में लाना चाहिए। अतः सदैव ऐसे पंचांग का ही उपयोग करना चाहिये जिसका गणित शुद्ध हो।

अपने देश में आधुनिक विविध यंत्रों से सुसज्जित उच्चकोटि की वेधशाला की कमी है फिर भी कुछ पंचांग कर्त्ताओं ने अपने परिश्रम एवं ग्रह गणित द्वारा शुद्ध पंचांगों का निर्माण किया है जिनका आकाशस्थ ग्रह नक्षत्र आदि से सही र मिलान बैठता है। इसके अतिरिक्त उन्होंने उसमें ग्रहों का दैनिक स्पष्टीकरण, ग्रहों के राशिभोग तथा क्रांतिभोग की गति एवं ग्रहों के शर परिवर्तन आदि निर्णयोपयोगी साधनों के अतिरिक्त ग्रहों का पारस्परिक दृष्टि सम्बन्ध अलग से दिये हैं जिससे किस माह की किस दिनांक का किस समय किस ग्रह के साथ किस ग्रह का कैसा अंशान्तरात्मक दृष्टि योग हो रहा है यह स्पष्ट से ज्ञात हो जाता है। जिससे गणित के द्वारा प्रचलित दृष्टि सम्बन्धों के निर्माण करने की कोई आवश्यकता नहीं होती।

इस पुस्तक की रचना अंशान्तरात्मक दृष्टियोग को लेकर की गई है इसमें आपको १२ ग्रहों के साथ प्रत्येक ग्रह के २१ अंशान्तरात्मक दृष्टि योग इस प्रकार से १२ ग्रहों के परस्पर २७७२ दृष्टि योगों का फल विवेचन मिलेगा तथा वे सभी विषय मिलेंगे जिनका कि अंशांतरात्मक दृष्टि योगों से सम्बन्ध है और उनका क्या और कब कैसा प्रभाव होता है इसका भी विस्तृत से उल्लेख किया गया है जैसे–ग्रह उनका स्वभाविक गुण, धृति एवं उनके अन्तर्गत की वस्तुएं तथा राशि व उनके नवांश, उनके स्वभाव गुण एवं उनके अन्तर्गत की वस्तुएं, शर व शर परिवर्तन, उनका प्रभाव, शर भोग, क्रांति भोग एवं उनके प्रभाव आदि। इसके अतिरिक्त अंशांतरात्मक दृष्टि योगों का कब और कितने समय में प्रभाव होगा, योग होने से पूर्व एवं उपरांत में किन २ परिस्थितियों से फल होता है तथा सभी ग्रहों का अलग से अंशांतरात्मक दृष्टि योगों का प्रभाव समय और कितना होगा विस्तृत रूप में दिया गया है अन्त में परिशिष्ट के अन्दर कुछ पूर्व हुए ग्रहों के दृष्टि योगों की व्याख्या करते हुये इन दृष्टि योगों के द्वारा वस्तुओं के तेजी-मंदी के मूल्यांकन के समझाने का पूर्ण प्रयत्न किया है। आशा है इससे समझने में पूर्ण सुविधा होगी। फिर भी किसी को कुछ जानकारी और लेनी हो वह समय-समय पर पत्र व्यवहार से पूछ सकता है।

हमने अपने परिश्रम का फल आपके समक्ष इस पुस्तक के रूप में रखा है इससे आप सभी को लाभ होगा उस समय मुझे अपने इस परिश्रम पर प्रसन्नता होगी। यदि प्रूफ की कोई त्रुटि रह गई हो तो वृन्द पाठक उधर कोई भी ध्यान न देंगे ऐसा हमारा विश्वास है और भविष्य के लिये हमें सूचित करने का कष्ट करेंगे। अन्त में हम अपनी बात समाप्त करते हुये कुछ ऐसे पंचांगों की जानकारी दे देना उचित समझते हैं जो शुद्ध एवं दृश्य गणित द्वारा व्यापार सम्बन्धी विषयों के लिये अत्यन्त सूक्ष्म और जिम्मेदारी से निर्माण होते हैं।

(१) श्री शास्त्री सी. आई. बनारस वालों का पंचांग, (२) कलकत्ता का हरिहर विशुद्ध सिद्धांतपंजिका अथवा संदेश, (३) गवालियर का पं० गंगाप्रसाद ज्योतिषाचार्य द्वारा रचित महालक्ष्मी व्यापारिक पंचांग और (५) दिल्ली का पं० हरदेव शर्मा का विश्व विजय पंचांग।

उपरोक्त पंचांगों में व्यापारिक विषयों पर जितना सूक्ष्म विचार गवालियर का महालक्ष्मी व्यापारिक पंचांग में किया गया है उतना अन्य पंचांगों में नहीं मिलेगा इसमें आपको व्यापारिक वस्तुओं के तेजी मंदी का दिग्दर्शन होता है तथा समय २ पर किसी बड़ी रियेक्शन की भी सही जानकारी आपको इस पंचांग से उपलब्ध हो सकती है इस कारण यह पंचांग व्यापारियों के लिये लाभ दायक है। हमारी राय से इस पंचांग को प्रत्येक व्यापारी के पास होना उसके व्योपार की वृद्धि में अति सहायक होगा। आशा करता हूँ कि प्रत्येक व्यापारी भाई श्री महालक्ष्मी पंचांग का संग्रह कर लाभ उठावें।

लेखक—

गङ्गाप्रसाद

गणक—भाष्कर दैवज्ञमणि
ज्योतिर्विद्यारत्न.

सिंहपुर रोड
मुरार (म० प्र०)
दि० १—८—५७

भविष्य द्योतक सूक्ष्म वेधसिद्ध गणित के द्वारा निर्मित निम्न लिखित एफेमरीज पुस्तक छपकर तैयार हैं। शीघ्र आर्डर भेजें।

१. छह वार्षिक एफेमरीज सन् १९५५ से १९६० तक (सायन-पक्षीय) दैनिक स्पष्ट ग्रह भारतीय स्टेण्डर्ड टाइम १७-३० सायंकाल. मू० ६रु० ५० न.पै.
२. दस वार्षिक एफेमरीज सन् १९६१ से १९७० तक (सायन पक्षीय) दैनिक स्पष्ट ग्रह भारतीय स्टेण्डर्ड टाइम १७-३० सायंकाल मू० १० रु. ५० न पै.

हमारा आगामी प्रकाशन

१. शुद्ध तिथि चिन्तामणि पंचांग-सारिणी-भाषा उदाहरण सहिता मूल्य ३ रु. ५० न. पै.
२. आधुनिक-ग्रहगणितम्, ग्रह स्पष्ट-सारिणी, भाषा उदाहरण सहिता मूल्य ७ रु ५० न. पै.
३. व्यापार-चिन्तामणि-तेजी-मंदी का अपूर्व ग्रन्थ-भाषा उदाहरण सहिता (पृष्ठ संख्या ३८० मूल्य १० रु.
४. दस वार्षिक एफेमरीज सन् १९७१ से १९८० तक (सायन पक्षीय) दैनिक स्पष्ट ग्रह भारतीय स्टेण्डर्ड टाइम १७-३० सायंलाल मूल्य १० रु. ५० न. पै.

पुस्तक प्राप्ति स्थान:—

श्री महालक्ष्मी पब्लिकेशनस्
मुरार, (म० प्र०)

"व्यापारे वसति लक्ष्मी"

यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि जैसे व्यापार से शीघ्र धनाढ्य हो सकता है वैसे नौकरी, कृषि आदि अन्य कर्मों से नहीं। एतदर्थ शास्त्रकारों ने भी व्यापार में लक्ष्मी का निवास माना है।

वायदा-व्यापार की आवश्यकता क्यों हुई—

व्यापारियों ने जब यह देखा कि हाजिर माल का व्यापार करने के लिये अनेकों झंझटों का सामना करना पड़ता है— (१)माल क्रय करने के लिए अधिक से अधिक नकद रुपये की आवश्यकता है। (२) यदि आवश्यकतानुसार एक ही स्थान पर माल न मिल सका तो अन्य स्थानों पर माल ढूंढ कर क्रय करना पड़ेगा इस प्रकार कई स्थानों का माल होने से एक भाव और एक प्रकार का माल होना असम्भव-सा है। (३)कार्य के लिए बहुत से व्यक्तियों की आवश्यकता होगी। (४) माल के संग्रह के लिए गोदाम व खत्तियां चाहिये। (५) हवा पानी व वर्षा से कोई हानि न हो ऐसे साधन करने होंगे। (६) माल को मंतव्य स्थान पर भेजना होगा उसके लिए बहुत से व्यय वहन करने होंगे। (७) सम्भव हो जब माल विक्रय करना हो तब क्रय करने वाले व्यापारी न मिल सकें ऐसी परिस्थिति में माल सस्ता बेंचना पड़े। (८) सम्भव हो सकता है कि बाजार भाव इतना नीचा गिर जाय कि व्यापारी घबड़ाकर अधिक उठाते हुए माल को विक्रय करने के लिए बाध्य हो जावे। (९) माल अधिक दिनों तक पड़ा रहने से उसमें कीड़े आदि लग जावें या ऋतु परिवर्तन का कुप्रभाव हो जाने का भय हो। (१०) हमारे ऋण के सूद की भी हानि होगी यदि माल एक लम्बे समय तक विक्रय न हो सका हो। (११) हमें मंतव्य माल फसल पर ही सुविधापूर्वक मिल सकेगा और शेष दिनों में कठिनाई से एवं विक्रय करने वाले की इच्छा से ही प्राप्त होगा आदि अनेकों और भी झंझटें हैं। हाजिर माल के व्यापार में लाभ की दृष्टि से व्यापार करने पर आगे चलकर घाटा उठाने की समीक्षा सामने आ जाती है।

इन सभी झंझटों से बचने के लिए एवं शीघ्र से शीघ्र तथा अधिक से अधिक लाभ होने के लिए व्यापारियों ने वायदा व्यापार चालू किया इसमें थोड़ी सी पूंजी से अधिक व्यापार हो सकता है एवं पत्र व्यवहार द्वारा भी संतोषजनक व्यापार किया जा सकता है तथा हर प्रकार की सुविधायें रहती हैं। यदि सौदो होने के आधा घंटे बाद भावों में भारी घट-बढ़ हो गई तथा लाभ दिखने लगे तो उसी समय ही सौदा समाप्त किया जा सकता है। बहुत से ऐसे व्यापारी हैं जिन्हें निश्चित समय पर माल की आवश्यकता है वे भी इस व्यापार से माल ले सकते हैं कारण जो वायदा डिलेवरी का समय होता है यदि उस समय तक ले-बेचकर व्यापार समाप्त नहीं किया गया तो माल की डिलेवरी मिल जाती है और ऐसो-शियेसन के नियमानुसार माल की क्वालिटी आदि रहा करती है जिससे किसी प्रकार का आरोप करने का कोई अवसर नहीं आ सकता तदुपरान्त माल तैयारी के रूप में मिल जाता है एवं तब तक माल संभाल कर रखने की चिंता नहीं होती। इस प्रकार की और भी सुविधाजनक बनाने के लिए छोटी-बड़ी पूंजी वाले सभी लोग सम्मिलित हो सकें, इस दृष्टि से इसमें तेजी-मंदी के व्या-पार को भी स्थान दिया गया है।

तेजी-मंदी—

व्यापारिक केन्द्रों में लोगों को तेजी-मंदी के सौदे करते हुए अवश्य ही देखा होगा तथा यह भी सुना होगा कि अमुक-अमुक व्यक्तियों ने तेजी-मंदी में अमुक धन लगाकर इतना लाभ उठाया इस प्रकार के व्यापार को देखकर बहुत से व्यापारी अचंभित रह जाते हैं कि यह क्या है? जो इतने ही अल्प समय में मनुष्य को धनवान् बनाने में समर्थ है। यह है तेजी-मंदी......

बड़े-बड़े व्यपारिक केंद्रों में जहां व्यापार की कोई सीमा नहीं होती व्यापा-री-वर्ग अनेकों प्रकार के व्यापार करके जीवन के उच्चतम शिखर पर शीघ्र पहुंच जाते हैं ऐसे वह कई प्रकार के धन्धे करता है उनमें बहुत से ऐसे धन्धे हैं जो वायदा व्यापार से होते हैं। तेजी-मंदी के सौदों का अर्थ व्यापार में हानि की सीमा को निश्चित कर देना है, अपनी हैसियत के अनुसार हरेक छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा व्यापारी इस व्यापार को करके सीमा से अधिक लाभ

प्राप्त कर सकता है और इसी ही लिए तेजी-मन्दी के सौदे चालू किये गए हैं कि लक्षपति से लेकर दस रुपये की पूंजीवाला भी वायदे के व्यापार के लाभ से वंचित न रह सके। आजकल सभी व्यापारिक केन्द्रों में तेजी-मन्दी के सौदे बहुत ही अधिकता से हो रहे हैं।

तेजी-मन्दी लगाकर व्यापार करने से दुतरफा लाभ—

तेजी-मन्दी लगाकर व्यापार करने से सब से बड़ा लाभ यह होता है कि भाव चाहे जितना भी नीचा या ऊँचा जाय लाभ ही रहेगा। विशेष लाभ यह होता है कि तेजी-मन्दी पेटे यदि अपने मन्तव्य घट-बढ़ चले तो चाहे जितनी बार खुला लेवान या बेचान करके लाभ उठाया जा सकता है और उस लेवान या बेचान कर लेने के बाद बाजार अपने विरुद्ध भी हो गया तो हानि की कोई सम्भावना नहीं रहती।

एक तरफा तेजी—

जिस प्रकार से नजराना दोनों ओर के बाजारों अर्थात् तेजी-मन्दी को बांधकर लगाया जाता है उसी प्रकार से एक तरफा तेजी—एक ओर के बाजार को बांधकर लगाया जाता है। जब कभी बाजार लम्बी तेजी के रूप में चलता है तब यह सौदा करना बहुत ही लाभ दायक सिद्ध होता है इस प्रकार के सौदों में नजराने के धन में प्रायः आधा धन लगाना पड़ता है। नजराने के अनुसार इसमें भी बाजार की घट-बढ़ के अनुसार अवसर आने से उसके पेटे खुली ले-बेचान करके अच्छा लाभ उठाया जा सकता है।

एक तरफा मंदी—

जिस प्रकार एक तरफा तेजी में बाजार बढ़ने पर लाभ होता है। उसी प्रकार एक तरफा मंदी में बाजार घटने पर लाभ हुआ करता है प्रायः सौदों की सूरत एक तरफा तेजी अथवा एक तरफा मंदी लगाने में एक-सी है। एक तरफा तेजी लगाने में भी नजराने (तेजी-मन्दी) के धन से प्रायः आधा धन लाग करता है और घट-बढ़ के अनुसार ले-बेच करने के भी अनेकानेक अवसर प्राप्त होते हैं।

व्यापार के सम्बन्ध में अन्य जानकारी—

एक्सचेंज—दो देशों के बीच में नाणाकीय चलन के सम्बन्धों को एक्सचेंज कहते हैं। अलग-अलग देशों में अलग-अलग नाम और तोल का सिक्का प्रचलन में होता है और उसमें सोने का प्रमाण भी अलग-अलग मात्रा में रहता है जिससे एक देश का सिक्का दूसरे देश में प्रचलन नहीं हो सकता वर्तमान समय में संसार के सब ही देशों में नोटों का चलन बढ़ गया है एक देश के नोट दूसरे देश में एक साधारण कागज से विशेष मूल्यवान नहीं रहता है इसी कारण से आपस में लेने-देने और व्यवहार के लिए दो देशों के बीच में सिक्कों या अन्य प्रचलन एक विनिमय दर भुगतान करने में आता है और उसी प्रकार दोनों देशों के बीच एक्सचेंज द्वारा व्यापार चलता है।

बहुत से देश संयुक्त नियम द्वारा हुंडियों की एक दर निश्चित कर लेते हैं। जिस देश का निर्यात, आयात से अधिक होता है तो उस देश को आयात माल के बदले में जितना मूल्य विदेशों को देना पड़ता है उससे अधिक मूल्य निर्यात माल की विदेशों से आती है इसका परिणाम मुख्यतः यह रहता है कि निर्यात करने वाले देश के चलन की मांग विशेष रहती है और विनियम दर से उस चलन का मूल्य बढ़ता है और आयात करने वाले देश का मूल्य घटता है। इससे विपरीत यदि व्यापार उस देश के विरुद्ध रहे तो अधिक आयात करने के बदले में विदेशों-को-विशेष सोना देना पड़े तो उस देश की हुंडियों पर बुरा प्रभाव पड़ता है उसी प्रकार देश की राजनैतिक अशांति अथवा दूसरी आर्थिक कमजोरी से भी देश के चलन का मूल्य घटता है।

भारत का सिक्का रुपया है उसका ब्रिटिश पाउण्ड के साथ १ शिलिंग ६ पेंश की दर पर बहुत समय से आपस में संयुक्त नियम द्वारा विनियम दर निश्चित है अर्थात इंगलैण्ड के साथ के लेने-देने में रुपये का मूल्य १शि० ६ पे० के ऊपर नहीं जा सकता वैसे ही नीचे नहीं आ सकता। सन् १९२५ से यह दर चल रही है। बीच में यह दर घट कर १ शि० ४ पे० आन्दोलन करने से हो गई थी, परन्तु इस प्रकार करना इंगलैण्ड को लाभ-प्रद नहीं होने से सरकार ने कुछ भी ध्यान नहीं दिया। वैसे ही इंगलैण्ड भारत से लेनदार देश था (ब्रिटिश पूंजी

का व्याज) इंगलैण्ड को पहुंचने से एक रुपया का बदला १ शि० ६पें० मिलते हैं जब कि ब्रिटिश माल के १ पाउण्ड के मूल्य के बदले में भारतीयों को लगभग १३।) देना पड़ता है। गत महायुद्ध में हिन्द के नोटों के प्रचलन में बढ़ावा करके रुपया का माल इंगलैण्ड पहुंचा और उस कारण से भारत, इंगलैण्ड का देनदार के बदले में लेनदार हो गया। सन १९४७ में भारत स्वतन्त्र होने से बहुत से लोग १शि० ४पें० की दर करेने की मांग करने लगे परन्तु उसमें लाभ नहीं होने से दोनों देशों के बीच आयात-निर्यात के सम्बन्ध पूर्ववत चालू रहने से हुंडियों के दर को भी यथावत चालू रखना अभी की भारत सरकार ने उचित समझा है।

दो देशों के बीच के परस्पर सम्बन्ध और हुण्डी के भाव को 'क्रॉसरेट' कहते है क्रॉसरेट के घट-बढ़ के अनुसार उन देशों के चलन का मूल्य दूसरे देशों के चलन के अनुसार घटते-बढ़ते रहते हैं।

द्वितीय महायुद्ध के पूर्व इंगलैण्ड और अमेरिका के बीच 'क्रॉसरेट' १ पौण्ड ४.८५ डॉलर था। आज कल उन्हीं देशों के बीच १ पौण्ड=२.८० डॉलर के लगभग है इसका अर्थ यह है कि डॉलर का मूल्य बढ़ गया और उसके प्रमाण पौण्ड का मूल्य घट गया इस कारण अमेरिका की वस्तुएं इंगलैण्ड में मंहगी पड़ने लगी और इंगलैण्ड की वस्तुऐं अमेरिका में सस्ती पड़ने लग गई। भारतवर्ष का रुपया भी इंगलैण्ड के पौण्ड के साथ सम्बन्धित होने से इसका मूल्य डॉलर के प्रमाण में घट गया जिससे कि अमेरिका का माल भारत में मंहगा और भारत का माल अमेरिका में सस्ता पड़ने लग गया। सन् १९४१ में १००डॉलर के ३३३रुपये चुकाने पड़ते थे वर्तमान समय में १०० डॉलर के ४८० रुपये देना पड़ते हैं इस प्रचलन की घटा-बढ़ी के कारण भावों में तेजी अधिक आती है जब की मंदी को केवल रियेक्शन का ही अवसर मिलता है।

सोना-चांदी के बाजारों के भाव की घट-बढ़ का आधार केवल क्रॉसरेट में परिवर्तन होना है। गत दो वर्षों में यानी १९५५-५६ के बम्बई मारकेट से अमेरिका अरण्डी, अलसी, मूंगफली, तेल मूंगफली का निर्यात बड़ी तेजी के साथ कर रहा है। इस कारण भारतीय तिलहन अमेरिका में सस्ती पड़ने लग गई, अरण्डी का भाव बम्बई में १०३) से ऊंचा १९४) तक हो गया

इन भावों पर भी अमेरिका में सस्ता पड़ता है। यही कारण तेजी का हेतु बन रहा है।

किसी भी वस्तु की दो देशों के भावों के बीच के अन्तर को 'पेरिटी' कहते हैं। अन्तरराष्ट्रीय व्यापार की दिन प्रतिदिन प्रगति होने के साथ पेरिटी का ज्ञान होना आवश्यक हो गया है। दो देशों के बाजारों के भाव की पेरिटी ज्ञात करने में निम्नलिखित बातें ध्यान में रखना चाहिये:—

(१) दो देशों की सप्लाय और डिमान्ड की परिस्थिति।
(२) दो देशों की माल की जाति।
(३) माल के हेर-फेर का व्यय।
(४) भावों में नियमन।
(५) चुंगी ड्युटी में परिवर्तन।
(६) हुन्डियों की दरों में फेरफार।
(७) दो देशों में आकस्मिक कारण।
(८) भविष्य के आशावाद या निराशावाद के कारण।
(९) युद्ध की परिस्थित या शांति का समय।
(१०) किसी बड़े देश में तनाव की परिस्थिति के कारण।

पेरिटी की गणना:—

$$\frac{\text{बम्बई का भाव} \times \text{रुपया डॉलर कॉसरेट}}{\text{२१ रतल} = \text{१ डॉलर}} = \text{१ डॉलर} = \text{१०० सेण्ट}$$

वायदा-व्यापार में सफलता:—

वायदा-व्यापार में सफलता प्राप्त करने के लिये वैज्ञानिक ढंग से भावों की चाल ज्ञात करना चाहिये।

सट्टा......का अर्थ है आगे की धारणा। किसी वस्त के वायदा-व्यापार में धारणा (रुख) प्राप्त करने के लिये निम्न विषयों की जानकारी आवश्यक

है। यों तो भारत सरकार ने प्रत्येक वस्तु के ऊँचे-नीचे भाव बांध दिए हैं तो भी घट-बढ़ प्रमाण उस बीच में रहती ही है।

यदि आपको वायदा व्यापार में धन कमाना है तो निम्न बातों पर सदा ध्यान देना आवश्यक है :-

(१) वस्तु की साप्ताहिक घट-बढ़ की आंकड़ा स्थिति तथा वस्तु का व्यापार और उसका संचालन।

(२) अपनी हैसियत से अधिक धंधा मत करो।

(३) जितनी पूंजी बिना किसी दुख के हानि में दे सकते हो उतना ही लाभ लेने की आशा करो।

(४) बारह महिनों में १०० बार व्यापार नहीं करना चाहिये बल्कि १० बार ही व्यापार करें।

(५) मंदी या तेजी के लेविल का भी ध्यान रखना चाहिये।

(६) बहुत दिनों से मामूली घट-बढ़ चल रही हो तो तेजी मंदी के पैसे कम लगते हैं। उसी समय में अवश्य इकतरफा लाइन बनती है। १५ –२० दिन में बनती है। तेजी मंदी दोनों या एक तरफा मासिक पाक्षिक नजराना लगाना लाभदायक है।

(७) विशेष जानकारी उत्तम दैवज्ञ जो ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता हो उसकी सलाह लेना भी उत्तम लाभकारी होता है।

(८) दृष्य गणित के बने पंचाग—"जन्मभूमि विजय" तथा "व्यापारी महालक्ष्मी पंचांग" अवश्य ही देखें।

(९) इकतरफा लाइन चलाने की बड़े सटोरिया की खरीद-बेच पर सदैव ध्यान रखना लाभ का संकेत है।

ज्योतिषियों एवं ज्योतिष प्रेमियों को सुझाव:—

ज्योतिषी क्यों कलंकित होते हैं ? और ज्योतिष के भरोसे व्यापार करने वाले क्यों हानि उठाते हैं ?

शुद्ध असली दृष्य गणित के पंचांगों की कमी है वर्तमान समय में अब कुछ पंचांग शुद्ध दृश्य गणित के प्रकाशित होने लगे हैं—"व्यापारिक महालक्ष्मी पंचांग" व्यापार भविष्य देखने के लिए परम उपयोगी है।

जिस मास व दिन की तेजी-मंदी जानना हो उस समय तेजी-मंदी के दोनों योगों को एक पट्टी पर बराबर लिखते चले. दोनों का योग करके दो से भाग दो, लब्धि अंक को तेजी के गिनती अंक में जोड़ो, तथा मन्दी के अंक में भी जोड़ो दोनों की बाहुल्यता पर विचार करके देखो कौन अधिक है जिस पक्ष के अंक अधिक हों वही लाइन रहेगी। कोई भूल तो नहीं रह गई है तथा मन्दी कर्त्ता व तेजी करता प्रवल योग तो नहीं बन रहा है तथा कौनसा योग कितना प्रवल है एवं कौन-सा निर्बल है अर्थात कितने टके की मन्दी या तेजी करने की शक्ति रखता है। बाजार की घट-बढ़ प्रति दिन कितने अन्दाज की चल रही है। वस्तु के भाव ऊँचे लेबल पर हैं या नीचे लेबल पर। इन सब बातों को पहिले से विचार करके व्यापारी को बतलाना चाहिये।

ज्योतिष विद्या एक अमूल्य रत्न है। इसको सत्यता, बुद्धिमानी, चतुराई के साथ परिश्रम द्वारा उपयोग करने से मान प्रतिष्ठा के साथ-साथलक्ष्मी भी प्राप्त होगी। ज्योतिष का फलित वर्तमान के सबय भी दृश्यगणना पर ही निर्भर है। इसलिये जहां हानि-लाभ का प्रश्न है। वहां व्यापारी एवं ज्योतिषी दृश्य गणना के पचांग का ही उपयोग करें तो व्यापारी भाई एवं जनता का कल्याण होने में तनिक भी संशय नहीं रहेगा।

विशेष—जनरल लम्बी रुख की लाइन मन्दगति से चलने वाले ग्रह (शनि. गुरु,राहु, हर्शल, नेपच्यून, प्लूटो) के द्वारा निर्धारित करना चाहिये। पाक्षिक व साप्ताहिक समय तक की चलने वाली लाइन (सू. मं. शु.) ग्रहों के द्वारा निर्धारित करना चाहिये। दैनिक लाइन (चन्द बुध) के द्वारा पाप क्रूर, सौम्य ग्रहों से अंशात्मक योगो द्वारा निर्धारित करना चाहिये। इस विधान के अन्तर्गत परस्पर ग्रहों की युति, प्रतियुति, ग्रहणों पर से अधिक विचार करना चाहिये, यह अचूक तेजी-मन्दी का द्योतक है।

आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च ।
हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन् ॥

कालात्मा सूर्य सब ग्रहों का प्रधान माना गया है शुक्ल यजुर्वेद के उपरोक्त मंत्र में स्पष्ट कहा गया है कि "भगवान सूर्यदेव भुवनों को देखते हुए परिभ्रमण करते हैं" सभी देवताओं में केवल सूर्यदेव ही ऐसे देवता हैं जो कि प्रत्यक्ष रूप में दृष्टिगोचर (बिंबाकार रूप में) होते हैं इनका प्रभाव जड़-चेतन पदार्थों में जो कुछ होताहै उसकी विवेचना ज्योतिष शास्त्रों में व ग्रन्थों में विस्तार-पूर्वक की गई है जिसमें कहा गया है कि सम्पूर्ण दिशाओं को प्रकाश देने वाला कालात्मा श्री सूर्य द्वारा स्थावर–जंगम जगत, चराचर, ग्रह, जल, पृथ्वी, वायु, आकाश, भचक्र का भेद अर्थात ज्ञान प्राप्त होता है। वेदोक्त नियमों में सूर्य को जगत का कल्याणकारक माना गया है और उसमें विकार होना महान अनिष्ट प्रबोधक होता है ज्योतिष चक्र में (अन्यान्य ग्रह योगों से) सूर्य की प्राकृतिक व्यवस्था का रूपान्तर होने से दिग्दाह, उल्कापात, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, युद्ध, महामारी, अराजकता आदि उपद्रवों से पूर्ण उत्पात होते हैं और मनुष्यों का जन्मान्त, हानि, लाभ, उन्नति, अवनति, तथा वस्तुओं के समर्घ, महर्घ आदि पर पूर्ण प्रभाव पड़ता है। यहाँ केवल सूर्य का व्यापारिक वस्तुओं पर कब और कैसा तथा क्या प्रभाव होता है उसका ही उल्लेख करेंगे।

भगवान सूर्य अन्य ग्रहों के साथ भुवनों को देखते हुए परिभ्रमण करते हैं। सूर्य की परिभ्रमण कक्षा को १२ भागों में विभक्त किया गया है। जिन्हें राशियाँ कहते हैं तथा इस कक्षा की दूरी ३६०° अंश माने गये हैं इस प्रकार प्रत्येक राशि दूसरी राशि से ३०° अंश की दूरी पर स्थित है इन राशियों पर स्थित होता हुआ सूर्य अपने ३६०° अंश की परिक्रमा एक वर्ष में तै करता है एवं जिन १२ राशियों पर सूर्य स्थित होता जाता है उसकी उन राशियों के अनुसार भिन्न-भिन्न परिस्थितियां होती जाती हैं और उन परिस्थितियों के अनुसार ही जड़ व चेतन पदार्थों पर वैसा ही प्रभाव पड़ता है।

जब सूर्य मेष राशि अर्थात अपने ०° अंश से प्रारम्भ होकर परिभ्रमण करता है और कर्क राशि अर्थात अपने ९०° अंश की दूरी पर पहुंचता है तो उसकी यह स्थिति तेजीकारक होती है। यदि कहीं सूर्य के साथ पाप ग्रह—मंगल, शनि आदि हों तो और भी अधिक तेजीकारक होगा और यदि शुभ ग्रह—चन्द्र, बुध, गुरु, आदि हों तो मंदीकारक हो जायगा। इस दूरी के अन्तर्गत की जिन-जिन राशियों पर सूर्य स्थित होता हुआ आयेगा उन-उन राशियों के अन्तर्गत की वस्तुओं में उन-उन राशियों के अन्तर्गत के प्रदेशों से तेजी या मंदी चालू होगी जो अन्यत्र भी धीरे-धीरे पहुंचेगी।

कर्क राशि से अर्थात ९०° से आगे जब सूर्य चलेगा और तुला राशि-गत अर्थात १८०° अंश पर पहुंचेगा तो उसकी यह स्थिति मंदीकारक होती है। यदि सूर्य शुभ ग्रहों के साथ है तो और भी अच्छी मंदीकारक होगा और यदि पापग्रहों के साथ होगा तो तेजीकारक हो जायगा। यह मंदी या तेजी सूर्य जिन-जिन राशियों पर स्थित होता हुआ आएगा उन-उन राशियों के अन्तर्गत की वस्तुओं में उन-उन राशियों के अन्तर्गत के प्रदेशों से आरम्भ होकर अन्यत्र भी अपना प्रभाव दिखायेगी।

तुला राशि अर्थात् १८०° अंश से आगे चलकर ९०° अंश की और दूरी पार करके अर्थात् मकर राशि या अपने २७०° अंश पर पहुँचेगा इस भ्रमणकाल में सूर्य तेजीकारक होता है। यदि इसके साथ उस समय पापग्रह—मंगल, शनि, राहू आदि ग्रह हों तो अच्छी तेजीकारक होगा और यदि शुभ ग्रह—चन्द्र बुध, गुरु आदि हों तो मंदीकारक हो जायगा। यह तेजी या मंदी उन्हीं राशियों के अन्तर्गत की वस्तुओं में उन्हीं राशियों के प्रदेशों से प्रारम्भ होकर अन्यत्र भी फैलेगी जो वस्तुएं व प्रदेश इस बीच की दूरी में स्थित राशियों के अन्तर्गत होंगे।

सूर्य मकर राशि अर्थात् २७०° अंश से चलकर मीन राशि अर्थात ३६०° अंश पर पहुंचेगा यहां इसकी परिभ्रमण स्थिति समाप्त हो जाती है। इस भ्रमण-काल में सूर्य मंदीकारक होता है। इस समय यदि सूर्य शुभ ग्रह—चन्द्र, गुरु,

नेपच्यून आदि के साथ होगा तो अच्छी मंदीकारक होगा और यदि पापग्रह—शनि, राहु, हर्शल आदि के साथ होगा तो तेजीकारक हो जायगा। यह मंदी या तेजी जिन-जिन राशियों पर स्थित होता हुआ सूर्य आएगा उन-उन राशियों के अन्तर्गत की वस्तुओं में उन्हीं राशिगत के प्रदेशों से प्रारम्भ होकर अन्य प्रदेशों में भी अपना प्रभाव दिखायेगी।

यहां पर सूर्य पुनः अपनी ० अंश की परिस्थिति में आकर उपरोक्तानुसार ३६०° अंश तक उपरोक्त स्थिति में होता हुआ परिभ्रमण करेगा। इस प्रकार सूर्य की परिभ्रमण स्थिति होती है।

कौन-कौन से देश-प्रदेश व उनके अन्तर्गत के बड़े-बड़े नगर किस-किस राशि के अन्तर्गत हैं, मेदनी ज्योतिष द्वारा किस राशि का किन-किन देशों व नगरों पर प्रभाव पड़ता है। उनका आधुनिक ज्योतिषशास्त्र के अनुसार वर्णन कर रहे हैं।

राशियों के अन्तर्गत भिन्न-भिन्न देश व नगर—

मेष—(देश) इंगलेण्ड, जर्मनी, डेनमार्क, पेरु, जुड़िया, लेसर, पोलेण्ड, पेलेस्टाइन, सीरिया, जापान। (नगर) नेपल्स, फ्लोरेन्स, मर्सिल्स, बर्मिंघम, ब्लेकबर्न, बड़ौदा, मद्रास, चिकागो आदि।

वृषभ—(देश) आयर्लेण्ड, परसिया, चिल्ली, पोलेण्ड, आस्ट्रिया, ज्योर्गिया, श्वेत रसिया, क्युकसस, एशिया माइनर। (नगर) सूरत, डबलिन, लिप्सिक, प्लेर्मो, रहोडेस आदि।

मिथुन—(देश) अरमेनिया, लोअर इजिप्ट, बेलजियम, वेस्ट इंगलेण्ड, फ्लेण्डर्स, यू. एस. ए., वेल्स, उत्तरी-पूर्वी अफ्रीका, कनाड़ा। (नगर) लण्डन, सॅन फ्रेन्सिस्को, मेलबोर्न, वरसेल्स, प्लाइमाउथ, मेड्रिड, आदि।

कर्क—(देश) चीन, हालेण्ड, उत्तरी-पश्चिमी अफ्रीका, न्यूजीलेण्ड, कनाड़ा, स्काटलेण्ड, मोरिटिस, पारागोय। (नगर) वेनिस, मिलान, स्काटहोम, जेनेवा, न्यूयार्क, मॅनचेस्टर, कलकत्ता, एम्स्टर्डम, कॉन्स्टेन्टीनोपल, अल्जीरियस, ट्यूनिस आदि।

सिंह—(देश) फ्रांस, इटली, शिसली, वोहेमिया, उत्तरी-पूर्वी रूमानिया, जेकोस्लोवोकिया। (नगर) रोम, ब्रिस्टोल, बम्बई, चिकागो, दमिश्क, प्रेग, फिलाडलफ़िया, पार्टमाउथ आदि।

कन्या—(देश) टर्की, ईराक, क्रीटे, ग्रीस, वेस्टइण्डीज, ब्राजिल, कुर्डिस्तान, स्वीटजरलैण्ड, ब्रिगानिया, आयर्लेण्ड, बेवीलोनिया, साईलेशिया। (नगर) जेरुशलम, पेरिस, बोस्टन, लोस, एंगेल्स, ब्रिन्दिसी, लायन, बर्लिन, बगदाद, पूना, नागपुर आदि।

तुला—(देश) आस्ट्रिया, अपर इजिप्ट, मंगोलिया, मंचूरिया, अरजेन्टाइन, जापान, तिब्बत, वर्मा, चीन, इण्डोचीन। (नगर) लिस्बन, वियाना, अन्तवर्प, चार्ल्सटाउन, जोंहन्सबर्ग, कोपनहेग आदि।

वृश्चिक—(देश) पश्चिमी स्वीडन, क्यूनसलैण्ड, लेपलैण्ड, मोरक्को, ब्राजील, नार्वे, उत्तरी सीरिया, अलजीरिया, ट्रांसवाल, बावेरिया, जटलैण्ड, जुडिया। (नगर) लिवरपूल, मेसीना, वाल्टीमोर, सिनसिन्नाति, डॉवर, न्यू फाउण्डलैण्ड, न्यू कास्टिल, न्यू आरलीन्स, वाशिंगटन, म्युनिच, दिल्ली आदि।

धनु—(देश) स्पेन, आस्ट्रेलिया, मेडागास्कर, अरेबिया, हंगरी, स्लेवोनिया, मोरेविया, फ्रांस के भाग (जोकि केप फिनिस्टर के ला साइन और ला गरोने का है,) (नगर) कलकत्ता, पेकिंग, बुडापेस्ट, सीलोन, शेफ़िल्ड आदि।

मकर—(देश) भारतवर्ष, अफगानिस्तान, पंजाब, बंगाल, मेक्सिको, दक्षिणी अफ्रीका, बलगेरिया, अलबेनिया, युगोस्लाविया, ग्रीस। (नगर) टोकियो, ब्रुसेल्स, ओक्सफोर्ड, पोर्टसईद, ड्रेसडन, मास्को, वार्सा आदि।

कुम्भ—(देश) अरेबिया, लाल रशिया, पर्शिया, पोलैण्ड का भाग, लियोनिया, स्वीडन, अबीसीनिया, फिनलैण्ड। (नगर) सिडनी, हेमबर्ग, ब्रिगटन आदि।

मीन—(देश) पुर्तगाल, कालाब्रिया, नारमण्डी, गेलिसिया, नबिया, सहारा, सिशली, माल्टा, स्ट. हेलेन, केप आफ गोड होप, दक्षिणी एशिया माइनर, माईलोन, वर्तानिया, इजिप्ट (नगर) अलेक्जेण्डरा, लेनकास्टर, कलकत्ता।

अंशात्मक दृष्टि योग विचार—

सूर्य अन्य ग्रहों के साथ राशि-मण्डलों पर स्थित होते हुए नियमबद्ध भ्रमण करते रहते हैं जो कि सूर्यादि ग्रहों के परिभ्रमण का मार्ग है अन्यत्र हमने लिखा है कि सूर्यादि ग्रह भुवनों को देखते हुए भ्रमण करते हैं, भुवन से तात्पर्य है राशि-मण्डल अर्थात् यों भी कह सकते हैं कि सूर्यादि ग्रह राशि-मण्डल को देखते हुए नियमबद्ध भ्रमण करते रहते हैं इसी वेद प्रतिपादित सूर्यादि ग्रहों की भुवनों या राशि-मण्डल पर डाली हुई दृष्टि की हमारे ज्योतिष-शास्त्र प्रवर्तक महर्षियों तथा अन्यान्य आचार्यों ने विस्तृत रूप से व्याख्या की है जो ज्योतिष-शास्त्र एवं ग्रन्थों में मिलती है।

जातक-शास्त्र में एक पाद, द्विपाद, त्रिपाद तथा चतुष्पाद—इस प्रकार चार भागों में विभाजित और किसी भी राशि या भाव में स्थित ग्रह को दृष्टा तथा उस ग्रह से कुछ नियत दूरी पर स्थित राशि, भाव अथवा तद्गत ग्रह को दृश्य मानकर, ग्रहों के शुभाशुभ-स्वभावानुसार फल कथन की पद्धति की व्याख्या मिलती है किन्तु इस दृष्टि-विभाजन की व्याख्या को महर्षि पाराशर के अनुयायी ज्योतिष-विद्वानों ने सामान्य मानकर केवल सप्तम स्थान पर होनेवाली पूर्ण दृष्टि को ही महत्व दिया है साथ ही साथ एक पादादि दृष्टि को क्रम से शनि, गुरु, मंगल की पूर्ण दृष्टि मानकर और केन्द्र-त्रिकोण आदि भावों के स्वामी-ग्रहों में शुभाशुभत्व स्थापित करके फलादेश का मार्ग प्रस्फुटित किया है जो विशेष महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ।

स्वरोदय शास्त्र में ग्रहों की उपरोक्त दृष्टियों के अतिरिक्त वाम-दृष्टि, दक्षिण-दृष्टि, सम्मुख-दृष्टि, ऊर्ध्व दृष्टि, अधो-दृष्टि, तिर्य-दृष्टि और पार्श्व-दृष्टि के फल कथन की भी व्याख्या की गई है।

ताजिक शास्त्र में ग्रहों को शुभाशुभत्व न मानकर विभिन्न प्रकार का दृष्टि-विभाजन किया गया है और इन दृष्टियों को ही शुभाशुभ फल करने की शक्ति माना गया है तथा जब कोई दो ग्रह एक राशि के अंतर्गत होते थे तो उनमें

दृष्टि अभाव माना जाता था वहां भी इस शास्त्र में पूर्ण दृष्टि मानकर ही व्याख्या दी गई है। ग्रहों के दीप्तांशानुसार दृष्टियों के शुभाशुभ फल की अवधि कल्पना अवश्य कुछ सूक्ष्म और विशेष फलदायी सिद्ध होने से ताजिक शास्त्र के मन्तव्यों को अधिक मान्यता मिली।

ताजिक शास्त्र में उल्लेखित दृष्टियोगों की भांति कुछ अन्य दृष्टियों का निर्माण फलादेश के लिए पाश्चात्य विद्वानों ने किया तथा उन दृष्टियों के शुभाशुभ की कल्पना करते हुए फलकाल की अवधि जानने के लिए ग्रहों और उन दृष्टियों के दीप्तांश भी स्थिर किए। जिन से भी फलकथन में विशेष सुविधा हुई अब इनका प्रचार इतना हो गया कि पाश्चात्य पंचांगों के अतिरिक्त भारतीय पंचांगों में भी दृष्टि योग (एस्पेक्टेरियन) शीर्षक देकर प्रतिदिन होने वाले ग्रहों की अंशात्मक दृष्टियों का समय आदि निश्चित करके प्रकाशित करने लगे हैं जिनसे फलवक्ताओं को फल कथन में विशेष सफलता मिलती है।

अंशात्मक दृष्टि योग से सूक्ष्म से सूक्ष्म फल ज्ञात हो सकता है और इनके आधार पर निर्णय किए फल अधिकांशतः सफल होते हैं जिनकी संख्या अब तक २० तक पहुंच चुकी है यदि इन दृष्टि योगों में कुछ और दृष्टि योगों का और विभाजन किया जाय तो सूक्ष्म से सूक्ष्म फल निर्णय करने में कभी-कभी जो त्रुटि रह जाती है वह भी दूर होने में सम्भव हो सकती है अतः हमारे पूर्वाचार्यों ने जैसे एक राशि में ही अंशात्मक विभाजन करके सप्तवर्गी, दशवर्गी, द्वादश-वर्गी, षोडशवर्गी आदि की व्यवस्था की है और उनके द्वारा सूक्ष्म से सूक्ष्म फल-कथन की विधि बताई है वैसे ही भचक्र को पूर्णांश मानकर उसके द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम, षष्टी आदि विभाग करके वर्तमान प्रचलित दृष्टि योगों की अपेक्षा कुछ अधिक अंशात्मक दृष्टि योग बना लिए जायं तो जातक फल कथन में और भी अधिक सफलता मिल सकती है।

हम यहां अंशात्मक दृष्टि योगों का विभाजन दे रहे हैं जिनसे जातकों के सूक्ष्म से सूक्ष्म फल का निर्णय हो सकता है इन दृष्टि योगों का जातक सूक्ष्म फलादेश अन्य ग्रन्थ में लिखेंगे यहां केवल व्यापारिक वस्तुओं की तेजी-मंदी के फलादेश का उल्लेख करेंगे।

अंशात्मक दृष्टि योग विभाग चक्र—

क्र (विभाग)	भचक्र के अंशादि	संज्ञा	चिन्ह	फल
१ ÷	३६० =	पूर्णांश (युति)	०°[☌]	तेजीकारक
२ ÷	३६० =	द्वितीयांश (प्रतियोग)	१८०°[☍]	मंदीकारक
३ ÷	३६० =	तृतीयांश (त्रिकोण नवं पंचम)	१२०°[△]	मंदीकारक
४ ÷	३६० =	चतुर्थांश (केन्द्र)	९०°[□]	मंदीकारक
५ ÷	३६० =	पञ्चमांश (त्रिरेकादश)	७२°[Q]	तेजीकारक
६ ÷	३६० =	षष्टांश [द्विद्वादिश]	६०°[*]	तेजीकारक
८ ÷	३६० =	अष्टमांश [अर्ध केन्द्र]	४५°[∠]	मंदीकारक
९ ÷	३६० =	नवांश	४०°(—)	तेजीकारक
१० ÷	३६० =	दशांश	३५°(—)	तेजीकारक
१२ ÷	३६० =	द्वादशांश	३०°[⊻]	तेजीकारक
१५ ÷	३६० =	पञ्चदशांश	२४°(—)	तेजीकारक
१६ ÷	३६० =	षोड़शांश	२२°३०°(—)	तेजीकारक
१७ ÷	३६० =	अष्टादशांश	२०°(—)	मंदीकारक
२० ÷	३६० =	विशांश	१८°(—)	तेजीकारक
२४ ÷	३६० =	चतुर्विशांश	१५°(—)	मंदीकारक
३० ÷	३६० =	त्रिशांश	१२°(—)	तेजीकारक
४० ÷	३६० =	चत्वारिंशांश	९°(—)	तेजीकारक
६० ÷	३६० =	षष्ठयांश	६°(—)	तेजीकारक
$२\frac{२}{५}$ ÷	३६० =	द्वादशांश रहित	१५०°[⊼]	तेजीकारक
$२\frac{१}{२}$ ÷	३६० =	दशमांश रहित	१४४°(—)	मंदीकारक
$२\frac{२}{३}$ ÷	३६० =	अष्टमांश रहित	१३५°[⊡]	तेजीकारक

उपरोक्त वर्णित दृष्टि-योगों के अतिरिक्त एक दृष्टि योग और होता है जिसे है 'क्रांन्त्यंश साम्य' कहते हैं यह दृष्टि योग कोई से दो ग्रहों की क्रांति के अंशों में जो

समानता होती है, भले ही वे दोनों ग्रह किसी एक उत्तर या दक्षिण) अथवा भिन्न-भिन्न क्रांति में क्यों न हों ? तब बनता है, इस योग की सरल पहचान यह है कि किसी की भी इष्टकाल पर प्रत्येक ग्रह और भाव के स्पष्ट राशि, अंश, कला और विकला निकालने के बाद यह देखें कि किस किस दो ग्रहों या भावों के बीच का अन्तर अधिक से अधिक १८०° अंश तक का है ये अन्तर ०° से क्रमशः बढ़ता हुआ १८०° अंश तक का होता है और १८०° से आगे क्रमशः घटता हुआ ०° अंश तक का ही रह जाता है यह ध्यान रखना चाहिए कि इस अन्तर को जानने के लिए राशि या स्थान से न करके दृष्टा व दृश्य ग्रहों के अंशों से करनी चाहिये।

पूर्णांश (युति)—(०° दृष्टि)

जब दो ग्रह परस्पर सप्तम होकर एक उत्तरायण दूसरा दक्षिणायन हो तब पूर्णांश दृष्टि योग बनता है इसका भारतीय ज्योतिष में सप्तम (पूर्ण) दृष्टि में अन्तर्भाव है। इसको तेजीकारक माना गया है। यदि रवि, मंगल, शनि, हर्शल प्लूटो का परस्पर किसी एक दूसरे का पूर्णांश दृष्टि योग बनता है तो जिन दो ग्रहों का यह योग बनता है उनके अन्तर्गत की वस्तुओं में अति तेजी आती है और यदि चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, नेपच्यून में से जो दो ग्रह पूर्णांश योग बनाएं तो उन ग्रहों के अन्तर्गत की वस्तुओं में साधारण तेजी आती है तथा यदि शुभा-शुभ एक दूसरे से यह योग बनाएं तो मध्यस्थ फल समझें।

द्वितीयांश (प्रतियोग)—(१८०° दृष्टि)

जब दो ग्रह परस्पर १८०° अंश की दूरी पर हों तो द्वितीयांश दृष्टि योग बनाता है। सप्तम दृष्टि में और इसमें कोई भेद नहीं है यह योग मंदीकारक है।

जब पाप ग्रह परस्पर यह योग बनाएं तो साधारण मंदी और शुभ ग्रह यह योग बनाएं तो अति मंदी होती है और जब एक पाप ग्रह, दूसरा शुभ ग्रह यह योग बनाएं तो मध्यस्थ का विचार करें।

तृतीयांश (नव पंचम)—(१२०° दृष्टि)

किसी एक ग्रह से दूसरा ग्रह १२०° अंश की दूरी पर हो तो तृतीयांश

दृष्टि योग बनता है इस योग में और नव-पंचम दृष्टि में कोई भेद नहीं है यह मंदी कारक योग है।

जबपाप ग्रह—रवि, मंगल, शनि, राहु, हर्शल, प्लूटो में से परस्पर कोई दो ग्रह तृतीयांश दृष्टि योग बनाएं तो साधारण मंदी व शुभ ग्रह—चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, नेपच्यून में से कोई दो ग्रह परस्पर यह योग बनाए तो अति मंदी आती है तथा शुभ व पाप ग्रह परस्पर इस योग को बनाए तो मध्यस्थ विचार समझना चाहिए।

चतुर्थांश (केन्द्र)—(९०° दृष्टि)

जब कोई दो ग्रह एक ग्रह से दूसरा ग्रह ९०° अंश की दूरी पर हो तो चतुर्थांश दृष्टि योग बनता है। इसका अन्तर्भाव चतुर्थ-दशम (केन्द्र) दृष्टि में है, यह योग मंदी कारक है।

जब सूर्य, मंगल, शनि, राहु, हर्शल प्लूटो में से कोई दो ग्रह चतुर्थांश दृष्टि योग बनाएं तो साधारण मंदी और चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, नेपच्यून में से कोई दो ग्रह इस योग को बनाएं तो अति मंदी आती है और यदि एक शुभ और दूसरा पाप ग्रह हो तो मध्यस्थ का विचार करें।

पञ्चमांश (त्रिरेकादश)—(७२° दृष्टि)

जब कोई ग्रह किसी ग्रह से ७२° अंश की दूरी पर हो तो पंञ्चमांश दृष्टि-योग बनता है यह तेजीकारक होता है।

पाप ग्रहों में से कोई दो ग्रह पञ्चमांश दृष्टि योग बनाएं तो अति मंदी व शुभ ग्रहों में से कोई दो ग्रह इस योग को बनाएं तो साधारण तेजी आती है और पाप व शुभ ग्रह परस्पर इस योग को बनाएं तो मध्यस्थ स्थिति पर विचार करें।

षष्टांश (द्विर्द्वादश)—(६०° दृष्टि)

किसी ग्रह से दूसरा ग्रह ६०° अंश की दूरी पर हो तो षष्टांश दृष्टि योग बनता है यह तृतीय [एक पाद] दृष्टि के अन्तर्गत है यह तेजीकारक योग है

श

है

तो

जब पाप ग्रहों में से कोई दो ग्रह इस योग को बनाएं तो अति तेजी और जब शुभ ग्रहों में से कोई दो ग्रह इस योग को बनाएं तो साधारण मंदी आती है और यदि किसी पाप ग्रह से कोई शुभ ग्रह या किसी शुभ ग्रह से कोई पाप ग्रह इस योग को बनाएं तो क्रमशः क्षणिक तेजी व सामान्य तेजी का विचार करना चाहिए।

अष्टमांश (अर्द्ध केन्द्र)—(४५° दृष्टि)

जब किसी ग्रह से कोई दूसरा ग्रह ४५° अंश की दूरी पर हो तो अष्टमांश दृष्टि योग बनता है इसका अन्तर्भाव चतुर्थ व दशम की आर्ध दृष्टि में होता है यह मंदी कारक योग है।

जब कोई दो पाप ग्रह अष्टमांश दृष्टि योग बनाएं तो साधारण मंदी व शुभ ग्रहों में से कोई दो ग्रह इस योग को बनाएं तो अति मंदी आती है और यदि किसी शुभ ग्रह के साथ कोई भी पाप ग्रह इस योग को बनाएं तो क्षणिक मंदी तथा पाप ग्रह के साथ शुभ ग्रह यह योग बनाएं तो सामान्य मंदी पर पुनः विचार करना चाहिये।

नवांश—(४०° दृष्टि)

जब किसी दो ग्रहों का अन्तर ४०° अंश का हो तब नवांश दृष्टि योग बनता है यह योग तेजी कारक है।

जब शुभ ग्रहों में से कोई दो ग्रह नवांश दृष्टि योग बनाएं तो साधारण तेजी व पाप ग्रहों में से कोई दो ग्रह इस योग को बनाएं तो अति तेजी कारक होता है और यदि किसी शुभ ग्रह के साथ कोई पाप ग्रह इस योग को बनाएं तो सामान्य तेजी व किसी पाप ग्रह के साथ कोई शुभ ग्रह इस योग को बनाएं तो क्षणिक तेजी कारक होगा।

दशांश—(३६° दृष्टि)

किसी एक ग्रह से दूसरा ग्रह ३६° अंश के अन्तर पर हो तो दशांश दृष्टि योग बनता है यह योग तेजीकारक है।

कोई दो पाप ग्रह दशांश दृष्टि योग बनाए तो अति तेजी व कोई दो शुभ ग्रह इस दृष्टि योग को बनाए तो साधारण तेजी आती है और यदि किसी पाप ग्रह से कोई शुभ ग्रह यह योग बनाए तो क्षणिक तेजी तथा किसी शुभ ग्रह से कोई पाप ग्रह यह योग बनाए तो सामान्य तेजी आती है।

द्वादशांश—(३०° दृष्टि)

जब एक ग्रह दूसरे ग्रह से ३०° अंश के अन्तर पर हो तो द्वादशांश दृष्टि योग बनता है यह तृतीय (एक पाद) के अर्ध दृष्टि के अन्तर्गत है यह योग तेजीकारक है।

कोई भी दो पाप ग्रह द्वादशांश दृष्टि योग बनाएं तो अति तेजी व कोई से भी दो शुभ ग्रह इस योग को बनाएं तो साधारण तेजी आती है और यदि शुभ ग्रह से पाप ग्रह यह योग बनाएं तो तेजी तथा पाप ग्रह से शुभ ग्रह यह योग बनाये तो क्षणिक तेजी की संभावना रहती है।

पञ्चदशांश—(२४° दृष्टि)

एक ग्रह से दूसरा ग्रह २४° अंश की दूरी पर हो तो पञ्चदशांश दृष्टि योग बनता है यह तेजीकारक योग है।

इसका भी उपरोक्त द्वादशांश दृष्टि योग की भांति ही शुभ व पाप ग्रहों का फल समझना चाहिए।

षोड्षांश—(२२·३०° दृष्टि)

किसी एक ग्रह से दूसरा ग्रह २२·३०° अंश की दूरी पर हो तो षोड्षांश दृष्टि योग बनता है यह तेजीकारक योग है।

जब कोई से दो पाप ग्रह षोड्षांश दृष्टि योग बनायें तो अति तेजी व कोई से दो शुभ ग्रह यह योग बनाएं तो साधारण तेजी आती है और यदि किसी पाप ग्रह से कोईसा भी शुभ ग्रह यह योग बनायें तो क्षणिक तेजी तथा किसी शुभ ग्रह से कोई सा भी पाप ग्रह यह योग बनाए तो सामान्य तेजी का विचार करना चाहिए।

अष्टादशांश—(२०° दृष्टि)

जब किन्हीं दो ग्रहों का अन्तर २०° अंश का हो तब अष्टादशांश दृष्टि-योग बनता है यह मंदीकारक योग है।

कोई से भी दो शुभ ग्रह जब अष्टादशांश दृष्टि योग बनाए तो अति मंदी व जब कोई से भी दो पाप गृह यह योग बनाएं तो क्षणिक मंदी आती है और यदि किसी भी शुभ ग्रह से कोई सा भी पाप ग्रह यह योग बनाए तो साधारण मंदी तथा किसी भी पाप ग्रह से कोई सा भी शुभ ग्रह यह योग बनाए तो सामान्य मंदी आती है।

विशांश—(१८° दृष्टि)

जब एक ग्रह से दूसरा ग्रह १८° अंश की दूरी पर हो तो विशांश दृष्टि योग बनाता है यह तेजी कारक योग है।

जब पाप ग्रहों में से कोई से भी दो ग्रह विशांश दृष्टि योग सम्बन्ध बनायें तो अति तेजी व जब शुभ ग्रहों में से कोई भी दो ग्रह यह योग सम्बन्ध हो तो साधारण तेजी आती है और यदि किसी पाप ग्रह से कोई शुभ ग्रह यह योग बनाए तो क्षणिक तेजी तथा कोई पाप ग्रह किसी शुभ ग्रह से यह योग बनाए तो सामान्य तेजी का द्योतक समझना चाहिये।

चतुर्विशांश—(१५° दृष्टि)

किसी एक गृह से कोई दूसरा गृह १५° अंश की दूरी पर हो तो चतु-र्विशांश दृष्टि योग बनता है यह योग मंदी कारक है।

पाप गृहों में से कोई दो गृह चतुर्विशांश दृष्टि योग बनाए तो साधारण मंदी व शुभ गृहों में से कोई दो गृह यह योग बनायें तो अति मंदी आती है और यदि पाप गृह से शुभ गृह यह योग करे तो सामान्य मंदी तथा शुभ गृह से पाप गृह यह योग बनाए तो क्षणिक मंदी आती है।

त्रिशांश—(१२° दृष्टि)

किसी एक गृह से दूसरा गृह १२° अंश के अन्तर पर हो तो त्रिशांश दृष्टि

योग बनता है यह योग तेजीकारक है।

किसी भी दो पाप गृहों में त्रिशांश दृष्टि योग बने तो अति तेजी व किसी भी दो शुभ गृहों में यह योग बने तो साधारण तेजी आती है और यदि किसी पाप गृह से कोई शुभ गृह यह योग बनाए तो क्षणिक तेजी तथा किसी शुभ गृह से कोई पाप गृह यह योग बनाए तो सामान्य तेजी का विचार करना चाहिए।

चत्वारिंशांश (९° दृष्टि)

जब किसी भी दो गृहों का अन्तर ९° अंश का हो तब चत्वारिंशांश दृष्टि-योग बनाता है यह तेजीकारक है।

किन्हीं दो पाप गृहों में चत्वारिंशांश दृष्टि सम्बन्ध बनता हो तो अति तेजी व किन्हीं दो शुभ गृहों में यह योग सम्बन्ध हो रहा हो तो क्षणिक तेजी आती है और यदि किसी पाप गृह से किसी शुभ गृह का यह योग सम्बन्ध हो तो साधारण तेजी तथा किसी शुभ गृह से कोई पाप गृह यह योग सम्बन्ध बनाए तो सामान्य तेजी आती है।

षष्ठयांश—(६° दृष्टि)

जब कोई गृह किसी गृह से ६° अंश की दूरी पर हों तो षष्ठयांश दृष्टि योग बनता है यह योग तेजीकारक है।

जब किन्हीं दो पाप गृहों में, किन्हीं दो शुभ गृहों में, पाप गृह से शुभ गृह में अथवा शुभ गृह से पाप गृह में षष्ठयांश दृष्टि योग बने तो इनका फल चत्वा-रिंशांश दृष्टि योग की भांति ही होता है।

द्वादशांश रहित—(१५०° दृष्टि)

किसी एक गृह से दूसरा गृह १५०° अंश की दूरी पर हो तो द्वादशांश रहित दृष्टि योग बनता है यह योग तेजीकारक है।

जब किन्हीं दो पाप ग्रहों में द्वादशांश रहित दृष्टि योग सम्बन्ध होता है तो अति तेजी व जब किन्हीं दो शुभ गृहों में यह योग सम्बन्ध होता है तो

क्षणिक तेजी आती है और यदि किसी पाप गृह से कोई शुभ गृह यह योग बनाए तो साधारण तेजी तथा किसी शुभ गृह से कोई पाप गृह यह योग बनाएं तो सामान्य तेजी आती है।

दशमांश रहित–(१४४° दृष्टि)

किन्हीं दो गृहों का अन्तर १४४° अंश का हो तब दशमांश दृष्टि योग बनता है यह योग मंदीकारक है।

पाप गृहों में से किन्हीं दो गृहों में दशमांश रहित दृष्टि सम्बन्ध हो तो क्षणिक मंदी व शुभ गृहों में से किन्हीं दो गृहों में यह योग बने तो अति मंदी आती है और यदि किसी शुभ गृह के साथ कोई पाप गृह यह योग सम्बन्ध करे तो साधारण मंदी तथा किसी पाप गृह के साथ कोई सा भी शुभ गृह यह योग बनाए तो साधारण मंदी आती है।

अष्टमांश रहित–(१३५° दृष्टि)

जब किन्हीं दो गृहों में १३५° अंश का अन्तर हो तो अष्टमांश रहित दृष्टि योग बनता है यह योग तेजीकारक है।

पाप गृहों में से कोई भी दो गृह अष्टमांश दृष्टि योग बनाएं तो अति तेजी व जब शुभ गृहों में से कोई दो गृह यह योग बनाएं तो साधारण तेजी आती है और यदि किसी शुभ गृह से कोई सा भी पाप गृह यह योग बनाएं तो सामान्य तेजी तथा किसी पाप गृह से कोई सा भी शुभ गृह यह योग बनाये तो क्षणिक तेजी समझना चाहिये।

वस्तुओं का राशि विचार–

मेष राशिगत—लोहा, फौलाद, मशीनरी, गेहूं, सोना, मसूर, तांबा लाल-मिर्च, मूंगा, पेंटरोल आदि वस्तुओं का समावेश किया गया।

वृषभ राशिगत—रुई, जूट, सर्व प्रकार के श्वेत वस्त्र, धातु पदार्थ, कम्पनी के शेअर्स, चावल, गेहूं, शक्कर, चल सम्पत्ति, कपूर, इलायची, काजू, बिनौला, मेनसल आदि पदार्थ माने गये हैं।

मिथुन राशिगत—घृत, ज्वार, बाजरा, रुई, रेलवे, प्रकाशन, कागज, सौंफ, जीरा, जायफल, तूतिया, अजवायन आदि व्यापारिक वस्तुओं को माना गया है।

कर्क राशिगत—चांदी, चाय, जायदाद (अचल सम्पत्ति), तृण, नारियल, सेंधा नमक, फिटकरी, अबरक, भोडर, सजी आदि पदार्थों का समावेश किया गया है।

सिंह राशिगत—सोना, शासकीय मुद्रा, चावल, चना, गुड़, चमड़ा, सौंठ, अदरक, केसर, आलूबुखारा आदि वस्तुएं हैं।

कन्या राशिगत—मटर, ग्वार, पीली राई, गेहूं, मूंग, चावल, अनाज, कतीरा, धनियां, पन्ना, मंहदी के फूल, पिस्ता आदि वस्तुओं का समावेश किया गया है।

तुला राशिगत—रुई, सिल्क, अरहर, गेहूं, चावल, सर्व प्रकार के रंगीन वस्त्र, साबूदाना, खोपरा, पोस्तदाना आदि वस्तुएं मानी गई हैं।

वृश्चिक राशिगत—केमीकल्स, गुड़, शकर, लोहा, चमड़ा, लाख, ऊन, अलसी, मूंगफली, पीली सरसों, कांगनी, कत्था, पारा, तेजाब, सुपारी आदि वस्तुएं मानी जाती हैं।

धनु राशिगत—अश्व, हाथी व हाथी दांत का सामान, जानवर, नमक, शेअर्स, आलू, रबड़, हल्दी, पीले वस्त्र, अस्त्र, समुद्री यातायात, विदेशी बाउंड, बीमा कम्पनी, पीतल, हींग, जावत्री, गंधक, बादाम आदि वस्तुएं हैं।

मकर राशिगत—वृक्ष, सोना, तांबा, कोयला मिलों के शेअर्स, आयरन शेअर्स, शीशा, जस्ता, टीन, रांगा, गन्ना, तिल्ली, काली सरसों, काली मिर्च, दालचीनी, लौंग, पीपर, काला नमक, मुनक्का, किसमिस, कार्डी शीड आदि वस्तुओं का समावेश किया गया है।

कुम्भ राशिगत—बिजली का सामान, चित्र, रंग, लकड़ी का सामान, उच्च किस्म की सिल्क, कोयला व कोयला खदान के शेअर्स, तेल, अलसी, लोहा, लोहे-का सामान, पुष्प, नीलम, आयरन शेअर्स, अरंडी, तेल सरसों–तिल्ली–अरण्डी–मूंगफली आदि, कस्तूरी, निगर शीड, अमचूर, चिलगोजे आदि वस्तुएं मानी गई हैं।

मीन राशिगत—मछली, सीप, मोम, सुगंधित पदार्थ, हीरा, मोती, औषधियां, गोटा व गोटे की बनी वस्तुयें आदि को माना गया है।

वस्तुओं का आधिपत्य ग्रह—

सोना, शासकीय मुद्रा, जवाहरात, गिलट व गिलट की बनी हुई वस्तुएं, बाउण्ड, चावल, शहद, जड़ी-बूटियां आदि वस्तुओं पर सूर्य का आधिपत्यत्व है।

चांदी, दूध, पेट्रोलियम के शेअर्स, होटल, जौ, साधारण आयल कम्पनी-शेअर्स, द्रव्य, शराब, मछली, नेवीगेशन, कांच व कांच का सामान, घृत आदि के आधिपत्य चन्द्र माने गए हैं।

सोना, चावल, तिलहन, रेलवे शेअर्स, धातु खनिज उद्योग, मशीनरी, जायदाद, लोहा, ईंट, काफी, चाय आदि वस्तुओं के आधिपत्य मंगल हैं।

गेहूं, चावल, अनाज, खाद्य-पदार्थ सिल्क, सूत, शक्कर, रुई, तांबा, अर्थ सम्बन्धी समान आदि वस्तुओं के आधिपत्य बुध माने गए हैं।

टीन, रबड़, चांदी, जस्ता, चना, जूट, तम्बाकू, शेअर्स-बैंक-बैंकर्स और बीमा कम्पनी, क्लोथ मिल्स, विलासता की सामग्री आदि वस्तुओं के आधिपत्य गुरु हैं।

रुई, जूट का सामान, सूत, शक्कर, गेहूँ, चावल, चांदी, लेचियन सिल्क, शक्कर कम्पनी के शेअर्स, मिष्टान्न, मोती, कांच का उद्योग, पुष्प, तांबा, सुगन्धित पदार्थ, सेव, नासपाती, शराब आदि वस्तुएं शुक्र के आधिपत्यत्व में हैं।

कोयला, सीमेंट, सीमेंट का सामान, तांबा, अलसी, तिलहन, काली मिर्च मीठा तेल, मूंगफली, ऊन, लोहा, जूट, जौ, अचल सम्पत्ति, जूते, रील, कृषि सम्बन्धी यन्त्र, संगमरमर, वनस्पति आदि वस्तुओं पर शनि का अधिपत्य है।

बिजली का सामान व यन्त्र आदि पर राहु-केतु दोनों का आधिपत्यत्व माना गया है।

बिजली, वायुयान, मिट्टी की वस्तु, टेलीग्राम, वायरलेस, नेवीगेशन, कार, मोटर, रेल, ट्राम्बे, बस, गवर्नमेंन्ट पेपर, ज्वाइण्ट कम्पनी, फिल्म उद्योग, वाटर-उद्योग, एलमूनियम उद्योग आदि के आधिपत्य हर्शल माने गए हैं।

चाय, कपास, औषधि, मिष्ठान्न, तेल, मत्स्योद्योग, तम्बाकू, सिंडीकेट आदि के आधिपत्य नेपच्यून हैं।

रबड़ की बनी हुई वस्तुएं, टीन, भाइंनरी, शेग्रर्स, चमड़ा, घड़ियां, मशीनरी, तांबा, जस्ता, आदि पर प्लूटो का आधिपत्यत्व है।

हमने उपरोक्त राशियों के अन्तर्गत वस्तु तथा वस्तुओं के आधिपत्य या उनके स्वामी का उल्लेख किया है जिससे यह सरलता हो गई कि किसी वस्तु के फलादेश में सुविधा से उसकी राशि व स्वामी ज्ञात हो सके।

राशि व ग्रहों का तेजी मंदी ज्ञान चक्र

राशि	अंग्रेजी नाम	कारक	ग्रह	कारक
मेष	Aries	तेजीकारक	सूर्य	तेजीकारक
वृषभ	Taurus	तेजीकारक	चन्द्र	क्षणिक तेजी-मंदी कारक
मिथुन	Gemini	मंदीकारक	मंगल	तेजीकारक
कर्क	Cancer	मंदीकारक	बुध	क्षणिक तेजी-मंदी कारक
सिंह	Leo	तेजीकारक	गुरु	मंदीकारक
कन्या	Virgo	मंदीकारक	शुक्र	तेजीकारक
तुला	Libra	मंदीकारक	शनि	तेजीकारक
वृश्चिक	Scorpio	तेजीकारक	राहु	तेजीकारक
धनु	Sagittarius	मंदीकारक	केतु	तेजीकारक
मकर	Capricornos	तेजीकारक	हर्शल	तेजीकारक
कुम्भ	Aquarius	मंदीकारक	नेप्च्यून	मंदीकारक
मीन	Pisces	मंदीकारक	प्लूटो	तेजीकारक

सूचना:—उपरोक्त चक्र में राशि व ग्रहों को जो तेजी मंदी कारक बताया गया है वह प्रभाव उसका स्वभावानुकूल लिखा गया है। अन्य परिस्थितियों में यह विचार न करें बल्कि परिस्थितियों के अनुसार इनका फल होता है।

ग बन रहे हों तो वस्तु राशि के

स्वग्रह, उच्च, नीच और बलहीन ज्ञान चक्र

राशि	अंग्रेजी नाम	स्वगृह	उच्च	नीच	बलहीन
मेष	Aries	मंगल	रवि, प्लूटो	शनि	शुक्र
वृषभ	Taurus	शुक्र	चन्द्र	हर्शल	मंगल
मिथुन	Gemini	बुध			गुरु
कर्क	Cancer	चन्द्र	गुरु, नेपच्यून	मंगल	शनि
सिंह	Leo	रवि			शनि
कन्या	Virgo	बुध	बुध	शुक्र	गुरु
तुला	Libra	शुक्र	शनि	रवि, प्लूटो	मंगल
वृश्चिक	Scorpio	मंगल, प्लूटो	हर्शल	चन्द्र	शुक्र
धनु	Sagittarius	गुरु			बुध
मकर	Capricornus	शनि	मंगल	गुरु, नेपच्यून	चन्द्र
कुम्भ	Aquarius	शनि, हर्शल			रवि
मीन	Pisces	गुरु, नेपच्यून	शुक्र	बुध	बुध

ग्रह राशि भोग ग्रह

ग्रह	अंग्रेजी नाम	राशि भोग	राशि भोग फल
रवि	Sun	१ मास	एक मास
चन्द्र	Moon	२। दिन	सवा दो दिन
मंगल	Mars	१॥ मास	डेढ़ मास
बुध	Mercury	१ मास	एक मास
गुरु	Jupiter	१३ मास	तेरह मास
शुक्र	Venus	१ मास	एक मास
शनि	Saturn	२॥ वर्ष	ढाई वर्ष
राहु	Rahu	१८ मास	अट्ठारह मास

केतु	Ketu	१८ मास	अट्ठारह मास
हर्शल	Herschel	७ वर्ष	सात वर्ष
नेपच्यून	Neptune	१४ वर्ष	चौदह वर्ष
प्लूटो	Pluto	२० व. ६ मा. ५ दि	बीस वर्ष ६ मास ५ दिन

ग्रहों के शर विचार

गृहों के दो शर माने गये हैं—१. उत्तर शर, २. दक्षिण शर। गृहों के शर प्रवेश काल में (चाहे वह उत्तर शर में चाहे दक्षिण शर में प्रवेश करे) होने वाले अंशात्मक दृष्टि योगों का कुछ भी प्रभाव नहीं होता उस समय शर परिवर्तन का ही प्रभाव बाजारों पर पड़ता है क्योंकि शर परिवर्तन के समय उस गृह की स्थान विशेष के साथ एक प्रकार की युति होती है जो अन्य युतियों से प्रबल एवं निरवकाश होती है इस कारण अन्य युतियों को तो पुनः अपना प्रभाव दिखाने का अवसर प्राप्त हो सकता है किन्तु शर परिवर्तन को अपना प्रभाव दिखाने के लिये और कोई अवसर प्राप्त नहीं होता।

कोई भी गृह जब उत्तर शर में प्रवेश करेगा तो मंदी तथा जब दक्षिण शर में प्रवेश होगा तो तेजी करता है परन्तु जब वक्री अथवा अस्तावस्था में गृह हो तो इसके विपरीत फल करता है अर्थात मंदी के स्थान पर तेजी व तेजी के स्थान पर मंदी।

गृहों के परम शर का गणितागत मान कभी न्यून और कभी अधिक हुआ करता है इसलिए उत्तर व दक्षिण शरों का मध्यम मान निम्न चक्रानुसार निश्चित माना गया है—

उत्तर व दक्षिण शर का [illegible]म मान चक्र

ग्रह	उत्तर शर	दक्षिण शर
चन्द्र	५ अंश १९ कला	५ अंश १३ कला
मंगल	[illegible] अंश ३१ कला	६ अंश ४७ कला

बुध	७ अंश ० कला	७ अंश ० कला
गुरु	१ अंश ४१ कला	१ अंश २८ कला
शुक्र	९ अंश २ कला	८ अंश ५५ कला
शनि	२ अंश ५२ कला	२ अंश ५२ कला
हर्शल	२ अंश ५२ कला	२ अंश ५२ कला
नेपच्यून	१ अंश ४१ कला	१ अंश २८ कला
प्लूटो	६ अंश ३१ कला	६ अंश ४७ कला

किसी ग्रह के वर्तमान परम शर और मध्यम मान का अन्तर करने पर जो अन्तर आवे उसमें व वर्तमान शर में जो न्यूनतम हो उसका मध्यममान से गुणा करने पर जो गुणित आवे उसके कला विकला बनाकर उस ग्रह की दैनिक गति के द्वारा जितना समय उपलब्धि हो उतने समय तक उस ग्रह के शरपरिवर्तन का प्रभाव रहता है।

राशि युति, नवांश युति तथा क्रान्त्यंशसाम्य में जब भिन्न प्रकृति के ग्रह होते हैं तब उनके जय व पराजय की स्थिति का ज्ञान करना पड़ता है उस समय जब दो ग्रहों में से जो उत्तरशर में ग्रह होता है वह विजयी और जो दक्षिण शर में ग्रह होता है वह पराजयी माना जाता है और जब दोनों ग्रह उत्तर शर में हो तो उनमें से जो ग्रह अधिकांशी होता है वह ग्रह विजयी व दूसरा ग्रह पराजयी माना जायगा तथा जब दोनों ही ग्रह दक्षिण शर में होंगे तो उनमें से जो ग्रह न्यूनांशी होगा वह विजयी एवं दूसरा ग्रह पराजयी माना जायगा।

दृष्टि—दीप्तांश का ज्ञान चक्र

दृष्टि	अंश	दीप्तांश	दृष्टि	अंश	दीप्तांश	दृष्टि	अंश	दीप्तांश
पूर्णांश	०°	७°	द्वा	३०°	१°	द्वादशांश रहित	१५०°	६°
प्रतियोग	१८०°	७°	पंच	२४°	१°	दशमांश		
त्रिकोण	१२०°	५°	षोडष	३६°	१°	रहित	१४४°	६°
केन्द्र	९०°	४°	अष्टाद	२०°	१°	षष्ठमांश		

पञ्चमांश	७२°	३°	विशांश	१८°	१°	रहित		१३५° ५°
षष्टांश	६०°	२°	चतुर्विशांश	१५°	१°			
अष्टमांश	४५°	२°	त्रिशांश	१२°	०°			
नवांश	४०°	२°	चत्वारिंशांश	९°	०°			
दशांश	३६°	१°	षष्ट्यांश	६°	०°			

दृष्टि योगों का प्रभाव काल—

पूर्व वर्णित सभी दृष्टि योगों के बनाने वाले गृहों में एक दृष्टा व दूसरा दृश्य गृह होता है। राशि मण्डल में जो गृह पीछे की राशियों में होता है वह दृश्य ग्रह माना जाता है। इन दृष्टि योगों का फल दृश्य ग्रह की क्रांति गति के आधार पर दृष्टि योग बनने से पहिले या पीछे दृष्टि दीप्तांशों के अर्धभाग तुल्य दोनों ग्रहों में अन्तर जिस समय तक रहता है उतनी अवधि में हुआ करता है।

जब उत्तरक्रांति में दृश्य ग्रह हो और उसकी उत्तर क्रांति की गति बढ़ रही हो तो वह उस दृष्टि योग बन जाने के बाद उस दृष्टि के दीप्तांश के अर्धभाग के तुल्य अन्तर में जितना समय उसको अपनी गति के अनुसार लगे उतने समय तक वह अपनी दृष्टि अनुसार शुभ या अशुभ फल करता है। और जब उत्तर क्रांति की गति घट रही हो तो वह उस दृष्टि योगके बनने से पूर्व पहले जितना समय प्राप्त हो उतने समय में उस दृष्टि का शुभ या अशुभ फल होता है।

जब दृश्य ग्रह दक्षिण क्रांति में हो तो उत्तर क्रांति की गति के नियम से विपरीत फल करता है अर्थात क्रांति गति बढ़ रही हो तो दृष्टि बनने से पूर्व और क्रांति घट रही हो तो दृष्टि बनने के बाद फल किया करता है।

जिस समय दृश्य ग्रह की उत्तर या दक्षिण क्रांति की गति स्थिर हो अर्थात न बढ़ रही हो और न घट रही हो तो वह दृश्य ग्रह उस दृष्टि के दीप्तांशों के पूर्वापर दोनों ही भागों के तुल्य अन्तर में जितना समय लगे उतने समय तक दृष्टि योग बनने से पूर्व या बाद में अपना शुभाशुभ प्रभाव तो करता है किन्तु बहुत ही न्यून।

जब ग्रहों के समान श्रेणी के कई दृष्टि योग बन रहे हों तो वस्तु राशि के

स्वामी (लग्नेश) के साथ होने वाले दृष्टि योग का ही प्रभाव रहता है उसी प्रभावानुसार शुभ या अशुभ फल होता है ।

दो समान दृष्टि योगों में वक्री ग्रह के दृष्टि योग की अपेक्षा मार्गी ग्रह का दृष्टि योग बलवान होता है ।

किसी भी राशि में प्रवेश करके जब तक कोई ग्रह एक अंश का नहीं हो जाता तब तक वह ग्रह निरंश माना जाता है उस समय ग्रह का कोई भी दृष्टि योग क्यों न बन रहा हो वह दृष्टि योग निष्फल होता है अथवा विपरीत फल करता है अर्थात शुभ के स्थान पर अशुभ फल तथा अशुभ के स्थान पर शुभ फल करेगा ।

अस्त नीचस्थ तथा वक्री ग्रह के साथ होने वाले दृष्टि योग का फल भी विपरीत होता है । शुभ दृष्टि योग वाला अशुभ फल तथा अशुभ दृष्टि योग वाला शुभ फल करेगा ।

एक राशि गत ग्रहों में बनने वाले दृष्टि योग जब भिन्न राशिस्थ ग्रहों के दृष्टि योगों का अभाव होता है तब ही अपना शुभाशुभ फल दिखाते हैं ।

तेजी-मंदी जानने के नियम–

किसी वस्तु की तेजी-मंदी विचारने के लिए जैसे अंशात्मक दृष्टि योगों का प्रभाव निहिति है वैसा ही प्रभाव ग्रह का भी निहित है क्योंकि सम्पूर्ण ग्रह समय-समय पर अपनी गतिविधि के अनुसार राशि मण्डल में अंशात्मक दृष्टि योग बनाते है और ग्रहों का वस्तु-लग्न से केन्द्र त्रिकोणादि भावों के स्वामी होने के कारण शुभाशुभत्व फल भी परिवर्तन होता रहता है अतः द्वादशभाव, राशि, राशिस्वामी, ग्रहों का स्पष्टीकरण, ग्रहों का शुभाशुभत्व, त्रिकोण-केन्द्रादि संज्ञाएं आदि का भी सामान्य ज्ञान रखना चाहिए ।

जिस वस्तु की जो राशि हो उस राशि व उसका स्वामी ग्रह यह दोनों ही उस वस्तु की घटा-बढ़ी पर अपना विशेष प्रभाव दिखाते हैं । अतः किसी वस्तु की तेजी-मंदी विचारने के लिए उस वस्तु की राशि व स्वामी मुख्य साधन हैं । वस्तु की राशि को ही उसकी लग्न मानकर लग्नादि द्वादश भावों के स्वामी

ग्रहों का शुभाशुभत्व सामान्य एवं विशेष शास्त्र नियमों के आधार पर निश्चित करके लग्न तथा अन्यान्य शुभाशुभ ग्रहों के शुभाशुभ दृष्टि सम्बन्ध के आधार पर वस्तु की तेजी-मंदी का विचार करना चाहिए।

प्रत्येक दृष्टि सम्बन्ध का एक निश्चित स्थान होता है जो ग्रहों की अंशात्मक दूरी पर माना गया है मन्द गति वाले ग्रहों के दृष्टि योगों से लम्बी रूखी तेजी-मंदी व शीघ्रगामी ग्रहों के दृष्टि योगों से साप्ताहिक या दैनिक तेजी-मंदी का ज्ञान होता है। ग्रहों के परस्पर जो-जो दृष्टि सम्बन्ध समय-समय पर बनते हैं वे उन दिनों के बाजार की गतिविधि के रुख की सूचना पहिले से ही प्रकट कर देते हैं।

जब ग्रहो के लगातार अशुभ दृष्टि सम्बन्ध बनते रहते है तो अधिक समय तक बाजार में लम्बी रुख की तेजी चलती है और यदि शुभ दृष्टि सम्बन्ध बनते रहें तो इसके विपरित बाजार में मंदी रहेगी इसी प्रकार यदि एक साथ शुभ व अशुभ दृष्टि सम्बन्ध बने तो बाजार में क्षण-क्षण में तेजी-मंदी के मौके आते-रहेंगे अर्थात् बाजार अनिश्चित रूप धारण कर लेता है।

ग्रहों और दृष्टियों के शुभाशुभ फल तथा प्रभावकाल आदि की सम्पूर्ण जानकारी का आभास कर लेने के बाद प्रत्येक वस्तु का सही-सही भविष्य तेजी-मंदी का ज्ञात हो सकता है और अचूक चांसों के निकालने में भी प्रवीणता प्राप्त हो सकती है साथ ही साथ यदि ग्रहों के अंशात्मक दृष्टि योगों के द्वारा राष्ट्रिय भविष्य का भी ज्ञान प्राप्त हो जाय तो इसमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं कि तेजी-मंदी की उन बड़ी-बड़ी परिस्थितियों का भी ज्ञान पूर्व में ही हो सकता है जो युद्ध, महामारी, हड़ताल आदि के कारण व्यापारिक केन्द्रों में अचानक होता है।

किसी वस्तु की जिस समय की तेजी-मंदी निकालनी हो उस वस्तु की राशि-लग्न से द्वादशभावों के स्वामी ग्रहो का शुभाशुभत्व स्थिर करें फिर स्थानीय इष्टकाल से सभी ग्रहों को सायन पद्धति के अनुसार स्पष्ट करके वस्तु की लग्न कुण्डली में यथा स्थान लिखें साथ ही वे ग्रह जिन-जिन नवांशों में हों उन-उन नवांश राशियों में एक नवांश कुण्डली पृथक से बनाकर उसमें यथास्थान लिखें। नवांश कुण्डली की लग्न भी वही होती है जो वस्तु की लग्न मानी गई

है। अब यह देखना चाहिये कि ऐसे कौन से दृष्टि योग हैं जिनका प्रभाव उन ग्रहों की उत्तर या दक्षिण क्रांति की गति के बढ़ने या घटने के कारण दृष्टि सम्बन्ध बन जाने के बाद इष्टकाल पर भी स्थित है। इसी प्रकार स्थित प्रभाव वाले व भावी दृष्टि योगों का भी निश्चय सावधानी से करना चाहिए। निश्चित किए हुए दृष्टि योग—अतीत, वर्तमान व भावी सभी को क्रम से दोनों कुण्डलियों के नीचे कारण सहित शुभाशुभ फल और उनके प्रभावकाल आदि के साथ लिखें यहां यह भी ध्यान रखें उस समय शर परिनर्तन आदि कोई विशेष योग तो नहीं बन रहा है जिसके कारण उन दृष्टि योगों का प्रभाव हीन हो रहा हो। अब इन दृष्टि योगों की प्रबलता तथा न्यूनाधिकता के आधार पर उस समय की तेजी-मंदी का विवेचन सहित सारांश रूप निचोड़ क्या होता है यह स्पष्ट रूप से निर्णय कर लें। कहीं कोई भूल न रह गई हो इसलिये अपने इस निर्णय की पुनः एक बार परीक्षा और कर लें और प्रत्येक ग्रह व नवांश तथा दृष्टि सन्बन्ध को पुनः दोहरा लें। इस प्रकार से निर्णय किए हुए तेजी-मंदी के विचार में कोई भी भूल न होने से सही ही निर्णय होता है।

नवांशों का सामान्य ज्ञान––

नवांश १०८ होते हैं। नवांश को चरण या पाद भी कहते हैं। सब ग्रह बारह राशि या २७ नक्षत्र अथवा १०८ चरण या नवांश में भोग करते हैं या यों भी कहा जा सकता है कि २। नक्षत्र या ९ चरण एक राशि में निहित माने गए हैं।

जो ग्रह जिस राशि में तेजी-मंदी का प्रभाव करते हैं वह ही अपने नवांश में भी तेजी-मंदी का प्रभाव करते है जैसे गुरु ग्रह मिथुन राशिगत मंदी का प्रभाव दिखाता है वैसा ही नवांश में मिथुन पर आवेगा तो भी गुरु ग्रह मंदी ही का प्रभाव दिखायगा। कभी कभी ऐसा भी होता है कि जिस राशि में ग्रह हो उसी राशि के नवांश में भी वही ग्रह हो जैसे मकर राशि में ग्रह प्रवेश करता है तो पहिले मकर नवांश में ही आयगा और इसी प्रकार मिथुन राशिगत से ग्रह उतरता है तो अंतिम नवांश मिथुन ही होता है ऐसी स्थिति में तेजीकारक ग्रह

तेजी कारक राशि व तेजी कारक ही नवांश हो तो अति तेजी आती है इसी प्रकार इसके विपरीत मंदी समझें।

किसी भी राशि गत सम्मिलित ग्रह जो प्रभाव दिखाते हैं वो ही ग्रह एक ही नवांश में सम्मिलित आने से वो ही फल करेंगे जैसे शुक्र और राहु एक साथ एक राशि गत होने पर मंदी करता है वैसे ही एक नवांश में होने से भी मंदी करेंगे।

प्रत्येक ग्रह जब किसी राशि पर भ्रमण करता है तो उस ग्रह की नौ स्थितियां होती हैं जिसे की हम नवांश कहते हैं प्रत्येक नवांश ३०° अंश २०′ कला का होता है इस प्रकार हम एक राशि के ३०° मानते हैं।

जब ग्रह मेष राशि में प्रवेश करता है तो प्रथम मेष नवांश में ही रहता है वह तेजी कारक पूर्ण योग बनाता है द्वितीय वृषभ नवांश होता यह भी तेजी कारक है इसी प्रकार क्रम से तृतीय मिथुन मंदी कारक, चतुर्थ कर्क मंदी-कारक पंचम सिंह तेजी कारक, षष्ठम कन्या मंदी कारक, सप्तम तुला तेजी-कारक, अष्ठम वृश्चिक तेजी कारक, नवम धनु मंदी कारक होता है।

वृषभ राशिगत प्रथम मकर तेजी कारक, द्वितीय कुम्भ तेजी कारक, तृतीय मीन मंदी कारक, चतुर्थ मेष तेजी कारक, पंचम वृषभ तेजी कारक, षष्ठम मिथुन मंदी कारक, सप्तम कर्क तेजी कारक, अष्ठम सिंह तेजी कारक, नवम कन्या मंदी कारक होता है।

मिथुन राशिगत के प्रथम तुला तेजी कारक, द्वितीय वृश्चिक तेजी कारक, तृतीय धनु मंदी कारक, चतुर्थ मकर तेजी कारक, पंचम कुम्भ तेजी कारक, षष्ठम मीन मंदी कारक, सप्तम मेष तेजी कारक, अष्टम वृषभ तेजी कारक, नवम मिथुन मंदी कारक होता है।

कर्क राशि गत के नवांश (१) कर्क तेजी कारक, (२) सिंह तेजी कारक, (३) कन्या मंदी कारक, (४) तुला तेजी कारक, (५) वृश्चिक तेजी कारक, (६) धनु मंदी कारक, (७) मकर तेजी कारक, (८) कुम्भ तेजी कारक, (९) मीन मंदी कारक होता है।

सिंह राशिगत के नवांश (१) मेष तेजीकारक, (२) वृषभ तेजीकारक, (३) मिथुन मंदी कारक, (४) कर्क तेजी कारक, (५) सिंह तेजी कारक, (६) कन्या मंदी कारक, (७) तुला तेजी कारक, (८) वृश्चिक तेजी कारक, (९) धनु मंदी कारक होता है।

कन्या राशिगत के नवांश (१) मकर तेजीकारक, (२) कुम्भ तेजीकारक, (३) मीन मंदी कारक, (४) मेष तेजी कारक, (५) वृषभ तेजी कारक, (६) मिथुन मंदी कारक, (७) कर्क तेजी कारक, (८) सिंह तेजी कारक (९) कन्या मंदी कारक होता है।

तुला राशिगत के नवांश (१) तुला तेजीकारक, (२) वृश्चिक तेजीकारक, (३) धनु मंदी कारक, (४) मकर तेजी कारक, (५) कुम्भ तेजी कारक, (६) मीन मंदी कारक, (७) मेष तेजी कारक, (८) वृषभ तेजी कारक, (९) मिथुन मंदी कारक होता है।

वृश्चिक राशिगत के नवांश (१) कर्क तेजीकारक, (२) सिंह तेजीकारक, (३) कन्या मंदी कारक, (४) तुला तेजी कारक, (५) वृश्चिक तेजी कारक, (६) धनु मंदी कारक, (७) मकर तेजी कारक, (८) कुम्भ तेजी कारक, (९) मीन मंदी कारक होता है।

धनु राशिगत के नवांश (१) मेष तेजी कारक, (२) वृषभ तेजी कारक, ३. मिथुन मंदीकारक, ४. कर्क तेजीकारक, ५. सिंह तेजीकारक, ६. कन्या मंदीकारक, ७. तुला तेजीकारक, ८. वृश्चिक तेजीकारक, ९. धनु मंदीकारक होता है।

मकर राशिगत के नवांश १. मकर तेजीकारक, २. कुम्भ तेजीकारक ३. मीन मंदीकारक, ४. मेष तेजीकारक, ५. वृषभ तेजीकारक, ६. मिथुन मंदीकारक, ७. कर्क तेजीकारक, ८. सिंह तेजीकारक, ९. कन्या मंदीकारक होता है।

कुम्भ राशिगत के नवांश १. तुला तेजीकारक, २. वृश्चिक तेजीकारक ३. धनु मंदीकारक, ४. मकर तेजीकारक, ५. कुम्भ तेजीकारक, ६. मीन मंदीकारक, ७. मेष तेजीकारक, ८. वृषभ तेजीकारक, ९. मिथुन मंदीकारक होता है।

मीन राशिगत के नवांश १. कर्क तेजीकारक, २. सिंह तेजीकारक ३. कन्या मंदीकारक, ४. तुला तेजीकारक, ५. वृश्चिक तेजीकारक, ६. धनु मंदीकारक, ७. मकर तेजीकारक, ८. कुम्भ तेजीकारक, ९. मीन मंदीकारक होता है।

जब ग्रह वक्री या उल्टा चलता है तो राशि व राशि का नवांश भी उल्टा चलेगा—जैसे कर्क राशिगत गुरु वक्री हुआ और कर्क के प्रथम चरण से वक्री हुआ तो समझो कर्क नवांश से वक्री हुआ। कर्क राशि से उल्टा या वक्री चला तो मिथुन राशि के अंतिम नवांश मिथुन पर आएगा।

दृष्टि-योगों का व्यापार पर प्रभाव—

पूर्वोक्त वर्णित दृष्टि योगों का व्यापार पर जो प्रभाव होता है उनका यहां संक्षिप्त उल्लेख कर रहे हैं किस-किस ग्रह के किस-किस दृष्टि योग से किन-किन वस्तुओं पर क्या प्रभाव कितने समय में पड़ता है। यहां यह ध्यान में रखना चाहिये कि जो ग्रह दृष्टि सम्बन्ध बनाते समय सूर्य से आगे हो तो दृष्टि योग होने के बाद अपना प्रभाव दिखाएगा और जो ग्रह सूर्य से पीछे हो तो दृष्टियोग बनाने के पूर्व अपना प्रभाव दिखायगा तथा जो ग्रह जिस राशिगत होकर जौनसा दृष्टि योग बनायगा तो उस राशिगत के जिस नवांश पर होगा उस नवांश के हिसाबसे उस योग का उतना ही फल करेगा जैसे नवे नवांश पर पूर्णफल, अष्टम नवांश पर तिहाई से कुछ अधिक, सप्तम नवांश पर तिहाई, षष्ठम नवांश पर आधे से अधिक, पंचम नवांश से आधा, चतुर्थ नवांश पर चौथाई से अधिक, तृतीय नवांश पर चौथाई तथा द्वितीय नवांश पर चौथाई से आधा एवं प्रथम नवांश पर साधारण फल करता है।

सूर्य का चन्द्र के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव—

सूर्य का चन्द्र के साथ यदि ०° [पूर्णांश] दृष्टि सम्बन्ध हो तो ४ दिन के अन्तर्गत सोना, चांदी, जवाहरात, गिलट, गिलट की बनी हुई वस्तुएं, शहद, द्रव्य, मद्य, दूध, घृत, कांच व कांच का सामान, पेट्रोलियम कं. के शेअर्स, आयल कं. के साधारण शेअर्स, आदि सूर्य व चन्द्र के आधिपत्य की वस्तुओं में पूर्ण तेजी आती है इसके अतिरिक्त इस दृष्टि योग का प्रभाव उन वस्तुओं पर भी पड़ता है जो वस्तुएं उस राशिगत के अन्तर्गत होती हैं जिस राशिगत यह दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो।

सूर्य चन्द्र के साथ यदि १८०° [द्वितीयांश] दृष्टि सम्बन्ध बनाए तो ७ दिन के अन्तर्गत सोना, चांदी, जवाहरात, गिलट, द्रव्य, शहद, दूध, घृत, आदि सूर्य चन्द्र के आधिपत्य की वस्तुओं में मंदी आती है यह मंदी उन वस्तुओं पर भी अपना प्रभाव डालती है जो इस राशिगत हो जिस राशिगत सूर्य व चन्द्र का उक्त दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो।

सूर्य का चन्द्र के साथ १२०° अंश [तृतीयांश] दृष्टि योग बन रहा हो तो सूर्य चन्द्र के अन्तर्गत की वस्तुओं में मंदी ३ दिन के अन्तर्गत आती है यह मंदी द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी से तिहाई होती है तथा इस मंदी का प्रभाव उन राशिगत की वस्तुओं पर भी होता है जिन राशिगत सूर्य व चन्द्र होकर दृष्टि संबंध बना रहे हों।

सूर्य का चन्द्र के साथ ९०° अंश [चतुर्थांश] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो सोना, चांदी, जवाहरात, गिलट आदि वस्तुओं में जो सूर्य व चन्द्र के आधिपत्य में हों ४ दिन में मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश की मंदी से तिहाई से कुछ अधिक की होती है। इस दृष्टि योग का प्रभाव उन वस्तुओं पर भी पड़ता है जो उन राशियों के अन्तर्गत होती हैं जिन राशियों में सूर्य व चन्द्र यह योग बना रहा हो।

सूर्य ७२° अंश [पंचमांश] दृष्टि योग चन्द्र के साथ बनाए तो सूर्य व चन्द्र

तथा उन राशियों के अन्तर्गत की वस्तुओं में, जिन राशियों में दृष्टि योग के समय सूर्य व चन्द्र स्थित हों, २॥ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पूर्णांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी से आधी होती है।

सूर्य का चन्द्र के साथ ६०° अंश [षष्टांश] का दृष्टि योग बनाए तो सूर्य व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में २ दिन के अन्तर्गत पंचमांश की तेजी के बराबर तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव उन राशिओं के अन्तर्गत की वस्तुओं पर भी पड़ता है जिन राशियों पर इस दृष्टि योग के समय सूर्य व चन्द्र होते हैं यह तेजी उन स्थानों से प्रारम्भ होती है जो उस समय के सूर्य की राशि गत हो।

सूर्य का चन्द्र के साथ ४५° अंश [अष्टमांश] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सूर्य व चन्द्र के अन्तर्गत की वस्तुओं में १॥ दिन में मंदी आती है यह मंदी द्वितीयांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी से आधी विचारें इसके अतिरिक्त इस मंदी का प्रभाव उन राशियों के अंतर्गत की वस्तुओं पर भी पड़ता है जिन राशि गत सूर्य व चन्द्र स्थित होकर यह योग बना रहे हों।

सूर्य का चन्द्र के साथ ४०° अंश [नवांश] दृष्टि सम्बन्ध हो तो सोना, चांदी, जवाहारात, शहद, द्रव्य, दूध, दही, घृत, आयल कं० के संचारण शेअर्स आदि सूर्य व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में एक दिन में तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव तृतीयांश की तेजी से आधा होता है तथा उन राशियों के अन्तर्गत की वस्तुओं पर भी पड़ता है जो उन राशिओं के अन्तर्गत होती है उस समय सूर्य चन्द्र जिन जिन राशियों पर रहकर यह योग बना रहा हो।

सूर्य का चन्द्र के साथ ३६° अंश [दशांश] का दृष्टि सम्बन्ध जिस राशि गत बना रहा हो उस राशि गत की तथा सूर्य व चन्द्र के आधिपत्य की वस्तुओं में १दिन में तेजी आती है यह तेजी लगभग नवांश की तेजी के बराबर ही होती है तथा उस राशि गत की वस्तुओं पर भी अपना प्रभाव रखती है जिस राशि गत चन्द्र हो।

सूर्य का चन्द्र से ३०° अंश [द्वादशांश] दृष्टि योग हो रहा हो तो सोना, चांदी, जवाहरात आदि सूर्य व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं पर १ दिन में

तेजी करेगा तथा इस तेजी का प्रभाव जिस राशि गत सूर्य व चन्द्र स्थित होकर यह योग बना रहे हों उस राशि गत की वस्तुओं पर भी पड़ेगा तथा यह तेजी दशांश दृष्टि योग से कुछ ही कम प्रभाव की होगी।

५ सूर्य का चन्द्र के साथ २४° अंश (पञ्चदशांश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सोना, चांदी, जवाहरात, पट्रोलियम के शेअर्स व साधारण आयल क० शेअर्स आदि सूर्य व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में १८ घण्टे में तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचमांश की तेजी के आधे के बराबर होता है तथा यह तेजी उस राशिगत की वस्तुओं पर भी अपना प्रभाव डालेगी जिस राशि गत सूर्य व चन्द्र उक्त योग बना रहे हों।

सूर्य चन्द्र के साथ २२/३०° अंश (षोड़शांश) दृष्टि योग बना रहा हो तो सोना, चांदी, गिलट, घृत, दूध, शहद, आदि सूर्य व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में १५ घण्टे में तेजी आती है तथा इस तेजी का विचार—जिस राशि गत सूर्य चन्द्र यह योग बना रहे हों उस राशि गत की वस्तुओं पर भी करना चाहिये इस तेजी का प्रभाव भी पंचदशांश की तेजी के बराबर ही होता है।

सूर्य का चन्द्र के साथ २०° अंश [अष्टादशांश] दृष्टि योग हो रहा हो तो सूर्य व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में १० घण्टे में मंदी आती हैं तथा उस राशि गत की वस्तुओं में भी इस मंदी का प्रभाव होता है जिस राशि गत सूर्य चन्द्र यह योग बना रहे हों एवं इस मंदी को तृतीयांश की मंदी के आधे के बराबर समझें।

सूर्य का चन्द्र के साथ १८° अंश [विंशांश] दृष्टि योग हो रहा हो तो सोना, चांदी, जवाहरात आदि सूर्य व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं पर ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव उस राशि गत की वस्तुओं पर भी पड़ता है जिस राशि गत उक्त योग बन रहा हो यह तेजी द्वादशांश की तेजी से कुछ कम की होती है।

सूर्य चन्द्र के साथ १५° अंश [चतुर्विंशांश] का दृष्टि सम्बन्ध बना रहा हो तो सोना, चांदी, जवाहरात, द्रव्य आदि सूर्य-चन्द्र के आधिपत्य की वस्तुओं में

6 घण्टे मे मंदी

६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव अष्टादशांश की मंदी से आधा होता है तथा यह मंदी उस राशि गत की वस्तुओं पर भी अपना प्रभाव रखती है जिस राशि गत सूर्य व चन्द्र स्थित होकर उक्त योग बनाते हों।

सूर्य चन्द्र के साथ १२° अंश [त्रिशांश] का दृष्टि योग कर रहा हो तो सोना, चांदी, घृत, शहद आदि सूर्य व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में ४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है। यह तेजी षोड़शांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी की आधी होती है तथा इस तेजी का प्रभाव उन वस्तुओं पर भी पड़ता है जो उस राशि गत होती हैं जिस राशि गत सूर्य चन्द्र, यह योग बना रहे हों।

सूर्य का चन्द्र के साथ ९° अंश [चत्वारिशांश] का दृष्टियोग हो रहा हो तो सोना, चांदी, जवाहरात, द्रव्य, घृत आदि सूर्य व चन्द्र के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में ३ घण्टे में तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव उस राशि गत की वस्तुओं पर भी होता है जिस राशि गत सूर्य, चन्द्र यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों तथा यह तेजी भी त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर की होती है।

सूर्य का चन्द्र के साथ ६° अंश [षष्ठयांश] का दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो सोना, चांदी, जवाहरात, गिल्ट, घृत, शहद, द्रव्य आदि सूर्य व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में २ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव उस राशि गत की वस्तुओं पर भी होता है जिस राशि गत सूर्य चन्द्र स्थित होकर यह दृष्टि योग बना रहे हों तथा यह तेजी भी त्रिशांश दृष्टि योग के बरबर की ही समझें।

सूर्य का चन्द्र के साथ १५०° अंश [द्वादशांश रहित] दृष्टि योग बन रहा हो तो सोना, चांदी, जवाहरात, गिलट, द्रव्य, पेट्रोलियम के शेअर्स व साधारण आयल शेअर्स आदि सूर्य व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश की तेजी तिहाई के बराबर का होता है तथा इस योग के समय सूर्य व चन्द्र जिन राशियों में होते हैं उन राशियों के अन्तर्गत की वस्तुओं पर भी यह तेजी अपना प्रभाव दिखाती है।

सूर्य चन्द्र के साथ १४४° अंश [दशमांश रहित] दृष्टि सम्बन्ध कर

रहा हो तो सोना, चांदी, द्रव्य, जवाहारात, गिलट, शहद, घृत आदि सूर्य व चन्द्र के स्वमित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्दर ही मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयाश का मंदी से तिहाई के बराबर होता है तथा यह मंदी उन वस्तुओं पर भी अपना प्रभाव डालेगी जो उन राशि गत होते हैं जिन राशियों में सूर्य व चन्द्र स्थित होकर उक्त योग बना रहे हों।

सूर्य का चन्द्र के साथ १३५° अंश [अष्टमांश रहित] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सोना, चांदी, द्रव्य, जवाहारात, घृत शहद, गिलट, श्वेत वस्तु आदि सूर्य व चन्द्र के अन्तर्गत की वस्तुओं में ९ दिन के अंतर्गत तेजी आती है यह तेजी द्वादशांश रहित की तेजी की तिहाई से कुछ अधिक के बराबर की होती है इस तेजी का प्रभाव उन वस्तुओं पर भी पड़ता है जो उन राशियों के अंतर्गत होते हैं जिन राशियों पर सूर्य व चंद्र उक्त योग बना रहे हों तथा यह तेजी उन प्रदेशों से सर्व प्रथम चालू होगी जो प्रदेश उस राशि गत के होंगे जिस राशि गत उस समय सूर्य होगा।

सूर्य का मंगल के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

सूर्य का मंगल के साथ पूर्णाश [०° अंश] की दृष्टि सम्बन्ध योग बन रहा हो तो सोना, जवाहरात, गिलट, गिलट का सामान, शहद, चावल, जड़ी-बूटिया, घृत, तिलहन, धातु खनिज उद्योग, मशीनरी, जायदाद, लोहा, ईंट, काफी, चाय आदि सूर्य व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में अति तेजी आती है यह तेजी ४ दिन के अन्तर्गत ही अपना प्रभाव दिखायगी तथा इस तेजी का प्रभाव उन वस्तुओं पर भी पड़ता है जो वस्तुए उक्त राशि गत होती हैं जिस राशि गत सूर्य व मंगल उक्त योग बना रहे हों।

सूर्य का मंगल के साथ द्वितीयांश [१८०° अंश का दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो सोना, जवाहारात, गिलट, मशीनरी, तिलहन, गुड़, शकर, चाय, काफी आदि सूर्य व मंगल के स्वामित्व की वस्तुओं में मंदी ७ दिन के अन्तर्गत आती है इस मंदी का प्रभाव उस राशि गत की वस्तुओं पर भी पड़ता है जिस राशि गत सूर्य व मंगल उक्त योग बना रहे हों।

सूर्य मंगल के साथ तृतीयांश (१२०° अंश) दृष्टि योग बनाए तो सोना, जवाहारात, गुड़, खांड, शक्कर, तिलहन, जड़ी बूटियां आदि सूर्य व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में ३ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई के बराबर की होती है तथा इस मंदी का प्रभाव उस राशिगत की वस्तुओं पर भी पड़ता है जिस राशिगत सूर्य व मंगल स्थित होकर उक्त योग बना रहे हों।

सूर्य का मंगल के साथ चतुर्थांश (९०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सोना, जवाहारात, शहद, गुड़, खांड, जड़ी बूटी, तिलहन, मशीनरी, जायदाद आदि सूर्य व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी से तिहाई से कुछ अधिक की होती है तथा इस मंदी का प्रभाव उन राशियों के अन्तर्गत की वस्तुओं पर भी पड़ता है जिन राशियों में सूर्य व मंगल स्थित होकर उक्त योग को बनाते हैं।

सूर्य मंगल के साथ पञ्चमांश (७२° अंश) दृष्टि योग करे तो सोना, जवाहरात, गुड़, खांड, जड़ी-बूटी, शहद आदि सूर्य व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में २½ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होती है तथा इस तेजी का प्रभाव उन राशियों की वस्तुओं पर भी पड़ता है जिन राशियों में सूर्य व मंगल उक्त योग की रचना कर रहे हों।

सूर्य का मंगल के साथ षष्ठांश (६०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो सोना, गुड़, खांड, शहद, जड़ी-बूटी, तिलहन आदि सूर्य व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में २दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव उन राशियों की वस्तुओं में भी पड़ता है जिन राशियों में सूर्य व मंगल उक्त योग बना रहे हों तथा यह तेजी पञ्चमांश की तेजी के बराबर की होती है।

सूर्य का मंगल के साथ अष्टमांश (४५° अंश) का दृष्टि सम्बन्ध बने तो सूर्य व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में १॥ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है। यह मंदी द्वितीयांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी से आधी की होती है तथा इस मंदी का

प्रभाव उन राशियों की वस्तुओं पर भी पड़ता है जिन राशियों में सूर्य व मंगल भ्रमण करते हुए उक्त योग बनाते हों।

सूर्य का मंगल के साथ नवांश (४०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो तो सूर्य व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी अष्टमांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर की होती है तथा इस तेजी का प्रभाव उन राशियों के अन्तर्गत की वस्तुओं पर भी पड़ता है जिन राशियों में सूर्य व मंगल स्थित होकर उक्त योग की रचना करते हैं।

सूर्य का मंगल के साथ दशांश (३६° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो सूर्य व मंगल के आधिपत्य की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी को नवांश की तेजी के ही बराबर की समझें तथा इस तेजी का प्रभाव उन वस्तुओं पर भी पड़ता है जो वस्तुएं उन राशिगत हों जिन राशि गत सूर्य व मंगल भ्रमण करते हुए उक्त योग बना रहे हों।

सूर्य मंगल के साथ द्वादशांश (३०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध कर रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है तथा उन राशियों की वस्तुओं में भी इस तेजी का प्रभाव होता है जिन राशियों पर स्थित होकर सूर्य व मंगल उक्त योग बना रहे हों। इस तेजी का प्रभाव भी नवांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर ही विचारें।

सूर्य का मंगल के साथ पंचदशांश (२४° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो सूर्य व मंगल के स्वामित्व की वस्तुओं में १८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर की होती है तथा इस तेजी का प्रभाव उन वस्तुओं पर भी होता है जो वस्तुएं उन राशियों के अन्तर्गत होती हैं जिन राशियों पर सूर्य व मंगल उक्त योग को बना रहे हों।

सूर्य का मंगल के साथ षोड़शांश (२२/३०° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो सूर्य व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में १५ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पन्चदशांश की तेजी के बराबर की होती है तथा इस तेजी का प्रभाव उन राशियों के अन्तर्गत की वस्तुओं पर भी पड़ता है जिन राशियों में सूर्य व मंगल स्थित होकर उक्त योग की रचना करते हैं।

सूर्य का मंगल के साथ अष्टादशांश (२०°) अंश दृष्टि योग बन रहा हो तो सूर्य व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव उन वस्तुओं पर भी होता है जो वस्तुएं उन राशि गत होती हैं जिन राशि गत ये दोनों ग्रह उक्त दृष्टि-योग बना रहे हों। यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर होती है।

सूर्य का मंगल के साथ विंशांश (१८° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के अन्तर्गत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी षोड़शांश दृष्टि योग की तिहाई के बराबर की होती है तथा इस तेजी का प्रभाव उन राशिगत की वस्तुओं पर भी होता है जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए उक्त योग को बना रहे हों।

सूर्य का मंगल के साथ चतुर्विंशांश (१५° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो सूर्य व मंगल के स्वामित्व की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी अष्टादशांश दृष्टि योग की मंदी से आधी होती है तथा इस मंदी का प्रभाव उन राशिगत की वस्तुओं पर भी होता है जिन राशिगत सूर्य व मंगल उक्त योग के समय हों।

सूर्य का मंगल के साथ त्रिंशांश (१२° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के अन्तर्गत की वस्तुओं में ४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है। यह तेजी षोड़शांश दृष्टि योग की तेजी से आधी समझें तथा इस तेजी का प्रभाव उन राशिगत की वस्तुओं में भी होता है जिन राशिगत सूर्य व मंगल उक्त दृष्टि सम्बन्ध बनाते समय हों।

सूर्य का मंगल के साथ चत्वारिंशांश (९° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो सूर्य व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में ३ घण्टे के अन्दर ही तेजी आती है यह तेजी भी त्रिंशांश की तेजी के बराबर की होती है तथा इस तेजी का प्रभाव उन राशिगत की वस्तुओं पर भी होता है जिन राशिगत ये दोनों ग्रह यह योग बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों।

सूर्य का मंगल के साथ षष्ठयांश (६° अंश) का दृष्टि-योग हो रहा हो तो सूर्य व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में २ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी भी त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर की ही होती है तथा इस तेजी का प्रभाव उन राशि गत की वस्तुओं पर भी होता है जिस राशि गत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना करते हों।

सूर्य मंगल के साथ द्वादशांश रहित (१५०° अंश) दृष्टि योग कर रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपतित्व का वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी की तिहाई के बराबर की होती है तथा इस तेजी का प्रभाव उन राशिगत की वस्तुओं पर भी होता है जिन राशिगत सूर्य व मंगल भ्रमण करते हुए यह योग बना रहे हों।

सूर्य का मंगल के साथ दशमांश रहित (१४४° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सूर्य व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी-द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी की तिहाई के बराबर की होती है तथा इस मंदी का प्रभाव उन राशियों की वस्तुओं पर भी पड़ता है जिन राशियों पर स्थित रहकर ये दोनों ग्रह उक्त योग की रचना कर रहे हों।

सूर्य का मंगल के साथ अष्ठमांश रहित (१३५° अंश) दृष्टि योग हो तो सूर्य व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी द्वादशांश रहित दृष्टि योग की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक की होती है तथा इस तेजी का प्रभाव उन वस्तुओं पर भी होता है जो वस्तुएं उन राशि-गत होती है जिन राशिगत ये ग्रह स्थित होकर यह योग बना रहे हों।

सूर्य का बुध के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव—

सूर्य का बुध के साथ पूर्णांश (०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सोना, जवाहारात, द्रव्य, गिलट, शहद, जड़ी-बूटियां, गेहूं, चावल, अनाज, खाद्य पदार्थ, सिल्क, सूत, शक्कर, रुई, अर्थ सम्बन्धी सामान आदि सूर्य व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तेजी आती है तथा इस तेजी का प्रभाव उन वस्तुओं पर भी होता है जो वस्तुएं उस राशिगत होती हैं जिस राशिगत सूर्य व बुध इस योग की रचना कर रहे हों एवं यह तेजी ४ दिन के अन्तर्गत ही अपना प्रभाव दिखाती है।

सूर्य का बुध के साथ द्वितीयांश (१८०° अंश) दृष्टि योग बने तो सूर्य व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा उन राशिगत की वस्तुओं में जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों—७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है।

सूर्य का बुध के साथ तृतीयांश (१२०° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की तथा जिन राशि गत सूर्य व बुध यह योग बना रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में ३ दिन के अन्दर ही मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश की मंदी के प्रभाव से तिहाई के बराबर समझें।

सूर्य का बुध के साथ चतुर्थांश (९०° अंश) दृष्टि-योग बन रहा हो तो सूर्य व बुध के स्वामित्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी की तिहाई से कुछ अधिक की होती है।

सूर्य का बुध के साथ पञ्चमांश (७२° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत सूर्य व बुध इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पूर्णांश की तेजी के आधे के बराबर की होती है।

सूर्य का बुध के साथ षष्ठांश (६०° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो सूर्य व बुध के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर की ही होती है।

सूर्य बुध के साथ अष्टमांश (४५° अंश) दृष्टि सम्बन्ध कर रहा हो तो सूर्य व बुध के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों ग्रह यह योग बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १॥ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी द्वितीयांश दृष्टियोग की मंदी के आधे के बराबर होती है।

सूर्य का बुध के साथ नवांश (४०° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो सूर्य व बुध के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशियों में सूर्य, बुध स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशियों के अन्तर्गत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्टांश दृष्टि योग की तेजी का तिहाई के बराबर होता है।

सूर्य का बुध के साथ दशांश (३६° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घन्टे के अन्दर ही तेजी आती है यह तेजी नवांश दृष्टियोग की तेजी के ही बराबर की होती है।

सूर्य का बुध के साथ द्वादशांश (३०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बने तो सूर्य व बुध के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव भी नवांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर ही होता है।

सूर्य बुध के साथ पञ्चदशांश (२४° अंश) दृष्टियोग करे तो सूर्य व बुध के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह यह योग बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १८ घण्टे के अन्तर्गत ही तेजी आती है यह तेजी पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के प्रभाव से आधी के बराबर होती है।

सूर्य का बुध के साथ (२२/३०° अंश) षोड़शांश दृष्टि योग बन जाए तो सूर्य व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग को बनाए उन राशिगत की वस्तुओं में १५ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर ही होता है।

सूर्य का बुध के साथ अष्टादशांश (२०° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो सूर्य व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह

सूर्य का बुध के साथ द्वितीयांश (१८०° अंश) दृष्टि योग बने तो सूर्य व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा उन राशिगत की वस्तुओं में जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों—७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है।

सूर्य का बुध के साथ तृतीयांश (१२०° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की तथा जिन राशि गत सूर्य व बुध यह योग बना रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में ३ दिन के अन्दर ही मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश की मंदी के प्रभाव से तिहाई के बराबर समझें।

सूर्य का बुध के साथ चतुर्थांश (९०° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो सूर्य व बुध के स्वामित्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी की तिहाई से कुछ अधिक की होती है।

सूर्य का बुध के साथ पञ्चमांश (७२° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत सूर्य व बुध इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पूर्णांश- की तेजी के आधे के बराबर की होती है।

सूर्य का बुध के साथ षष्ठांश (६०° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो सूर्य व बुध के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर की ही होती है।

सूर्य बुध के साथ अष्टमांश (४५° अंश) दृष्टि सम्बन्ध कर रहा हो तो सूर्य व बुध के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों ग्रह यह योग बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी द्वितीयांश दृष्टियोग की मंदी के आधे के बराबर होती है।

सूर्य का बुध के साथ नवांश (४०° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो सूर्य व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशियों में सूर्य, बुध स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशियों के अन्तर्गत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्टांश दृष्टि योग की तेजी का तिहाई के बराबर होता है।

सूर्य का बुध के साथ दशांश (३६° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घन्टे के अन्दर ही तेजी आती है यह तेजी नवांश दृष्टियोग की तेजी के ही बराबर की होती है।

सूर्य का बुध के साथ द्वादशांश (३०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बने तो सूर्य व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव भी नवांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर ही होता है।

सूर्य बुध के साथ पञ्चदशांश (२४° अंश) दृष्टियोग करे तो सूर्य व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह यह योग बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १८ घण्टे के अन्तर्गत ही तेजी आती है यह तेजी पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के प्रभाव से आधी के बराबर होती है।

सूर्य का बुध के साथ (२२/३०° अंश) षोड़शांश दृष्टि योग बन जाए तो सूर्य व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग को बनाए उन राशिगत की वस्तुओं में १५ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर ही होता है।

सूर्य का बुध के साथ अष्टादशांश (२०° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो सूर्य व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह

स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्दर ही मंदी आती है यह मन्दी तृतियांश दृष्टि योग की मंदी के आधी के बराबर होती है।

सूर्य बुध के साथ विंशांश (१८° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बनाएं तो इन दोनों ग्रहों के स्वामित्व की वस्तुओं में व उन राशिगत की वस्तुओं में जिन राशिगत सूर्य व बुध इस योग को बना रहे हों तो ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षोडषांश दृष्टियोग की तेजी से तिहाई के बराबर होता है।

सूर्य का बुध के साथ चतुर्विंशांश (१५° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सूर्य व बुध के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा उन राशिगत की वस्तुओं में जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर उक्त दृष्टि सम्बन्ध स्थापित कर रहे हों—६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव अष्टादशांश की मंदी के आधी के बराबर का होता है।

सूर्य का बुध के साथ त्रिंशांश (१२° अंश) दृष्टि सम्बन्ध कर रहा हो तो सूर्य व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं तथा जिन राशिगत ये दोनो ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पंचदशांश की तेजी के आधे के बराबर की होती है।

सूर्य का बुध के साथ चत्वारिंशांश (९° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो तो सूर्य व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिस राशिगत ये दोनों ग्रह यह योग बना रहे हों उस राशिगत की वस्तुओं में ३ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव त्रिंशांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर ही होता है।

सूर्य का बुध के साथ षष्ठ्यांश (६° अंस) दृष्टि योग बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिस राशिगत सूर्य व बुध स्थित होकर यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों उस राशिगत की वस्तुओं में २ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव भी त्रिंशांश दृष्टि योग की तेजी के ही बराबर होता है।

सूर्य बुध के साथ द्वादशांश रहित (१५०° अंश) दृष्टि योग बनाए तो सूर्य व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर अपना प्रभाव प्रकट करती है।

सूर्य का बुध के साथ दशमांश रहित (१४४° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सूर्य व बुध के स्वामित्व की वस्तुओं में तथा जिन राशियों में स्थित होकर ये दोनों ग्रह इस योग की रचना कर रहे हों तो उन राशियों के अन्तर्गत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई के बराबर होता है।

सूर्य का बुध के साथ अष्टमांश (१३५° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी की तिहाई से कुछ अधिक प्रभाव दिखाती है।

सूर्य का गुरु के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव—

सूर्य का गुरु के साथ पूर्णांश (०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सोना, जवाहारात, द्रव्य, गिलट, शहद, वारण्ड्स, जड़ी-बूटियां, टीन, रबर, जस्ता चना, जूट, तम्बाकू, शेयर्स बैंक, बैंकर्स, बीमा कम्पनी, क्लोथ मिल्स, विलासिता की सामग्री आदि सूर्य व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिस राशि में दोनों ग्रह स्थित होकर यह योग बना रहे हों उस राशिगत की वस्तुओं में तेजी आती है यह तेजी ४ दिन में अपना प्रभाव दिखाती है।

सूर्य का गुरु के साथ द्वितीयांश (१८०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो सूर्य व गुरु के आधिपतित्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है।

सूर्य का गुरु के साथ तृतीयांश (१२०° अंश) दृष्टि योग करे तो इन दोनों ग्रह के स्वामित्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत सूर्य व गुरु यह दृष्टि सम्बन्ध स्थापित करे उन राशिगत की वस्तुओं में ३ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई के बराबर होता है।

सूर्य का गुरु के साथ चतुर्थांश (९०° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत सूर्य व गुरु इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी की तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

सूर्य का गुरु के साथ पंचमांश (७२° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो सूर्य व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अन्दर तेजी आती है यह तेजी पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के प्रभाव से आधी के बराबर की होती है।

सूर्य का गुरु के साथ षष्ठांश (६०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध कर रहा हो तो सूर्य व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के ही बराबर होता है।

सूर्य का गुरु के साथ अष्टमांश (४५° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १॥ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर अपना प्रभाव दिखाती है।

सूर्य का गुरु के साथ नवांश (४०° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो सूर्य व गुरु के आधिपत्यत्व तथा उन राशिगत की वस्तुओं में जिन राशिगत ये दोनों

ग्रह इस योग को बना रहे हों—२४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर होता है।

सूर्य का गुरु के साथ दशांश (३६° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग की रचना कर रहे हो उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव नवांश दृष्टि योग की तेजी के ही बराबर का होता है।

सूर्य का गुरु के साथ द्वादशांश (३०° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो सूर्य व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनो ग्रह यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी भी नवांश दृष्टि योग की तेजी के प्रभाव के बराबर ही की होती है।

सूर्य का गुरु के साथ पञ्चदशांश (२४° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर का होता है।

सूर्य का गुरु के साथ षोडशांश (२२।३० °अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो सूर्य व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १५ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पञ्चदशांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के ही बराबर होता है।

सूर्य का गुरु के साथ अष्टादशांश (२०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सूर्य व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव अष्टमांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई के बराबर होता है।

सूर्य का गुरु के साथ विशांश (१८° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बना रहा हो तो सूर्य व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव नवांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर का होता है।

सूर्य का गुरु के साथ चतुर्विशांश (१५° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत सूर्य व गुरु इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत ही मंदी आती है यह मंदी अष्टादशांश दृष्टि योग की मंदी के आधी के बराबर की होती है।

सूर्य का गुरु के साथ त्रिशांश (१२° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो इन दोनों ग्रहों के स्वामित्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनो ग्रह यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों इन राशिगत की वस्तुओं में ४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षोड़शांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर का होता है।

सूर्य का गुरु के साथ चत्वारिंशांश (९° अंश) दृष्टि सम्बन्ध कर रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर होता है।

सूर्य का गुरु के साथ षष्ठयांश (६° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सूर्य व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिस राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव भी त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के ही बराबर होता है।

सूर्य का गुरु के साथ द्वादशांश रहित (१५०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत सूर्य व गुरु यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर अपना प्रभाव दिखाती है।

सूर्य का गुरु के साथ दशमांश रहित (१४४° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो सूर्य व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत में दोनो ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश की मंदी के तिहाई के बराबर होता है।

सूर्य का गुरु के साथ अष्टमांश रहित (१३५° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो सूर्य व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनो ग्रह इस दृष्टि सम्बन्ध की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओ में ९ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि योग की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

सूर्य का शुक्र के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव—

सूर्य का शुक्र के साथ पूर्णांश (०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सोना, जवाहरात, द्रव्य, बाउन्डस, गिलट, गिलट का सामान, शहद, जड़ी, बूटियां, रुई, जूट का सामान, सूत, शक्कर, गेहूं, चावल, चांदी, लेथियन सिल्क, शक्कर कम्पनी के शेयर्स, मिष्ठान्न, मोती, कांच का सामान, पुष्प, तांबा, सुगंधित पदार्थ, शराब, आदि सूर्य व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिस राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर यह दृष्टि योग बना रहे हों उस राशिगत की वस्तुओं में तेजी आती है यह तेजी ४ दिन में अपना प्रभाव दिखाती है।

सूर्य का शुक्र के साथ द्वितीयांश (१८०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो सूर्य व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा उन राशिगत की वस्तुओं में जिन राशिगत ये दोनों ग्रह उक्त योग की रचना कर रहे हों तो ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है।

सूर्य का शुक्र के साथ तृतीयांश (१२०° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की तथा जिन राशि गत सूर्य व शुक्र यह योग बना रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में ३ दिन के अन्दर ही मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश की मंदी के प्रभाव से तिहाई के बराबर समझें।

सूर्य का शुक्र के साथ चतुर्थांश (९०° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो सूर्य व शुक्र के स्वामित्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के ५/८ के बराबर होता है।

सूर्य का शुक्र के साथ पञ्चमांश (७२° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत सूर्य व शुक्र इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पूर्णाश की तेजी के आधे के बराबर की होती है।

सूर्य का शुक्र के साथ षष्ठांश (६०° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो सूर्य व शुक्र के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर की ही होती है।

सूर्य शुक्र के साथ अष्टमांश (४५° अंश) दृष्टि सम्बन्ध कर रहा हो तो सूर्य व शुक्र के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों ग्रह यह योग बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १॥ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी द्वितीयांश दृष्टियोग की मंदी के आधे के बराबर होती है।

सूर्य का शुक्र के साथ नवांश (४०° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो सूर्य व शुक्र के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशियों में सूर्य, शुक्र स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशियों के अन्तर्गत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी से तिहाई के बराबर होता है।

सूर्य का शुक्र के साथ दशांश (३६° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घन्टे के अन्दर ही तेजी आती है यह तेजी नवांश दृष्टियोग की तेजी के ही बराबर की होती है।

सूर्य का शुक्र के साथ द्वादशांश (३०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बने तो सूर्य व शुक्र के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव भी नवांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर ही होता है।

सूर्य शुक्र के साथ पन्चदशांश (२४° अंश) दृष्टियोग करे तो सूर्य व शुक्र के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह यह योग बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १८ घण्टे के अन्तर्गत ही तेजी आती है यह तेजी पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के प्रभाव से आधी के बराबर होती है।

सूर्य का शुक्र के साथ (२२/३१° अंश) षोड़शांश दृष्टि योग बन जाए तो सूर्य व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग को बनाए उन राशिगत की वस्तुओं में १५ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर ही होता है।

सूर्य का शुक्र के साथ अष्टादशांश (२०° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो सूर्य व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्दर ही मंदी आती है यह मन्दी तृतियांश दृष्टि योग की मंदी के आधी के बराबर होती है।

सूर्य शुक्र के साथ विंशांश (१८° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बनाए तो इन दोनों ग्रहों के स्वामित्व के अंतर्गत की वस्तुओं में व उन राशिगत की वस्तुओं में जिन राशिगत सूर्य व शुक्र इस योग को बना रहे हैं तो ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी

आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टियोग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

सूर्य का शुक्र के साथ चतुर्विंशांश (१५° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सूर्य व शुक्र के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा उन राशिगत की वस्तुओं में जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर उक्त दृष्टि सम्बन्ध स्थापित कर रहे हों—६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती हैं इस मंदी का प्रभाव अष्टादशांश की मंदी के आधी के बराबर का होता है।

सूर्य का शुक्र के साथ त्रिंशांश (१२° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो सूर्य व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हो उन राशिगत की वस्तुओं में ४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी षोड़शांश की तेजी के आधे के बराबर की होती है।

सूर्य शुक्र के साथ चत्वारिंशांश (९° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बनाए तो सूर्य व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिस राशिगत ये दोनो ग्रह स्थित होकर यह योग बना रहे हों उस राशिगत की वस्तुओं में ३ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव त्रिंशांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर ही होता है।

सूर्य का शुक्र के साथ षष्ठयांश (६° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो इन दोनों ग्रह के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिस राशिगत सूर्य व शुक्र स्थित होकर यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों उस राशिगत की वस्तुओं में २ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव भी त्रिंशांश दृष्टि योग की तेजी के ही बराबर होता है।

सूर्य शुक्र के साथ द्वादशांश रहित (१५०° अंश) दृष्टि योग बनाए तो सूर्य व शुक्र के आधिपत्यत्व की वतुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर अपना प्रभाव प्रकट करती है।

सूर्य का शुक्र के साथ दशमांश रहित (१४४° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा

हो तो सूर्य व शुक्र के स्वामित्व की वस्तुओं में तथा जिन राशियों में स्थित होकर ये दोनों ग्रह इस योग की रचना कर रहे हों तो उन राशियों के अन्तर्गत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई के बराबर होता है।

सूर्य का शुक्र के साथ अष्टमांश रहित(१३५° अंश)दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनोंग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी द्वादशांश रहित दृष्टि योग की तेजी की तिहाई से कुछ अधिक प्रभाव दिखाती है।

सूर्य का शनि के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव—

सूर्य का शनि के साथ पूर्णांश (० °अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सोना, जवाहारात, द्रव्य,बाउण्ड्स, शहद, जड़ी-बूटियां, गिलट, गिलट की बनी वस्तुएं, कोयला, सीमेन्ट, सीमेन्ट का सामान, तांबा, अलसी, तिलहन, काली मिर्च, काली सरसों, मीठा तेल, मूँगफली, ऊन, लोहा, जूट, जौ, जूते, रील, कृषि सम्बन्धि यन्त्र, संगमरमर, वनस्पति आदि सूर्य व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिस राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों तो उस राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत अति तेजी आती है।

सूर्य का शनि के साथ द्वितीयांश (१८०° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो सूर्य व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा उन राशिगत की वस्तुओं में जिन राशिगत ये दोनोंग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों—७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है।

सूर्य का शनि के साथ तृतीयांश [१२०° अंश] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस दृष्टि सम्बन्ध की रचना कर रहे हैं उन राशिगत की वस्तुओं में ३ दिन में मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई के बराबर होता है।

सूर्य का शनि के साथ चतुर्थांश (६०° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत सूर्य व शनि इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी की तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

सूर्य का शनि के साथ पंचमांश(७२° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो सूर्य व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अन्दर तेजी आती है यह तेजी पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के प्रभाव से आधी के बराबर की होती है।

सूर्य शनि के साथ षष्ठांश (६०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध कर रहा हो तो सूर्य व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के ही बराबर होता है।

सूर्य का शनि के साथ अष्टमांश (४५° अंश)दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १॥ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर अपना प्रभाव दिखाती है।

सूर्य का शनि के साथ नवांश (४०° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो सूर्य व शनि के आधिपत्यत्व तथा उन राशिगत की वस्तुओं में जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों--२४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर होता है।

सूर्य का शनि के साथ दशांश (३६ अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्त-

र्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव नवांश दृष्टि योग की तेजी के ही बराबर का होता है।

सूर्य का शनि के साथ द्वादशांश (३०° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो सूर्य व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी भी नवांश दृष्टि योग की तेजी के प्रभाव के बराबर ही की होती है।

सूर्य का शनि के साथ पञ्चदशांश (२४° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पञ्चदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर का होता है।

सूर्य का शनि के साथ षोड़शांश (२२।३० °अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो सूर्य व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १५ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पञ्चदशांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के ही बराबर होता है।

सूर्य का शनि के साथ अष्टादशांश (२०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सूर्य व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर होता है।

सूर्य का शनि के साथ विंशांश (१८° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सूर्य व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

सूर्य का शनि के साथ चतुर्विशांश (१५° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत सूर्य व शनि इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत ही मंदी आती है यह मंदी अष्टादशांश दृष्टि योग की मंदी के आधी के बराबर की होती है।

सूर्य का शनि के साथ त्रिशांश (१२° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो इन दोनों ग्रहों के स्वामित्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों ग्रह यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षोडशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर का होता है।

सूर्य का शनि के साथ चत्वारिंशांश (९° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर होता है।

सूर्य का शनि के साथ षष्ठ्यांश (६° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सूर्य व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिस राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव भी त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के ही बराबर होता है।

सूर्य का शनि के साथ द्वादशांश रहित (१५०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत सूर्य व शनि स्थित होकर यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर अपना प्रभाव दिखाती है।

सूर्य का शनि के साथ दशमांश रहित (१४४° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो सूर्य व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों

ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश की मंदी के तिहाई के बराबर होता है।

सूर्य का शनि के साथ अष्टमांश रहित (१३५° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो सूर्य व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस दृष्टि सम्बन्ध की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि योग की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

सूर्य का राहु के साथ दृष्टि सम्बन्ध—

सूर्य का राहु के साथ पूर्णांश (०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सोना, जवाहरात, द्रव्य, गिलट, गिलट का बनी वस्तुयें, शहद, जड़ीबूटियां, बिजली का सामान व यन्त्र आदि सूर्य व राहु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिस राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर यह दृष्टियोग बना रहे हों उस राशिगत की वस्तुओं में तेजी आती है यह तेजी ४ दिन में अपना प्रभाव दिखाती है।

सूर्य का राहु के साथ द्वितीयांश (१८०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो सूर्य व राहु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा उन राशिगत की वस्तुओं में जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों तो ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है।

सूर्य राहु के साथ तृतीयांश (१२०° अंश) दृष्टि योग करे तो इन दोनों ग्रहों के स्वामित्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत सूर्य व राहु यह दृष्टि सम्बन्ध स्थापित करें उन राशिगत की वस्तुओं में ३ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई के बराबर होता है।

सूर्य का राहु के साथ चतुर्थांश (९०° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो सूर्य व राहु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत सूर्य व राहु स्थित होकर यह योग बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में मंदी आती है यह मंदी द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई से कुछ अधिक का अपना प्रभाव ४ दिन में प्रकट करती है।

सूर्य का राहु के साथ पञ्चमांश (७२° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत सूर्य व राहु स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पूर्णांश की तेजी के आधे के बराबर की होती है।

सूर्य का राहु के साथ षष्ठांश (६०° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो सूर्य व राहु के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर की ही होती है।

सूर्य राहु के साथ अष्टमांश (४५° अंश) दृष्टि सम्बन्ध कर रहा हो तो सूर्य व राहु के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बनाते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में १॥ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी द्वितीयांश दृष्टियोग की मंदी के आधे के बराबर होती है।

सूर्य का राहु के साथ नवांश (४०° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो सूर्य व राहु के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशियों में सूर्य, राहु स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशियों के अन्तर्गत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्टांश दृष्टि यो की तेजी से तिहाई के बराबर होता है।

सूर्य का राहु के साथ दशांश (३६° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो त इन दोनों ग्रहों के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इ योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घन्टे के अन्दर ही मं आती है यह मंदी नवांश दृष्टियोग की मंदी के ही बराबर की होती है।

सूर्य का राहु के साथ द्वादशांश (३०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बने तो सू व राहु के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित हो इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव भी नवांश दृष्टि योग की तेजी के बरा ही होता है।

सूर्य राहु के साथ पञ्चदशांश (२४° अंश) दृष्टियोग करे तो सूर्य व राहु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह यह योग बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १८ घण्टे के अन्तर्गत ही तेजी आती है यह तेजी षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के प्रभाव से तिहाई के बराबर होती है।

सूर्य का राहु के साथ षोड्शांश (२२/३०° अंश) दृष्टि योग बन जाए तो सूर्य व राहु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग को बनाएं उन राशिगत की वस्तुओं में १५ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर ही होता है।

सूर्य का राहु के साथ अष्टादशांश (२०° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो सूर्य व राहु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्दर ही मंदी आती है यह मन्दी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधी के बराबर होती है।

सूर्य राहु के साथ विशांश (१८° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बनाए तो इन दोनों ग्रहों के स्वामित्व के अंतर्गत की वस्तुओं में व उन राशिगत की वस्तुओं में जिन राशिगत सूर्य व राहु इस योग को बना रहे हों तो ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टियोग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

सूर्य का राहु के साथ चतुर्विशांश (१५° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सूर्य व राहु के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा उन राशिगत की वस्तुओं में जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर उक्त दृष्टि सम्बन्ध स्थापित कर रहे हों—६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव अष्टादशांश की मंदी के आधे के बराबर होता है।

सूर्य का राहु के साथ त्रिशांश (१२° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो सूर्य व राहु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह

इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पंचदशांश की तेजी के आधे के बराबर की होती है।

सूर्य राहु के साथ चत्वारिशांश (९° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बनाए तो सूर्य व राहु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिस राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर यह योग बना रहे हों उस राशिगत की वस्तुओं में ३ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर ही होता है।

सूर्य का राहु के साथ षष्ठयांश (६° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो इन दोनों ग्रह के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिस राशिगत सूर्य व राहु स्थित होकर यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों उस राशिगत की वस्तुओं में २ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव भी त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के ही बराबर होता है।

सूर्य राहु के साथ द्वादशांश रहित (१५०° अंश) दृष्टि योग बनाए तो सूर्य व राहु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर अपना प्रभाव प्रकट करती है।

सूर्य का राहु के साथ दशमांश रहित (१४४° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सूर्य व राहु के स्वामित्व की वस्तुओं में तथा जिन राशियों में स्थित होकर ये दोनों ग्रह इस योग की रचना कर रहे हों तो उन राशियों के अन्तर्गत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई के बराबर होता है।

सूर्य का राहु के साथ अष्टमांश रहित (१३५° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनोंग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी की तिहाई से कुछ अधिक प्रभाव दिखाती है।

सूर्य का केतु के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव—

सूर्य का केतु के साथ पूर्णांश (०°अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो, कोयला, सीमेन्ट, सीमेन्ट का सामान, तांबा, अलसी, तिलहन, कालीमिर्च कालीसरसों, मीठा तेल, मूंगफली, ऊन, लोहा, जूट, जौ, जूते, रील, कृषि सम्बन्धि यन्त्र, संगमरमर, वनस्पति आदि सूर्य व केतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिस राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों तो उस राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

सूर्य का केतु के साथ द्वितीयांश (१८०° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो सूर्य व केतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा उन राशिगत की वस्तुओं में जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों—७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है।

सूर्य का केतु के साथ तृतीयांश [१२०° अंश] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस दृष्टि सम्बन्ध की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३ दिन में मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई के बराबर होता है।

सूर्य का केतु के साथ चतुर्थांश (९०° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो सूर्य व केतु के स्वामित्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के ५/८ के बराबर होती है।

सूर्य का केतु के साथ पञ्चमांश (७२° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की तथा जिन राशि गत सूर्य व केतु यह योग बना रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में २।। दिन के अन्दर ही तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की मंदी के प्रभाव को आधे के बराबर समझें।

सूर्य केतु के साथ षष्ठांश (६०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध कर रहा हो तो सूर्य व केतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत भ्रमण करते हुए ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के ही बराबर होता है।

सूर्य का केतु के साथ अष्टमांश (४५° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग की रचना करते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में १॥ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर अपना प्रभाव रखती है।

सूर्य का केतु के साथ नवांश (४०° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो सूर्य व केतु के आधिपत्यत्व तथा उन राशिगत की वस्तुओं में जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बनाते समय हों—२४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर होता है।

सूर्य का केतु के साथ दशांश (३६° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव नवांश दृष्टि योग की तेजी के ही तुल्य होता है।

सूर्य का केतु के साथ द्वादशांश (३०° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो सूर्य व केतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी भी नवांश दृष्टि योग की तेजी के प्रभाव के बराबर की होती है।

सूर्य का केतु के साथ पञ्चदशांश (२४° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १८ घण्टे में

अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पन्चदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर का होता है।

सूर्य का केतु के साथ षोड़शांश (२२।३० ° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो सूर्य व केतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १५घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पन्चदशांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के ही समान होता है।

सूर्य का केतु के साथ अष्टादशांश (२० ° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सूर्य व केतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

सूर्य का केतु के साथ विशांश(१८ ° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सूर्य व केतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बनाते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

सूर्य का केतु के साथ चतुर्विंशांश (१५° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत सूर्य व केतु भ्रमण करते हुए इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी अष्टादशांश दृष्टि योग की मंदी के आधी के तुल्य होती है।

सूर्य का केतु के साथ त्रिंशांश (१२° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो इन दोनों ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों ग्रह यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षोड़शांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर का होता है।

सूर्य का केतु के साथ चत्वारिंशांश (६° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर होता है।

सूर्य का केतु के साथ षष्ठयांश (६° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सूर्य व केतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिस राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव भी त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के ही बराबर होता है।

सूर्य का केतु के साथ द्वादशांश रहित (१५०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत सूर्य व केतु स्थित होकर यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर अपना प्रभाव दिखाती है।

सूर्य का केतु के साथ दशमांश रहित (१४४° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो सूर्य व केतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश की मंदी के के बराबर होता है।

सूर्य का केतु के साथ अष्टमांश रहित (१३५° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो सूर्य व केतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस दृष्टि सम्बन्ध की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि योग की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

सूर्य का हर्शल के साथ दृष्टि सम्बन्ध—

सूर्य का हर्शल के साथ पूर्णांश (०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सोना, जवाहरात, गिलट, गिलट की बनी वस्तुयें, शहद, जड़ीबूटियां, बाउण्ड्स मिट्टी की वस्तु, कार मोटर, बस, ट्राम्बे, ज्वाइण्ट कम्पनी, फिल्म-उद्योग, एलमूनियम-उद्योग आदि सूर्य व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में जिस राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर यह दृष्टियोग बना रहे हों उस राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

सूर्य का हर्शल के साथ द्वितीयांश (१८०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो सूर्य व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा उन राशिगत की वस्तुओं में जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों तो ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है।

सूर्य हर्शल के साथ तृतीयांश (१२०° अंश) दृष्टि योग करे तो इन दोनों ग्रहों के स्वामित्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत सूर्य व हर्शल यह दृष्टि सम्बन्ध स्थापित करें उन राशिगत की वस्तुओं में ३ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई के बराबर होता है।

सूर्य का हर्शल के साथ चतुर्थांश (९०° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो सूर्य व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत सूर्य व हर्शल स्थित होकर यह योग बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई से कुछ अधिक अपना प्रभाव प्रकट करती है।

सूर्य का हर्शल के साथ पंचमांश (७२° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो सूर्य व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अन्दर तेजी आती है यह तेजी पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के प्रभाव से आधी के बराबर की होती है।

सूर्य का हर्शल के साथ षष्ठांश (६०° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत सूर्य व हर्शल इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पञ्चमांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर होता है।

सूर्य हर्शल के साथ षष्टमांश (४५° अंश) दृष्टि सम्बन्ध कर रहा हो तो सूर्य व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बनाते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में १॥ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी द्वितीयांश दृष्टियोग की मंदी के आधे के बराबर होती है।

सूर्य का हर्शल के साथ नवांश(४०° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो सूर्य व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशियों में सूर्य, हर्शल स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशियों के अन्तर्गत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी से तिहाई के बराबर होता है।

सूर्य का हर्शल के साथ दशांश (३६° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घन्टे के अन्दर ही तेजी आती है यह तेजी नवांश दृष्टियोग की तेजी के ही बराबर की होती है।

सूर्य का हर्शल के साथ द्वादशांश (३०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बने तो सूर्य व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव भी नवांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर ही होता है।

सूर्य हर्शल के साथ पन्चदशांश (२४° अंश) दृष्टियोग करे तो सूर्य व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत परिभ्रमण करते हुए ये दोनों ग्रह यह योग बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १८ घण्टे के अन्तर्गत ही तेजी आती है यह तेजी षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के प्रभाव से आधे के बराबर होती है।

सूर्य का हर्शल के साथ षोड़शांश (२२/३०° अंश) दृष्टि योग बन जाए तो सूर्य व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग को बनाएं उन राशिगत की वस्तुओं में १५ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर ही होता है।

सूर्य का हर्शल के साथ अष्टादशांश (२०° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो सूर्य व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्दर ही मंदी आती है यह मन्दी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधी के बराबर होती है।

सूर्य हर्शल के साथ विंशांश (१८° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बनाए तो इन दोनों ग्रहों के स्वामित्व के अंतर्गत की वस्तुओं में व उन राशिगत की वस्तुओं में जिन राशिगत सूर्य व हर्शल इस योग को बना रहे हों ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टियोग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

सूर्य का हर्शल के साथ चतुर्विंशांश (१५° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सूर्य व हर्शल के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा उन राशिगत की वस्तुओं में जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर उक्त दृष्टि सम्बन्ध स्थापित कर रहे हों—६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव अष्टादशांश की मंदी के आधे के बराबर होता है।

सूर्य का हर्शल के साथ त्रिंशांश (१२° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो सूर्य व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हो उन राशिगत की वस्तुओं में ४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पंचदशांश की तेजी के आधे के बराबर की होती है।

सूर्य हर्शल के साथ चत्वारिंशांश (९° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बनाए तो सूर्य व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिस राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए यह योग बना रहे हों उस राशिगत की वस्तुओं में ३ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव त्रिंशांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर ही होता है।

सूर्य का हर्शल के साथ षष्ठयांश (६° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो इन दोनों ग्रह के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिस राशिगत सूर्य व हर्शल स्थित होकर यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों उस राशिगत की वस्तुओं में २ घण्टे के

अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव भी त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के ही बराबर होता है।

सूर्य हर्शल के साथ द्वादशांश रहित (१५०°अंश) दृष्टि योग बनाए तो सूर्य व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर अपना प्रभाव प्रकट करती है।

सूर्य का हर्शल के साथ दशमांश रहित (१४४°अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सूर्य व हर्शल के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशियों में स्थित होकर ये दोनों ग्रह इस योग की रचना कर रहे हों तो उन राशियों के अन्तर्गत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई के बराबर होता है।

सूर्य का हर्शल के साथ अष्टमांश रहित (१३५°अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी द्वादशांश रहित दृष्टि योग की तेजी की तिहाई से कुछ अधिक प्रभाव दिखाती है।

सूर्य का नेपच्यून के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव—

सूर्य का नेपच्यून के साथ पूर्णांश (०°अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सोना, जवाहरात, द्रव्य, शहद बाउण्ड्स, जड़ी-बूटियां, चावल, गुड़, चमड़ा, खांड, पीलेयस, हलदी, चने की दाल, आयुध, मोहर, कपूर, मैन्थल, सोप, हाथीदांत आदि सूर्य व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिस राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उस राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

सूर्य का नेपच्यून के साथ द्वितीयांश (१८०°अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो

सूर्य व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा उन राशिगत की वस्तुओं में जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है।

सूर्य का नेपच्यून के साथ तृतीयांश [१२०° अंश] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस दृष्टि सम्बन्ध की रचना करते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३ दिन में मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई के बराबर होता है।

सूर्य का नेपच्यून के साथ चतुर्थांश (९०° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो सूर्य व नेपच्यून के स्वामित्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई से कुछ अधिक के बराबर होती है।

सूर्य का नेपच्यून के साथ पञ्चमांश (७२° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की तथा जिन राशिगत सूर्य व नेपच्यून यह योग बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अन्दर ही तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के प्रभाव से आधे के बराबर समझें।

सूर्य का नेपच्यून के साथ षष्ठांश (६०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध कर रहा हो तो सूर्य व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत भ्रमण करते हुए ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के ही बराबर होता है।

सूर्य का नेपच्यून के साथ अष्टमांश (४५° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो सूर्य व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १॥ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर होती है।

सूर्य का नेपच्यून के साथ नवांश(४०° अंश)दृष्टि योग हो रहा हो तो सूर्य व नेपच्यून के आधिपत्यत्व तथा उन राशिगत की वस्तुओं में जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते समय हों—२४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर होता है।

सूर्य का नेपच्यून के साथ दशांश (३६° अंश)दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग की रचना करते समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव नवांश दृष्टि योग की तेजी के ही तुल्य होता है।

सूर्य नेपच्यून के साथ द्वादशांश (३०° अंश)दृष्टि योग बना रहा हो तो सूर्य व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह यह दृष्टि सम्बन्ध बनाते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी भी नवांश दृष्टि योग की तेजी के प्रभाव के बराबर की होती है।

सूर्य नेपच्यून के साथ पञ्चदशांश (२४° अंश) दृष्टि योग बना रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पञ्चमांश दृष्टियोग की तेजी के आधे के बराबर का होता है।

सूर्य का नेपच्यून के साथ षोड़शांश (२२।३० °अंश)दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो सूर्य व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १५घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पञ्चदशांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के ही समान होता है।

सूर्य नेपच्यून के साथ अष्टादशांश (२०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बना रहा हो तो सूर्य व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग की रचना करते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के

अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

सूर्य का नेपच्यून के साथ विशांश(१८° अंश)दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सूर्य व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बनाते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

सूर्य का नेपच्यून के साथ चतुर्विशांश(१५° अंश)दृष्टि योग हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत सूर्य व नेपच्यून भ्रमण करते हुए इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी अष्टादशांश दृष्टि योग की मंदी के आधी के तुल्य होती है।

सूर्य का नेपच्यून के साथ त्रिशांश(१२° अंश)दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो इन दोनों ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों ग्रह यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षोड़शांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

सूर्य का नेपच्यून के साथ चत्वारिशांश (९° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर होता है।

सूर्य का नेपच्यून के साथ षष्ठयांश(६° अंश)दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सूर्य व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिस राशिगत ये दोनो ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हो उन राशिगत की वस्तुओं में २ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव भी त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के ही बराबर होता है।

सूर्य का नेपच्यून के साथ द्वादशांश रहित (१५० ° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत सूर्य व नेपच्यून स्थित होकर यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर अपना प्रभाव दिखाती है।

सूर्य का नेपच्यून के साथ दशमांश रहित (१४४° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो सूर्य व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश की मंदी के के बराबर होता है।

सूर्य का नेपच्यून के साथ अष्टमांश रहित (१३५° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो सूर्य व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस दृष्टि सम्बन्ध की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि योग की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

सूर्य का प्लूटो के साथ दृष्टि सम्बन्ध—

सूर्य का प्लूटो के साथ पूर्णांश (०° अंश दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सोना, जवाहरात, गिलट, गिलट की बनी वस्तुयें, शहद, जड़ी बूटियां, बाउण्ड्स जस्ता, टीन, रबर, यूरेनियम, सीसा, रांग, एलम्यूनियम, कागज, सन, सूतली, बान आदि सूर्य व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिस राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर यह दृष्टियोग बना रहे हों उस राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

सूर्य का प्लूटो के साथ द्वितीयांश (१८०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो सूर्य व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा उन राशिगत की वस्तुओं में जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है।

सूर्य प्लूटो के साथ तृतीयांश (१२० ° अंश) दृष्टि योग करे तो इन दोनों ग्रहों के स्वामित्व के अंतर्गत की वस्तुओं में व जिन राशिगत सूर्य व प्लूटो यह दृष्टि सम्बन्ध स्थापित करें उन राशिगत की वस्तुओं में ३ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई के तुल्य होता है।

सूर्य का प्लूटो के साथ चतुर्थांश (९० ° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो सूर्य व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत सूर्य व प्लूटो स्थित होकर यह योग बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई से कुछ अधिक अपना प्रभाव प्रकट करती है।

सूर्य का प्लूटो के साथ पंचमांश (७२ ° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो सूर्य व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अन्दर तेजी आती है यह तेजी पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के प्रभाव से आधी के बराबर की होती है।

सूर्य का प्लूटो के साथ षष्ठांश (६० ° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत सूर्य व प्लूटो इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पञ्चमांश दृष्टि योग की तेजी के तुल्य होता है।

सूर्य का प्लूटो के साथ अष्टमांश (४५ ° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग की रचना करते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में १॥ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर अपना प्रभाव रखती है।

सूर्य का प्लूटो के साथ नवांश (४० ° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत सूर्य व प्लूटो स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी की तिहाई के बराबर होती है।

सूर्य का प्लूटो के साथ दशांश (३६° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घन्टे के अन्दर ही तेजी आती है यह तेजी नवांश दृष्टियोग की तेजी के समान प्रभाववाली होती है।

सूर्य का प्लूटो के साथ द्वादशांश (३०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बने तो सूर्य व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टेके अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव भी नवांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर ही होता है।

सूर्य प्लूटो के साथ पञ्चदशांश (२४° अंश) दृष्टियोग करे तो सूर्य व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत परिभ्रमण करते हुए ये दोनों ग्रह यह योग बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १८ घण्टे के अन्तर्गत ही तेजी आती है यह तेजी षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के प्रभाव से आधे के बराबर होती है।

सूर्य का प्लूटो के साथ षोड़शांश (२२/३०° अंश) दृष्टि योग बन जाए तो सूर्य व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग को बनाए उन राशिगत की वस्तुओं में १५ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के समान ही होता है।

सूर्य का प्लूटो के साथ अष्टादशांश (२०° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो सूर्य व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्दर ही मंदी आती है यह मन्दी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधी के बराबर होती है।

सूर्य प्लूटो के साथ विंशांश (१८° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बनाए तो इन दोनों ग्रहों के स्वामित्व के अंतर्गत की वस्तुओं में व उन राशिगत की वस्तुओं में जिन राशिगत सूर्य व हर्शल इस योग को बना रहे हों ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी

आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टियोग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

सूर्य का प्लूटो के साथ चतुर्विंशांश (१५° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सूर्य व प्लूटो के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा उन राशिगत की वस्तुओं में जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर उक्त दृष्टि सम्बन्ध स्थापित कर रहे हों—६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव अष्टादशांश की मंदी के आधे के बराबर होता है।

सूर्य का प्लूटो के साथ त्रिशांश (१२° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो सूर्य व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हो उन राशिगत की वस्तुओं में ४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पंचदशांश की तेजी के आधे के बराबर की होती है।

सूर्य प्लूटो के साथ चत्वारिशांश (९° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बनाए तो सूर्य व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिस राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए यह योग बना रहे हों उस राशिगत की वस्तुओं में ३ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर ही होता है।

सूर्य का प्लूटो के साथ षष्ठ्यांश (६° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो इन दोनों ग्रह के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिस राशिगत सूर्य व प्लूटो स्थित होकर यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों उस राशिगत की वस्तुओं में २ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव भी त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के ही बराबर होता है।

सूर्य प्लूटो के साथ द्वादशांश रहित (१५०° अंश) दृष्टि योग बनाए तो सूर्य व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर अपना प्रभाव प्रकट करती है।

सूर्य का प्लूटो के साथ दशमांश रहित (१४४° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सूर्य व प्लूटो के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशियों में स्थित होकर ये दोनों ग्रह इस योग की रचना कर रहे हों तो उन राशियों के अन्तर्गत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई के बराबर होता है।

सूर्य का प्लूटो के साथ अष्टमांश रहित (१३५° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी द्वादशांश रहित दृष्टि योग की तेजी की तिहाई से कुछ अधिक प्रभाव दिखाती है।

सूचना:—

उपरोक्त सूर्य का अन्य ग्रहों से दृष्टि सम्बन्ध विचार दिया जा चुका है जिसमें उसका प्रभाव व समय भी स्पष्ट है। यहां यह ध्यान रखने योग विषय है कि सूर्य तेजी कारक ग्रह है उसका जब किसी तेजी कारक ग्रह से कोई तेजी कारक दृष्टि सम्बन्ध बनेगा तो वह तेजी कारक ग्रह जितना बलवान् होगा उतना ही प्रभावशाली योग तेजी कारक बनेगा और जब उस तेजी कारक ग्रह से मंदी कारक योग बनेगा तो उतना ही कम मंदी कारक योगहोगा इसी प्रकार ही सूर्य का किसी मंदी कारक ग्रह से कोई मंदी कारक दृष्टि योग बनेगा तो सूर्य तेजी कारक ग्रह होने से साधारण मंदी ही बताएगा और उसी ग्रह से तेजी कारक दृष्टि योग बने तो साधारण तेजी बताएगा।

उपरोक्त दृष्टि योगों में हमने तेजी व मंदी ही लिखी है उसको पूर्णांश व द्वितीयांश दृष्टि सम्बन्ध को आधार मानकर उसका मूल्यांकन करलें।

चन्द्र का सूर्य के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव—

चन्द्र का सूर्य के साथ पूर्णांश (०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सोना, चांदी, जवाहरात, गिलट, गिलट की बनी हुई वस्तुएं, शहद, द्रव्य, मद्य,

दूध, घृत, कांच व कांच का सामान चांवल, पैट्रोलियम कं० के शेअर्स, आयल कं० के साधारण शेअर्स आदि चन्द्र व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिस राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उस राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

चन्द्र का सूर्य के साथ द्वितीयांश(१८०°अंश)दृष्टि योग बन रहा हो तो चन्द्र व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा उस राशिगत की वस्तुओं में जिस राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है।

चन्द्र का सूर्य के साथ तृतीयांश [१२०°अंश] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस दृष्टि सम्बन्ध की रचना करते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३ दिन में मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई के बराबर होता है।

चन्द्र का सूर्य के साथ चतुर्थांश (९०° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो चन्द्र व सूर्य के स्वामित्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई से कुछ अधिक के बराबर होती है।

चन्द्र का सूर्य के साथ पञ्चमांश (७२° अंश)दृष्टि योग हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की तथा जिन राशिगत चन्द्र व सूर्य यह योग बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २।। दिन के अन्दर ही तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के प्रभाव से आधे के बराबर समझें।

चन्द्र का सूर्य के साथ षष्ठांश (६०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध कर रहा हो तो चन्द्र व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत भ्रमण करते हुए ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २ दिन के

अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के ही तुल्य होता है।

चन्द्र का सूर्य के साथ अष्टमांश (४५° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो चन्द्र व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११। दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर होती है।

चन्द्र का सूर्य के साथ नवांश(४०° अंश)दृष्टि योग हो रहा हो तो चन्द्र व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा उन राशिगत की वस्तुओं में जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते समय हों-२४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर होता है।

चन्द्र का सूर्य के साथ दशांश (३६° अंश)दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग की रचना करते समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव नवांश दृष्टि योग की तेजी के ही तुल्य होता है।

चन्द्र सूर्य के साथ द्वादशांश (३०° अंश) दृष्टि योग बना रहा हो तो चन्द्र व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह यह दृष्टि सम्बन्ध बनाते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी भी नवांश दृष्टि योग की तेजी के प्रभाव के समान ही होती है।

चन्द्र सूर्य के साथ पञ्चदशांश (२४° अंश) दृष्टि योग बना रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पञ्चमांश दृष्टियोग की तेजी के आधे के तुल्य होता है।

चन्द्र का सूर्य के साथ षोड़शांश (२२।३०° अंश)दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो चन्द्र व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों

ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १५घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पञ्चदशांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के ही समान होता है।

चन्द्र सूर्य के साथ अष्टादशांश (२०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बना रहा हो तो चन्द्र व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग की रचना करते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

चन्द्र का सूर्य के साथ विंशांश(१८° अंश)दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चन्द्र व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बनाते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

चन्द्र का सूर्य के साथ चतुर्विंशांश(१५° अंश)दृष्टि योग हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत चन्द्र व सूर्य भ्रमण करते हुए इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी अष्टादशांश दृष्टि योग की मंदी के आधी के तुल्य होती है।

चन्द्र का सूर्य के साथ त्रिंशांश (१२° अंश)दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो इन दोनों ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों ग्रह यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षोडशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

चन्द्र का सूर्य के साथ चत्वारिंशांश (९° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव त्रिंशांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर होता है।

चन्द्र का सूर्य के साथ षष्ठयांश(६०° अंश)दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चन्द्र व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिस राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव भी त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के ही बराबर होता है।

चन्द्र का सूर्य के साथ द्वादशांश रहित(१५०° अंश)दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत चन्द्र व सूर्य स्थित होकर यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर अपना प्रभाव दिखाती है।

चन्द्र का सूर्य के साथ दशमांश रहित (१४४° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो चन्द्र व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टियोग की मंदी के बराबर होता है।

चन्द्र का सूर्य के साथ अष्टमांश रहित (१३५° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो चन्द्र व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस दृष्टि सम्बन्ध की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि योग की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक होता है।

चन्द्र का मंगल के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव—

चन्द्र का मंगल के साथ पूर्णांश (०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चांदी, पेट्रोलियम के शेयर्स, जौ, साधारण आयल शेयर्स, द्रव्य, शराब, मछली, कांच व कांच का सामान, दूध, घृत, सोना, चांवल, तिलहन, रेलवे शेयर्स धातु खनिज उद्योग, मशीनरी, लोहा, ईंट, काफी, चाय आदि चन्द्र व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिस राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर यह दृष्टि-योग बना रहे हों उस राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

चन्द्र का मंगल के साथ द्वितीयांश (१८०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो चन्द्र व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा उन राशिगत की वस्तुओं में जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है।

चन्द्र मंगल के साथ तृतीयांश (१२०° अंश) दृष्टि योग करे तो इन दोनों ग्रहों के स्वामित्व के अंतर्गत की वस्तुओं में व जिन राशिगत चन्द्र व मंगल यह दृष्टि सम्बन्ध स्थापित करें उन राशिगत की वस्तुओं में ३ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई के तुल्य होता है।

चन्द्र का मंगल के साथ चतुर्थांश (९०° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो चन्द्र व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत चन्द्र व मंगल स्थित होकर यह योग बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई से कुछ अधिक अपना प्रभाव प्रकट करती है।

चन्द्र का मंगल के साथ पंचमांश (७२° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो चन्द्र व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २।। दिन के अन्दर तेजी आती है यह तेजी पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के प्रभाव से आधी के बराबर की होती है।

चन्द्र का मंगल के साथ षष्ठांश (६०° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत चन्द्र व मंगल इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पञ्चमांश दृष्टि योग की तेजी के तुल्य होता है।

चन्द्र का मंगल के साथ अष्टमांश (४५° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग की रचना करते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में १।। दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर अपना प्रभाव रखती है।

चन्द्र का मंगल के साथ नवांश (४०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत चन्द्र व मंगल स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी की तिहाई के बराबर होती है।

चन्द्र का मंगल के साथ दशांश (३६° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घन्टे के अन्दर ही तेजी आती है यह तेजी नवांश दृष्टियोग की तेजी के समान प्रभाव रखती है।

चन्द्र का मंगल के साथ द्वादशांश (३०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बने तो चंद्र व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव भी नवांश दृष्टि योग की तेजी के समान ही होता है।

चंद्र का मंगल के साथ पञ्चदशांश (२४° अंश) दृष्टि योग हो तो चंद्र व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत परिभ्रमण करते हुए ये दोनों ग्रह यह योग बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १८ घण्टे के अन्तर्गत ही तेजी आती है यह तेजी षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के प्रभाव से आधे के बराबर होती है।

चंद्र का मंगल के साथ षोड़शांश (२२/३०° अंश) दृष्टि योग बन जाए तो चंद्र व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग को बनाएं उन राशिगत की वस्तुओं में १५ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के समान ही होता है।

चंद्र का मंगल के साथ अष्टादशांश (२०° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो चंद्र व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में

१० घण्टे के अन्दर ही मंदी आती है यह मन्दी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधी के बराबर होती है।

चन्द्र मंगल के साथ विंशांश (१८° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बनाए तो इन दोनों ग्रहों के स्वामित्व के अंतर्गत की वस्तुओं में व उन राशिगत की वस्तुओं में जिन राशिगत चंद्र व मंगल इस योग को बना रहे हों ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टियोग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

चंद्र का मंगल के साथ चतुर्विंशांश (१५° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चंद्र व मंगल के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा उन राशिगत की वस्तुओं में जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर उक्त दृष्टि सम्बन्ध स्थापित कर रहे हों—६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव अष्टादशांश की मंदी के आधे के बराबर होता है।

चंद्र का मंगल के साथ त्रिंशांश (१२° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो चंद्र व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पंचदशांश की तेजी के आधे के बराबर की होती है।

चंद्र मंगल के साथ चत्वारिंशांश (९° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बनाए तो चंद्र व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिस राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए यह योग बना रहे हों उस राशिगत की वस्तुओं में ३ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव त्रिंशांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर ही होता है।

चंद्र का मंगल के साथ षष्ठयांश (६° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो इन दोनों ग्रह के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिस राशिगत चंद्र व मंगल स्थित होकर यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों उस राशिगत की वस्तुओं में २ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव भी त्रिंशांश दृष्टि योग की तेजी के ही बराबर होता है।

चंद्र मंगल के साथ द्वादशांश रहित (१५० °अंश) दृष्टि योग बनाए तो चांद व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य अपना प्रभाव प्रकट करती है।

चंद्र का मंगलके साथ दशमांश रहित (१४४ °अंश) दृष्टि सम्बन्ध बनरहा हो तो चंद्र व मंगल के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशियों में स्थित होकर ये दोनों ग्रह इस योग की रचना कर रहे हों तो उन राशियों के अन्तर्गत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई के बराबर होता है।

चंद्र का मंगल के साथ अष्टमांश रहित (१३५° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी द्वादशांश रहित दृष्टि योग की तेजी की तिहाई से कुछ अधिक प्रभाव दिखाती है।

चन्द्र का बुध के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव----

चन्द्र का बुध के साथ पूर्णांश (० °अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चांदी, पेट्रोलियम के शेयर्स, जौ, साधारण आयल कंपनी के शेयर्स, द्रव्य, शराब मछली, कांच व कांच का सामान दूध, घृत, गेंहूं, चांवल, अनाज, खाद्य पदार्थ सिल्क, सूत, शकर, रुई, तांबा आदि चन्द्र व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिस राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उस राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

चन्द्र का बुध के साथ द्वितीयांश (१८० °अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो चन्द्र व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा उस राशिगत की वस्तुओं में जिस राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है।

चन्द्र का बुध के साथ तृतीयांश [१२०° अंश] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस दृष्टि सम्बन्ध की रचना करते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३ दिन में मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई के बराबर होता है।

चन्द्र का बुध के साथ चतुर्थांश (९०° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो चन्द्र व बुध के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इसयोग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई से कुछ अधिक के बराबर होती है।

चन्द्र का बुध के साथ पञ्चमांश (७२° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की तथा जिन राशिगत चन्द्र व बुध यह योग बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अन्दर ही तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के प्रभाव से आधे के बराबर समझें।

चन्द्र का बुध के साथ षष्ठांश (६०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध कर रहा हो तो चन्द्र व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत भ्रमण करते हुए ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के ही तुल्य होता है।

चन्द्र का बुध के साथ अष्टमांश (४५° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो चन्द्र व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १॥ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर होती है।

चन्द्र का बुध के साथ नवांश(४०° अंश)दृष्टि योग हो रहा हो तो चन्द्र व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा उन राशिगत की वस्तुओं में जिन

राशिगत ये ग्रह इस योग को बनते समय हों-२४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है, इस तेजी का प्रभाव पञ्चमांशदृष्टि योग की तेजी के बराबर होता है।

चन्द्र का बुध के साथ दशांश (३६° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग की रचना करते समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव नवांश दृष्टि योग की तेजी के ही तुल्य होता है।

चन्द्र बुध के साथ द्वादशांश (३०° अंश) दृष्टि योग बना रहा हो तो चन्द्र व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह यह दृष्टि सम्बन्ध बनाते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी भी नवांश दृष्टि योग की तेजी के प्रभाव के समान ही होती है।

चन्द्र बुध के साथ पञ्चदशांश (२४° अंश) दृष्टि योग बना रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्ठांश दृष्टियोग की तेजी के तुल्य होता है।

चन्द्र का बुध के साथ षोड़शांश (२२।३० °अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो चन्द्र व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १५ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पञ्चदशांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के ही समान होता है।

चन्द्र के बुध साथ अष्टादशांश (२०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बना रहा हो तो चन्द्र व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग की रचना करते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के

अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

चन्द्र का बुध के साथ विशांश(१८° अंश)दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चन्द्र व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बनाते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

चन्द्र का बुध के साथ चतुर्विशांश(१५° अंश)दृष्टि योग हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत चन्द्र व बुध भ्रमण करते हुए इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी अष्टादशांश दृष्टि योग की मंदी के आधों के तुल्य होती है।

चन्द्र का बुध के साथ त्रिशांश (१२° अंश)दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो इन दोनों ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों ग्रह यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांशदृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

चन्द्र का बुध के साथ चत्वारिंशांश (९° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर होता है।

चन्द्र का बुध के साथ षष्ठयांश(६° अंश)दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चन्द्र व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिस राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव भी त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के ही बराबर होता है।

चन्द्र का बुध के साथ द्वादशांश रहित (१५०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत चन्द्र व बुध भ्रमण करते हुए यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है; यह तेजी पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर अपना प्रभाव दिखाती है।

चन्द्र का बुध के साथ दशमांश रहित (१४४° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो चन्द्र व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टियोग की मंदी के बराबर होता है।

चन्द्र का बुध के साथ अष्टमांश रहित (१३५° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो चन्द्र व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस दृष्टि सम्बन्ध की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि योग की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक होता है।

चन्द्र का गुरु के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव—

चन्द्र का गुरु के साथ पूर्णांश (०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चांदी, पेट्रोलियम के शेयर्स, जौ, साधारण आयल शेयर्स, द्रव्य, शराब, मछली, कांच व कांच का सामान, टीन, रबड़, जस्ता, चना, जूट, तम्बाकू, शेयर्स बैंक, बैंकर्स व बीमा कम्पनी, क्लोथ मिल्स, विलासता की सामग्री आदि चन्द्र व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिस राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर यह दृष्टि योग बना रहे हों उस राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

चन्द्र का गुरु के साथ द्वितीयांश (१८०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो चन्द्र व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा उन राशिगत की वस्तुओं

में जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग की रचना करते समय हों ७ दिन के अन्तर्गत अति मंदी आती है।

चन्द्र गुरु के साथ तृतीयांश (१२० °अंश) दृष्टि योग करे तो इन दोनों ग्रहों के स्वामित्व के अंतर्गत की वस्तुओं में व जिन राशिगत चन्द्र व गुरु यह दृष्टि सम्बन्ध स्थापित करें उन राशिगत की वस्तुओं में ३ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई के तुल्य होता है।

चन्द्र का गुरु के साथ चतुर्थांश (९० ° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो चन्द्र व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत चन्द्र व गुरु भ्रमण करते हुए यह योग बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई से कुछ अधिक अपना प्रभाव प्रकट करती है।

चन्द्र का गुरु के साथ पंचमांश (७२ ° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो चन्द्र व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अन्दर तेजी आती है यह तेजी पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के प्रभाव से आधी के बराबर की होती है।

चन्द्र का गुरु के साथ षष्ठांश (६० ° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत चन्द्र व गुरु इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पञ्चमांश दृष्टि योग की तेजी के तुल्य होता है।

चन्द्र का गुरु के साथ अष्टमांश (४५ ° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग की रचना करते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में १॥ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर अपना प्रभाव रखती है।

चन्द्र का गुरु के साथ नवांश (४०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत चन्द्र व गुरु भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी की तिहाई के बराबर होती है।

चन्द्र का गुरु के साथ दशांश (३६° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घन्टे के अन्दर ही तेजी आती है यह तेजी नवांश दृष्टियोग की तेजी के समान प्रभाव रखती है।

चन्द्र का गुरु के साथ द्वादशांश (३०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बने तो चंद्र व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव भी नवांश दृष्टि योग की तेजी के समान ही होता है।

चंद्र का गुरु के साथ पञ्चदशांश (२४° अंश) दृष्टि योग हो तो चंद्र व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत परिभ्रमण करते हुए ये दोनों ग्रह यह योग बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १८ घण्टे के अन्तर्गत ही तेजी आती है यह तेजी पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के प्रभाव से आधे के बराबर होती है।

चंद्र का गुरु के साथ षोड़शांश (२२/३०° अंश) दृष्टि योग बन जाए तो चंद्र व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बनाएं उन राशिगत की वस्तुओं में १५ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के समान ही होता है।

चंद्र का गुरु के साथ अष्टादशांश (२०° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो चंद्र व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में

१० घण्टे के अन्दर ही मंदी आती है यह मन्दी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधी के बराबर होती है।

चन्द्र गुरु के साथ विंशांश (१८° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बनाए तो इन दोनों ग्रहों के स्वामित्व के अंतर्गत की वस्तुओं में व उन राशिगत की वस्तुओं में जिन राशिगत चंद्र व गुरु इस योग को बना रहे हों ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टियोग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

चंद्र का गुरु के साथ चतुर्विंशांश (१५° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चंद्र व गुरु के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा उन राशिगत की वस्तुओं में जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर उक्त दृष्टि सम्बन्ध स्थापित कर रहे हों—६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव अष्टादशांश की मंदी के आधे के बराबर होता है।

चंद्र का गुरु के साथ त्रिंशांश (१२° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो चंद्र व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी षोड़शांश की तेजी के आधे के बराबर की होती है।

चंद्र गुरु के साथ चत्वारिंशांश (९° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बनाए तो चंद्र व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिस राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए यह योग बना रहे हों उस राशिगत की वस्तुओं में ३ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव त्रिंशांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर ही होता है।

चंद्र का गुरु के साथ षष्ठ्यांश (६° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिस राशिगत चंद्र व गुरु स्थित होकर यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों उस राशिगत की वस्तुओं में २ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव भी त्रिंशांश दृष्टि योग की तेजी के ही बराबर होता है।

चंद्र गुरु के साथ द्वादशांश रहित (१५० °अंश) दृष्टि योग बनाए तो चंद्र व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य अपना प्रभाव प्रकट करती है।

चंद्र का गुरु के साथ दशमांश रहित (१४४ °अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चंद्र व गुरु के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशियों में स्थित होकर ये दोनों ग्रह इस योग की रचना कर रहे हों तो उन राशियों के अन्तर्गत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के बराबर होता है।

चंद्र का गुरु के साथ अष्टमांश रहित (१३५ °अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी द्वादशांश रहित दृष्टि योग की तेजी की तिहाई से कुछ अधिक प्रभाव दिखाती है।

चन्द्र का शुक्र के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव—

चन्द्र का शुक्र के साथ पूर्णांश (० °अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चांदी, पेट्रोलियम के शेयर्स, होटल, जौ, साधारण प्रायस कंपनी के शेयर्स, द्रव्य, मछली, कांच व कांच का सामान रुई, जूट, जूट का सामान, सूत, शक्कर, गेहूं, चांवल, लेशियन सिल्क, शक्कर कम्पनी के शेयर्स, मिष्टान्न, मोती कांच–उद्योग, पुष्प, सुगंधित पदार्थ, आदि चन्द्र व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिस राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उस राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

चन्द्र का शुक्र के साथ द्वितीयांश (१८० °अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो चन्द्र व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा उस राशिगत की वस्तुओं में जिस राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है।

चन्द्र का शुक्र के साथ तृतीयांश [१२०° अंश] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस दृष्टि सम्बन्ध की रचना करते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३ दिन में मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई के बराबर होता है।

चन्द्र का शुक्र के साथ चतुर्थांश (९०° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो चन्द्र व शुक्र के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इसयोग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई से कुछ अधिक के बराबर होती है।

चन्द्र का शुक्र के साथ पञ्चमांश (७२° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की तथा जिन राशिगत चन्द्र व शुक्र यह योग बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अन्दर ही तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के प्रभाव से आधे के बराबर समझें।

चन्द्र का शुक्र के साथ षष्ठांश (६०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध कर रहा हो तो चन्द्र व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत भ्रमण करते हुए ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के ही तुल्य होता है।

चन्द्र का शुक्र के साथ अष्टमांश (४५° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो चन्द्र व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १॥ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर होती है।

चन्द्र का शुक्र के साथ नवांश(४०° अंश)दृष्टि योग हो रहा हो तो चन्द्र व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा उन राशिगत की वस्तुओं में जिन

राशिगत ये ग्रह इस योग को बनते समय हों-२४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर होता है।

चन्द्र का शुक्र के साथ दशांश (३६° अंश)दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग की रचना करते समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव नवांश दृष्टि योग की तेजी के ही तुल्य होता है।

चन्द्र शुक्र के साथ द्वादशांश (३०° अंश) दृष्टि योग बना रहा हो तो चन्द्र व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह यह दृष्टि सम्बन्ध बनाते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी भी नवांश दृष्टि योग की तेजी के प्रभाव के समान ही होती है।

चन्द्र शुक्र के साथ पञ्चदशांश (२४° अंश) दृष्टि योग बना रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पञ्चमांश दृष्टियोग की तेजी के आधे के तुल्य होता है।

चन्द्र का शुक्र के साथ षोड़शांश (२२।३०°अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो चन्द्र व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १५ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पञ्चदशांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के ही समान होता है।

चन्द्र शुक्र के साथ अष्टादशांश (२०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बना रहा हो तो चन्द्र व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग की रचना करते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के

अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

चन्द्र का शुक्र के साथ विशांश(१८° अंश)दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चन्द्र व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बनाते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

चन्द्र का शुक्र के साथ चतुर्विशांश(१५° अंश)दृष्टि योग हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत चन्द्र व शुक्र भ्रमण करते हुए इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी अष्टादशांश दृष्टि योग की मंदी के आधी के तुल्य होती है।

चन्द्र का शुक्र के साथ त्रिंशांश (१२° अंश)दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो इन दोनों ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों ग्रह यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

चन्द्र का शुक्र के साथ चत्वारिंशांश (९° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव त्रिंशांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर होता है।

चन्द्र का शुक्र के साथ षष्ठयांश(६° अंश)दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चन्द्र व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिस राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं मे २घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव भी त्रिंशांश दृष्टि योग की तेजी के ही बराबर होता है।

चन्द्र का शुक्र के साथ द्वादशांश रहित (१५०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत चन्द्र व शुक्र भ्रमण करते हुए यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर अपना प्रभाव दिखाती है।

चन्द्र का शुक्र के साथ दशमांश रहित (१४४° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो चन्द्र व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टियोग की मंदी के बराबर होता है।

चन्द्र का शुक्र के साथ अष्टमांश रहित (१३५° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो चन्द्र व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस दृष्टि सम्बन्ध की रचना करते हुए हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि योग की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक होता है।

चन्द्र का शनि के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव—

चन्द्र का शनि के साथ पूर्णांश (०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चांदी, पेट्रोलियम के शेअर्स, जो, आयल कम्पनीज के साधारण शेअर्स, मछली, कांच व कांच का सामान, दूध घृत, कोयला, सीमेण्ट, सीमेण्ट का सामान, तांबा, अलसी, तिलहन, कालीमिर्च, मीठातेल, मूंगफली, ऊन, लोहा, जूट, जूते, रोल, कृषि सम्बन्धी यन्त्र, संगमरमर, वनिस्पत आदि चन्द्र व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिस राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर यह दृष्टि योग बना रहे हों उस राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

चन्द्र का शनि के साथ द्वितीयांश (१८०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो चन्द्र व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा उन राशिगत की वस्तुओं

में जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग की रचना करते समय हों ७ दिन के अन्तर्गत मति मंदी आती है।

चन्द्र शनि के साथ तृतीयांश (१२० "अंश) दृष्टि योग करे तो इन दोनों ग्रहों केस्वामित्व के अंतर्गत की वस्तुओं में व जिन राशिगत चन्द्र व शनि यह दृष्टि सम्बन्ध स्थापित करें उन राशिगत की वस्तुओं में ३दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई के तुल्य होता है।

चन्द्र का शनि के साथ चतुर्थांश(९० " अंश)दृष्टि योग हो रहा हो तो चन्द्र व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत चन्द्र व शनि भ्रमण करते हुए यह योग बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई से कुछ अधिक अपना प्रभाव प्रकट करती है।

चन्द्र का शनि के साथ पंचमांश(७२ "अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो चन्द्र व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥दिन के अन्दर तेजी आती है यह तेजी पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के प्रभाव से आधी के बराबर की होती है।

चन्द्र का शनि के साथ षष्ठांश (६० " अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत चन्द्र व शनि इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पञ्चमांश दृष्टि योग की तेजी के तुल्य होता है।

चन्द्र का शनि के साथ अष्टमांश (४५ " अंश)दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग की रचना करते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में १॥ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर अपना प्रभाव रखती है।

चन्द्र का शनि के साथ नवांश (४०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत चन्द्र व शनि भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पंचमांश दृष्टि योग की तेजी की तिहाई के बराबर होती है।

चन्द्र का शनि के साथ दशांश (३६° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घन्टे के अन्दर ही तेजी आती है यह तेजी नवांश दृष्टियोग की तेजी के समान प्रभाव रखती है।

चन्द्र का शनि के साथ द्वादशांश (३०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बने तो चंद्र व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव भी नवांश दृष्टि योग की तेजी के समान ही होता है।

चंद्र का शनि के साथ पञ्चदशांश (२४° अंश) दृष्टि योग हो तो चंद्र व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत परिभ्रमण करते हुए ये दोनों ग्रह यह योग बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १८ घण्टे के अन्तर्गत ही तेजी आती है यह तेजी पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के प्रभाव से आधे के बराबर होती है।

चंद्र का शनि के साथ षोडशांश (२२/३०° अंश) दृष्टि योग बन जाए तो चंद्र व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बनाएं उन राशिगत की वस्तुओं में १५ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के समान ही होता है।

चंद्र का शनि के साथ अष्टादशांश (२०° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो चंद्र व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में

१० घण्टे के अन्दर ही मंदी आती है यह मन्दी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधी के बराबर होती है।

चन्द्र का शनि के साथ विंशांश (१८° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बने तो इन दोनों ग्रहों के स्वामित्व के अंतर्गत की वस्तुओं में व उन राशिगत की वस्तुओं में जिन राशिगत चंद्र व शनि इस योग को बना रहे हों ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टियोग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

चंद्र का शनि के साथ चतुर्विंशांश (१५° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चंद्र व शनि के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा उन राशिगत की वस्तुओं में जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर उक्त दृष्टि सम्बन्ध स्थापित कर रहे हों—६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव अष्टादशांश की मंदी के आधे के बराबर होता है।

चंद्र का शनि के साथ त्रिंशांश (१२° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो चंद्र व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी षोडशांश की तेजी के आधे के बराबर की होती है।

चंद्र का शनि के साथ चत्वारिंशांश (९° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बने तो चंद्र व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिस राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए यह योग बना रहे हों उस राशिगत की वस्तुओं में ३ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव त्रिंशांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर ही होता है।

चंद्र का गुरु के साथ षष्ठयांश (६° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिस राशिगत चंद्र व शनि स्थित होकर यह दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों उस राशिगत की वस्तुओं में २ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव भी त्रिंशांश दृष्टि योग की तेजी के ही बराबर होती है।

चंद्र का शनि के साथ द्वादशांश रहित (१५०° अंश) दृष्टि योग बने तो चंद्र व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य अपना प्रभाव प्रकट करती है।

चंद्र का शनि के साथ दशमांश रहित (१४४° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चंद्र व शनि के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशियों में स्थित होकर ये दोनों ग्रह इस योग की रचना कर रहे हों तो उन राशियों के अन्तर्गत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के बराबर होता है।

चंद्र का शनि के साथ अष्टमांश रहित (१३५° अंश) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में तेजी आती है यह तेजी दशमांश रहित दृष्टि योग की तेजी की तिहाई से कुछ अधिक प्रभाव दिखाती है।

चन्द्र का राहु अथवा केतु के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव——

चन्द्र का राहु अथवा केतु के साथ पूर्णांश (०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चन्द्र व राहु अथवा केतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओंमें तथा जिस राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

चन्द्र का राहु अथवा केतुके साथ द्वितीयांश (१८०° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो चांदी, पेट्रोलियम के शेअर्स, साधारण आयल कंपनी के शेअर्स, कांच व कांच का सामान बिजली का सामान, यन्त्र आदि चन्द्र व राहु अथवा केतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा उस राशिगत की वस्तुओं में जिस राशिगत ये दोनों ग्रह स्थित होकर इस योग कीरचना कर रहे हों तो ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है।

चन्द्र का राहु अथवा केतु के साथ तृतीयांश [१२०° अंश] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में व जिन राशिगत ये दोनों इस दृष्टि सम्बन्ध की रचना करते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३ दिन में मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई के बराबर होता है।

चन्द्र का राहु अथवा केतु के साथ चतुर्थांश (९०° अंश) दृष्टि योग बन रहा हो तो चन्द्र व राहु अथवा केतु के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई से कुछ अधिक के बराबर होती है।

चन्द्र का राहु अथवा केतु के साथ पञ्चमांश (७२° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की तथा जिन राशिगत चन्द्र व राहु अथवा केतु यह योग बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अन्दर ही तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के प्रभाव से आधे के बराबर समझें।

चन्द्र का राहु अथवा केतु के साथ षष्ठांश (६०° अंश) दृष्टि सम्बन्ध कर रहा हो तो चन्द्र व राहु अथवा केतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत भ्रमण करते हुए ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के ही तुल्य होता है।

चन्द्र का राहु अथवा केतु के साथ अष्टमांश (४५° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो चन्द्र व राहु अथवा केतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १॥ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर होती है।

चन्द्र का राहु अथवा केतु के साथ नवांश (४०° अंश) दृष्टि योग हो रहा हो तो चन्द्र व राहु अथवा केतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा उन राशि-

गत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्ठांश दृष्टी सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के बराबर होता है।

चन्द्र का राहु अथवा केतु के साथ दशांश (३६°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो चन्द्र व राहु अथवा केतु के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत यह योग बनाने वाले ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव नवांश दृष्टि योग की तेजी के तुल्य होता है।

चन्द्र का राहु अथवा केतु के साथ द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो चन्द्र व राहु अथवा केतु के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये दृष्टाव द्वय ग्रह इस योग की रचना जिन राशि गत कर रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव दशांश दृष्टि योग की तेजी के समान ही होता है।

चन्द्र का राहु अथवा केतु के साथ पंच दशांश (२४°) दृष्टि योग बन रहा हो तो चन्द्र व राहु अथवा केतु के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत यह योग बनाते समय ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में १८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

चन्द्र का राहु अथवा केतु के साथ षोडशांश (२२/३०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चन्द्र व राहु अथवा केतु के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत चन्द्र व राहु अथवा केतु भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में १५ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पंच दशांश की तेजी के तुल्य अपना प्रभाव रखती है।

चन्द्र का राहु अथवा केतु के साथ अष्ठदशांश (२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो चन्द्र व राहु अथवा केतु के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं

में तथा जिन राशि गत यह योग बनाने वाले ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर की होती है।

चन्द्र का राहु अथवा केतु के साथ विंशांश (१८°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चन्द्र व राहु अथवा केतु के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत इस योग की रचना के समय ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है।

चन्द्र का राहु अथवा केतु के साथ चतुर्विंशांश (१५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो चन्द्र व राहु अथवा केतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये ग्रह जिन राशि गत भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होती है।

चन्द्र का राहु अथवा केतु के साथ त्रिंशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत चन्द्र व राहु अथवा केतु भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में ४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

चन्द्र का राहु अथवा केतु के साथ चत्वारिंशांश (९°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो चन्द्र व राहु अथवा केतु के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी त्रिंशांश दृष्टि योग की तेजी के समान ही अपना प्रभाव रखती है।

चन्द्र का राहु अथवा केतु के साथ षष्ठ्यांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध बनता हो तो चन्द्र व राहु अथवा केतु के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि

गत ये ग्रह इस योग के बनाते समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव भी त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के समान ही होता है।

चन्द्र का राहु अथवा केतु के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो चन्द्र व राहु अथवा केतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर होता है।

चन्द्र का राहु अथवा केतु के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चन्द्र व राहु अथवा केतु के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव प्रकट करती है।

चन्द्र का राहु अथवा केतु के साथ अष्ठमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो चन्द्र व राहु अथवा केतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत चन्द्र व राहु अथवा केतु के भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

चन्द्र का हर्शल के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव—

जब चन्द्र का हर्शल के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चन्द्र व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में जैसे चांदी, पेट्रोलियम के शेयर्स, आयल कम्पनीज के साधारण शेयर्स, द्रव्य, मछली, कांच व कांच का समान, बिजली, टेलीग्राम, मिट्टी का समान, वायरलेस, कार, मोटर, बस, गवर्नमेण्ट, पेपर, फिल्म उद्योग, एलमिनियम उद्योग, आदि तथा जिन जिन

राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

चन्द्र का हर्शल के साथ द्वितीयांश (१८० °) दृष्टि योग हो रहा हो तो चन्द्र व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है।

चन्द्र का हर्शल के साथ तृतीयांश (१२० °) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो चन्द्र व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत चन्द्र व हर्शल भ्रमण करते हुए यह योग बना रहे हों उन रशिगत की वस्तुओं में ३ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है उस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के तिहाई के तुल्य होता है।

चन्द्र का हर्शल के साथ चतुर्थांश (९० °) दृष्टि योग बन जाय तो चन्द्र व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वतुओं में ४ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

चन्द्र का हर्शल के साथ पंचमांश (७२ °) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है।

चन्द्र का हर्शल के साथ षष्ठांश (६० °) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चन्द्र व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाते समय ये दोनों ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन रशिगत की वस्तुओं में २ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के तुल्य ही अपना प्रभाव रखती है।

चन्द्र का हर्शल के साथ षष्ठमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत चन्द्र व हर्शल भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १।। दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्विविमांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर होता है।

चन्द्र का हर्शल के साथ नवांश (४० °) दृष्टि योग बन रहा हो तो चन्द्र व हर्शल के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी षष्ठांश दृष्टियोग की तेजी के तिहाई के तुल्य अपना प्रभाव प्रकट करती है।

चन्द्र का हर्शल के साथ दशांश (३६ °) दृष्टि सम्बन्ध बनजाय तो चन्द्र व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह परिभ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी नवांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तुल्य होती है।

चन्द्र का हर्शल के साथ द्वादशांश (३० °) दृष्टि योग बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत चन्द्र व हर्शल इस योग की रचना बनाते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव भी नवांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के समान ही होता है।

चन्द्र व हर्शल के साथ पंचदशांश (२४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चन्द्र व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा इस योग को बनाते हुए जिन राशिगत ये दोनों ग्रह हों उन राशिगत की वस्तुओं में १८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती हैं इस तेजी का प्रभाव षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

चन्द्र का हर्शल के साथ षोड़शांश (२२/३०°) दृष्टि योग हो रहा हो तो चन्द्र व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत चन्द्र व हर्शल भ्रमण करते हुए यह योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १५ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पंचदशांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के समान ही अपना प्रभाव रखती है।

चन्द्र का हर्शल के साथ अष्टादशांश (२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चन्द्र व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टियोग की मंदी के आधे के बराबर समझना चाहिये।

चन्द्र का हर्शल के साथ विंशांश (१८°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चन्द्र व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टियोग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

चन्द्र का हर्शल के साथ चतुर्विंशांश (१५°) दृष्टियोग बन रहा हो तो चन्द्र व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग बनाते हुए ये दोनों ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मन्दी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे [illegible] होता है।

चन्द्र का हर्शल के साथ त्रिंशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो चन्द्र व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा इस योग को बनाते समय चन्द्र व हर्शल जिन राशिगत हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी षोड़शांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर की होती है।

चन्द्र का हर्शल के साथ चत्वारिंशांश (६°) दृष्टि योग हो रहा हो तो चन्द्र व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव नवांश दृष्टि योग की तेजी के समान होता है।

चन्द्र का हर्शल के साथ षष्ठमांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत चन्द्र व हर्शल इस योग को बनाते समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २ घन्टे के अन्तर्गत त्रिशांश दृष्टि योग के समान तेजी आती है।

चन्द्र का हर्शल के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो चंद्र व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है।

चंद्र का हर्शल के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के स्वामित्व के अंतर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अंतर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही होता है।

चंद्र का हर्शल के साथ अष्टमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो चंद्र व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह यह योग बनाते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक होता है।

चन्द्र का नेपच्यून के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

चंद्र का नेपच्यून के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो चांदी पेट्रोलियम के शेअर्स, जौ, आयल कम्पनी के साधारण शेअर, द्रव्य, मछली, कांच व कांच का सामान, दूध, घृत, चाय, कपास, औषधि, मिष्ठान्न, मत्स्योद्योग, तम्बाकू, सिंडीकेट आदि चंद्र व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते समय ये दोनों ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

चंद्र का नेपच्यून के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है।

चंद्र का नेपच्यून के साथ तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो चन्द्र व नेपच्यून के स्वामित्व के अंतर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३ दिन के अंतर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई के बराबर होता है।

चंद्र का नेपच्यून के साथ चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बंध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा इस योग को बनाते समय जिन राशिगत चंद्र व नेपच्यून हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अंतर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई से कुछ अधिक होता है।

चन्द्र का नेपच्यून के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन रहा हो तो चन्द्र व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सम्बन्ध

तेजी के आधे के तुल्य समझना चाहिये ।

चन्द्र का नेपच्यून के साथ षष्ठांश (६०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चन्द्र व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाते समय ये दोनों ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के तुल्य ही अपना प्रभाव रखती है ।

चन्द्र का नेपच्यून के साथ अष्ठमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत चन्द्र व नेपच्यून भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १।। दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर होता है ।

चन्द्र का नेपच्यून के साथ नवांश(४० °) दृष्टि योग बन रहा हो तो चन्द्र व नेपच्यून के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पंचमांश दृष्टियोग की तेजी के तिहाई के तुल्य अपना प्रभाव प्रकट करती है ।

चन्द्र का नेपच्यून के साथ दशांश (३६ °) दृष्टि सम्बन्ध बनजाय तो चन्द्र व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह परिभ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी नवांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तुल्य होती है ।

चन्द्र का नेपच्यून के साथ द्वादशांश (३० °) दृष्टि योग बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत चन्द्र व नेपच्यून इस योग की रचना बनाते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव भी नवांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के समान ही होता है ।

चन्द्र व नेपच्यून के साथ पंचदशांश (२४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चन्द्र व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा इस योग को बनाते हुए जिन राशिगत ये दोनों ग्रह हों उन राशिगत की वस्तुओं में १८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

चन्द्र का नेपच्यून के साथ षोड़शांश (२२/३०°) दृष्टि योग हो रहा हो तो चन्द्र व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत चन्द्र व हर्शल भ्रमण करते हुए यह योग बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १५ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पंचदशांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के समान ही अपना प्रभाव रखती है।

चन्द्र का नेपच्यून के साथ अष्टादशांश (२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चन्द्र व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह इस योग को बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टियोग की मंदी के आधे के बराबर समझना चाहिये।

चन्द्र का नेपच्यून के साथ विंशांश (१८°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चन्द्र व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टियोग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

चन्द्र का नेपच्यून के साथ चतुर्विंशांश (१५°) दृष्टियोग बन रहा हो तो चन्द्र व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग बनाते हुए ये दोनों ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मन्दी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

चन्द्र का नेपच्यून के साथ त्रिंशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो चन्द्र व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा इस योग को बनाते समय

चन्द्र व नेपच्यून जिन राशिगत हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी षोड़शांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर की होती है।

चन्द्र का नेपच्यून के साथ चत्वारिंशांश (९°) दृष्टि योग हो रहा हो तो चन्द्र व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव त्रिंशांश दृष्टि योग की तेजी के समान होता है।

चन्द्र का नेपच्यून के साथ षष्ठ्यांश(६°)दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिस राशिगत चन्द्र व नेपच्यून इस योग को बनाते समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव भी त्रिंशांश दृष्टि योग की तेजी के समान ही होता है।

चन्द्र का नेपच्यून के साथ द्वादशांश रहित(१५०°)दृष्टि योग बन जाय तो चंद्र व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहें हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है।

चंद्र का नेपच्यून के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के स्वामित्व के अंतर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहें हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अंतर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही होता है।

चंद्र का नेपच्यून के साथ अष्टमांश रहित(१३५°)दृष्टि योग हो रहा हो तो चंद्र व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह यह योग बनाते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अंतर्गत

तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध को तेजी के तिहाई से कुछ अधिक होता है ।

चन्द्र का प्लूटो के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

चंद्र का प्लूटो के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो चांदी पेट्रोलियम के शेयर्स, जौ, आयल कम्पनी के साधारण शेयर, द्रव्य, मछली, कांच व कांच का सामान, जस्ता, टीन, रबड़, यूरेनियम, सीसा, रांगा, एल्म्यूनियम, कागज, सन, सुतली, आदि चंद्र व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते समय ये दोनों ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है ।

चंद्र का प्लूटो के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है।

चंद्र का प्लूटो के साथ तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो चन्द्र व प्लूटो के स्वामित्व के अंतर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३ दिन के अंतर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई के बराबर होता है।

चंद्र का प्लूटो के साथ चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बंध हो रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा इस योग को बनाते समय जिन राशिगत चंद्र व प्लूटो हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अंतर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है ।

चन्द्र का प्लूटो के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन रहा हो तो चन्द्र व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह

भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के आधे के तुल्य होता है।

चन्द्र का प्लूटो के साथ षष्ठांश (६०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चन्द्र व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाते समय ये दोनों ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के तुल्य ही अपना प्रभाव रखती है।

चन्द्र का प्लूटो के साथ अष्टमांश (४५°) दृष्टिसम्बन्ध बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत चन्द्र व प्लूटो भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १॥ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

चन्द्र का प्लूटो के साथ नवांश (४०°) दृष्टि योग बन जाय तो चन्द्र व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि-गत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्ठांश दृष्टी सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के बराबर होता है।

चन्द्र का प्लूटो के साथ दशांश (३६°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो चन्द्र व प्लूटो के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत यह योग बनाने वाले ये दोनों ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव नवांश दृष्टि योग की तेजी के तुल्य होता है।

चन्द्र का प्लूटो के साथ द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो चन्द्र व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये दृष्टा व दृश्य ग्रह इस योग की रचना जिन राशि गत कर रहे हो उन राशि

गत की वस्त्रोंतु में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव दशांश दृष्टि योग की तेजी के समान ही होता है।

चन्द्र का प्लूटो के साथ पंचदशांश (२४°) दृष्टि योग बन रहा हो तो चन्द्र व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाते समय ये दोनों ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में १८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

चन्द्र का प्लूटो के साथ षोडशांश (२२/३०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चन्द्र व प्लूटो के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत चन्द्र व प्लूटो भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में १५ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के तुल्य अपना प्रभाव रखती है।

चन्द्र का प्लूटो के साथ अष्ठदशांश (२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो चन्द्र व प्लूटो के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ये दोनों ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर की होती है।

चन्द्र का प्लूटो के साथ विशांश (१८°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चन्द्र व प्लूटो के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत इस योग की रचना के समय ये दोनों ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है।

चन्द्र का प्लूटो के साथ चतुर्विशांश (१५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो चन्द्र व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये दोनों ग्रह जिन राशि गत भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी अष्टा-दशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होती है।

चन्द्र का प्लूटो के साथ त्रिशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन दोनों ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत चन्द्र व प्लूटो भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में ४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

चन्द्र का प्लूटो के साथ चत्वारिंशांश (९°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो चन्द्र व प्लूटो के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के समान ही अपना प्रभाव रखती है।

चन्द्र का प्लूटो के साथ षष्ठयांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध बनता हो तो चन्द्र व प्लूटो के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत ये दोनों ग्रह इस योग के बनाते समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव भी त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के समान ही होता है।

चन्द्र का प्लूटो के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो चन्द्र व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह दोनों ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर होता है।

चन्द्र का प्लूटो के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो चन्द्र व प्लूटो के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये दोनों ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव प्रकट करती है।

चन्द्र का प्लूटो के साथ अष्ठमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो चन्द्र व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वतुओं में तथा जिन राशिगत चन्द्र व प्लूटो

के भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

सूचनाः—

उपरोक्त चन्द्र का अन्य सभी ग्रहों के साथ दृष्टि-सम्बन्ध हमारे द्वारा वर्णित सभी दृष्टि योगों सहित उसके प्रभावों का उल्लेख किया गया है। यहां यह ध्यान रखना आवश्यक है कि चंद्र सौम्य ग्रह होने से मंदी कारक है किन्तु क्षीण या दुर्बल अवस्था में यह ग्रह तेजी कारक हो जाता है ऐसी अवस्था में जब चंद्र किसी अन्य सौम्य ग्रह से कोईसा भी मंदी कारक दृष्टि सम्बन्ध बना रहा हो तो वहां चंद्र यदि क्षीण अथवा दुर्बलावस्था में होने पर अति मंदी के स्थान पर क्षणिक मंदी कारक हो जायगा। और इसी प्रकार यदि चंद्र किसी क्रूर ग्रह से कोई तेजी कारक दृष्टि योग बन रहा हो तो वहां साधारण तेजी के स्थान पर क्षीण अथवा दुर्बलावस्था का चंद्र तेजी कारक बन जाता है। अतः क्षीण व दुर्बलावस्था के चंद्र का प्रभाव इससे विपरीत समझना चाहिये।

सूर्य व चंद्र का यहां पर विस्तृत दृष्टि प्रभाव वर्णित किया गया है क्यों कि व्यापारिक वस्तुओं में ये ही दोनों ग्रह ऐसे हैं जो बाजार की तेजी मंदी पर अपना विशेष प्रभाव रखते हैं और इन्हीं दोनों ग्रहों की स्थिति व दृष्टि सम्बन्ध आदि से ही व्यापारिक वस्तुओं तेजी मंदी अधिकांशतः चलती है और इसी ही आधार पर मार्केट उठते गिरते रहते हैं।

अब हम आगे अन्य ग्रहों के साथ किसी अन्य ग्रहों के दृष्टि सम्बंध प्रभाव का संक्षिप्त उल्लेख करेंगे क्योंकि शेष ग्रहों का व्यापारिक वस्तुओं के बाजारों में इतना प्रभाव नहीं पड़ता जितना कि सूर्य व चंद्र का पड़ता है।

मंगल या प्लूटो का सूर्य के साथ दृष्टि योग प्रभाव

जब मंगल या प्लूटो का सूर्य के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि योग बन रहा हो तो सोना, चावल, तिलहन, धातु व खनिज उद्योग, मशीनरी, ईंट, काफी, चाय, जवाहरात, गिलट, व गिलट की बनी वस्तुएं, शहद, जड़ी-बूटियां, रबड़ की बनी हुई वस्तुएँ, टीन, ग्राउंनरी शेयर्स, चमड़ा, घड़ियां तांबा, जस्ता आदि मंगल या प्लूटो व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

मंगल या प्लूटो का सूर्य के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि-गत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है। और यदि इसी प्रकार मंगल या प्लूटो व सूर्य तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों तो ३ दिन के अन्तर्गत उक्त योग की तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा यदि चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बंध बनावें तो ४ दिन के अंतर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई से कुछ अधिक की मंदी समझें।

मंगल या प्लूटो का सूर्य के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन जाय तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत मंगल या प्लूटो व सूर्य भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है और इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्ठयांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव भी इसी योग के समान ही २ दिन के अन्तर्गत होता है।

मंगल या प्लूटो का सूर्य के साथ अष्ठमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो मंगल या प्लूटो व सूर्य के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत

मंगल या प्लूटो व सूर्य भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १।। दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर होता है।

मंगल या प्लूटो का सूर्य के साथ नवांश (४० °) दृष्टि योग बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व सूर्य के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पंचमांश दृष्टियोग की तेजी के तिहाई के तुल्य अपना प्रभाव प्रकट करती है। इसी तरह से ही इन ग्रहों के दशांश (३६ °) एवं द्वादशांश (३० °) दृष्टि सम्बन्ध भी २४ घंटे के अन्तर्गत ही नवांश दृष्टि योग की तेजी के तुल्य अपना प्रभाव दिखाते हैं और पंचदशांश (२४°) व षोड़शांश (२२/३०°) दृष्टि योग क्रमशः १८ व १५ घन्टे के अन्तर्गत पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य अपना प्रभाव प्रकट करते हैं।

मंगल या प्लूटो का सूर्य के साथ अष्टादशांश (२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टियोग की मंदी के आधे के बराबर समझना चाहिये।

मंगल या प्लूटो का सूर्य के साथ विंशांश (१८°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टियोग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

मंगल या प्लूटो का सूर्य के साथ चतुर्विंशांश (१५°) दृष्टि योग बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत

यह योग बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मन्दी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

मंगल या प्लूटो का सूर्य के साथ त्रिशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो मंगल या प्लूटो व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा इस योग को बनाते समय मंगल या प्लूटो व सूर्य जिन राशिगत हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी षोडशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर की होती है। इसी प्रकार ही मंगल या प्लूटो सूर्य के साथ चत्वारिंशांश (९°) व षष्ठांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो क्रमश: ३ घंटे व २ घंटे के अन्तर्गत त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के समान प्रभाव वाली तेजी समझना चाहिये।

मंगल या प्लूटो का सूर्य के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो मंगल या प्लूटो व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहें हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है।

मंगल या प्लूटो का सूर्य के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के स्वामित्व के अंतर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहें हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अंतर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही होता है।

मंगल या प्लूटो का सूर्य के साथ अष्टमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो मंगल या प्लूटो व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक होता है।

मंगल या प्लूटो का चन्द्र के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव...

मंगल या प्लूटो का चन्द्र के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो सोना, चावल, तिलहन, धातु व खनिज उद्योग, मशीनरी, ईंट, काफी, चाय, चांदी, दूध, पेट्रोलियम के शेयर्स, जौ, कांच व कांच का सामान, द्रव्य, मछली, घृत, रबड़ की बनी हुई वस्तुएं, टीन, आर्डनरी शेयर्स, चमड़ा, घड़ियां, तांबा जस्ता आदि मंगल या प्लूटो व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाने वाले ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

मंगल या प्लूटो का चन्द्र के साथ द्वितीयांश (१८०°)-दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है और जब तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो ३ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग के तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा जब चतुर्थांश (९०°) दृष्टि योग बनता हो तो ४ दिन के अन्तर्गत मंदी आवेगी यह मंदी तृतीयांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी की तिहाई के बराबर होती है।

मंगल या प्लूटो का चन्द्र के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अन्दर तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के आधे के बराबर होता है और यदि मंगल या प्लूटो चन्द्र के साथ षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग बनाये तो २ दिन के अन्तर्गत इतनी ही प्रभाव वाली तेजी समझना चाहिये।

मंगल या प्लूटो का चन्द्र के साथ अष्टमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत

मंगल या प्लूटो व चन्द्र भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदीका प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

मंगल या प्लूटो का चन्द्र के साथ नवांश (४०°) दृष्टि योग बन जाय तो मंगल या प्लूटो व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि-गत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्टांश दृष्टी सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के बराबर होता है इसी प्रकार ही इतने ही समय में एवं इतना ही प्रभाव दशांश (३६°) व द्वादशांश(३०°) दृष्टि सम्बन्ध योग बनने से होगा तथा पंचदशांश (२४°) व षोडशांश (२२/३०°) दृष्टि सम्बन्ध बने तो क्रमशः १८ व १५ घण्टे के अन्तर्गत षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर तेजी आवेगी।

मंगल या प्लूटो का चन्द्र के साथ अष्ठदशांश (२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो मंगल या प्लूटो व चन्द्र के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर की होती है।

मंगल या प्लूटो का चन्द्र के साथ विंशांश (१८°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व चन्द्र के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत इस योग की रचना के समय ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है।

मंगल या प्लूटो का चन्द्र के साथ चतुर्विंशांश (१५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो मंगल या प्लूटो व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये ग्रह जिन राशि गत भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन

राशि गत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी अष्टा- दशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होती है।

मंगल या प्लूटो का चन्द्र के साथ त्रिंशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत मंगल या प्लूटो व चन्द्र भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में ४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है और जब चत्वारिंशांश (९°) या षष्ठयांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध ये ग्रह बनायें तो क्रमशः ३ घण्टे व २ घन्टे के अन्तर्गत इतनी ही तेजी आवेगी।

मंगल या प्लूटो का चन्द्र के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो मंगल या प्लूटो व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत का वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर होता है।

मंगल या प्लूटो का चन्द्र के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव प्रकट करती है।

मंगल या प्लूटो का चन्द्र के साथ अष्ठमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो मंगल या प्लूटो व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत मंगल या प्लूटो व चन्द्र के भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हो उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

मंगल या प्लूटो का बुध के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

मंगल या प्लूटो का बुध के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सोना, चावल, तिलहन, धातु व खनिज उद्योग, मशीनरी, टीन, आईनरी शैअर्स, चमड़ा, घड़िया, तांबा, जस्ता, गेहूँ, अनाज, खाद्यपदार्थ, सिल्क, सूत, शक्कर, रुई आदि मंगल या प्लूटो व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाने वाले ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तरर्गत तेजी आती है ।

मंगल या प्लूटो का बुध के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि योग बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं का तथा जिन राशि गत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है और यदि इसी प्रकार मंगल या प्लूटो बुध के साथ तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो ३ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग की तिहाई के तुल्य मंदी अवेगी तथा यदि चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बन्ध बने तो ४ दिन के अन्तर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी से कुछ अधिक की मंदी समझें ।

मंगल या प्लूटो का बुध के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह योग बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन अन्तर्गत तेजी आती है इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्ठयांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव समझें ये योग अपना प्रभाव २ दिन के अन्तर्गत प्रकट करता है ।

मंगल या प्लूटो का बुध के साथ अष्टमांश (४५°) योग हो रहा हो तो मंगल या प्लूटो व बुध के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १॥ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है ।

मंगल या प्लूटो का बुध के साथ नवांश (४०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो मंगल या प्लूटो व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत मंगल या प्लूटो व बुध भ्रमण करते हुए इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है इसी प्रकार से ही इन ग्रहों के दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव भी २४ घण्टे में नवांश दृष्टि योग के तुल्य ही होता है। और इन ग्रहों के पंचदशांश (२४°) व षोडशांश [२२/३०] दृष्टि सम्बन्ध क्रमशः १८ व १५ घन्टे के अन्तर्गत पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य अपना प्रभाव प्रकट करता है।

मंगल या प्लूटो का बुध के साथ अष्टादशांश [२०°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टियोग की मंदी के आधे के बराबर होता है।

मंगल या प्लूटो का बुध के साथ त्रिशांश [१८°] दृष्टि योग बन जाय तो उन ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत मंगल या प्लूटो व बुध भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

मंगल या प्लूटो का बुध के साथ चतुर्विशांश [१५°] दृष्टि योग बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

मंगल या प्लूटो का बुध के साथ त्रिशांश [१२°] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो मंगल या प्लूटो व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि-गत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षोडशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है। इसी प्रकार इन ग्रहों के चत्वारिंशांश [९°] व षष्ठांश [६°] दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव भी त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के समान ही होता है किन्तु ये प्रभाव क्रमशः ३ घण्टे व २ घण्टे के अन्तर्गत होता है।

मंगल या प्लूटो का बुध के साथ द्वादशांश रहित [१५०°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है।

मंगल या प्लूटो का बुध के साथ दशमांश रहित [१४४°] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव रखती है।

मंगल या प्लूटो का बुध के साथ अष्टमांश रहित [१३५°] दृष्टि योग बन जाय तो मंगल या प्लूटो व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना करते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

मंगल या प्लूटो का गुरु के साथ दृष्टि योग प्रभाव

जब मंगल या प्लूटो का गुरु के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि योग बन रहा हो तो सोना, चावल, तिलहन, धातु व खनिज उद्योग, मशीनरी, ईंट, काफी, चाय, चना, जूट, तम्बाकू, बैंक व बैंक के शेयर्स, विलासता की सामग्री रबड़ की बनी हुई वस्तुएँ, टीन, आर्डनरी शेयर्स, चमड़ा, घड़ियां, तांबा, जस्ता आदि मंगल या प्लूटो व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

मंगल या प्लूटो का गुरु के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है। और यदि इसी प्रकार मंगल या प्लूटो व गुरु तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों तो ३ दिन के अन्तर्गत उक्त योग की तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा यदि चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बंध बनावे तो ४ दिन के अंतर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई से कुछ अधिक की मंदी समझें।

मंगल या प्लूटो का गुरु के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन जाय तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत मंगल या प्लूटो व गुरु भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २।। दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है और इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्ठयांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव भी इसी योग के समान ही २ दिन के अन्तर्गत होता है।

मंगल या प्लूटो का गुरु के साथ अष्ठमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो मंगल या प्लूटो व गुरु के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत

मंगल या प्लूटो व गुरु भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १॥ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर होता है।

मंगल या प्लूटो का गुरु के साथ नवांश (४० °) दृष्टि योग बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व गुरु के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पंचमांश दृष्टियोग की तेजी के तिहाई के तुल्य अपना प्रभाव प्रकट करती है। इसी तरह से ही इन ग्रहों के दशांश (३६ °) एवं द्वादशांश (३० °) दृष्टि सम्बन्ध भी २४ घंटे के अन्तर्गत ही नवांश दृष्टि योग की तेजी के तुल्य अपना प्रभाव दिखाते हैं और पंचदशांश (२४°) व षोड़शांश (२२/३० °) दृष्टि योग क्रमश: १८ व १५ घन्टे के अन्तर्गत पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य अपना प्रभाव प्रकट करते हैं।

मंगल या प्लूटो का गुरु के साथ अष्टादशांश (२० °) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर समझना चाहिये।

मंगल या प्लूटो का गुरु के साथ विशांश (१८ °) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टियोग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

मंगल या प्लूटो का गुरु के साथ चतुर्विंशांश (१५ °) दृष्टि योग बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत

यह योग बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मन्दी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

मंगल या प्लूटो का गुरु के साथ त्रिशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो मंगल या प्लूटो व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा इस योग को बनाते समय मंगल या प्लूटो व गुरु जिन राशिगत हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी षोड्शांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर की होती है। इसी प्रकार ही मंगल या प्लूटो गुरु के साथ चत्वारिंशांश (९°) व षष्ठांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो क्रमशः ३ घंटे व २ घंटे के अन्तर्गत त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के समान प्रभाव वाली तेजी समझना चाहिये।

मंगल या प्लूटो का गुरु के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो मंगल या प्लूटो व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहें हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है।

मंगल या प्लूटो का गुरु के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के स्वामित्व के अंतर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहें हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अंतर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही होता है।

मंगल या प्लूटो का गुरु के साथ अष्टमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो मंगल या प्लूटो व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक होता है।

मंगल या प्लूटो का शुक्र के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

मंगल या प्लूटो का शुक्र के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो सोना, चावल, तिलहन, धातु व खनिज उद्योग, मशीनरी, ईंट, काफी, चाय, सूत, शक्कर, गेहूं, लेशियन सिल्क, शक्कर कम्पनी के शेयर्स, मिष्ठान्न, मोती, कांच का उद्योग, पुष्प, सुगंधित पदार्थ, सेव, नासपाती, शराब चांदी, रबड़ की बनी हुई वस्तुएं, टीन, आर्डनरी शेयर्स, चमड़ा, घड़ियां, तांबा जस्ता आदि मंगल या प्लूटो व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाने वाले ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

मंगल या प्लूटो का शुक्र के साथ द्वितीयांश (१८० °) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है और जब तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो ३ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग के तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा जब चतुर्थांश (९०°) दृष्टि योग बनताहो तो ४दिन के अन्तर्गत मंदी आवेगी यह मंदी तृतीयांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी की तिहाई के बराबर होती है।

मंगल या प्लूटो का शुक्र के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अन्दर तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के आधे के बराबर होता है और यदि मंगल या प्लूटो शुक्र के साथ षष्ठांश(६० °) दृष्टि योग बनाये तो २ दिन के अन्तर्गत इतनी ही प्रभाव वाली तेजी समझना चाहिये।

मंगल या प्लूटो का शुक्र के साथ अष्टमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत

मंगल या प्लूटो व शुक्र भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १॥ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदीका प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

मंगल या प्लूटो का शुक्र के साथ नवांश (४०°) दृष्टि योग बन जाय तो मंगल या प्लूटो व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि–गत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्टांश दृष्टी सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के बराबर होता है इसी प्रकार २४ घण्टे अन्तर्गत इतना ही प्रभाव दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध योग बनने से होगा तथा पंचदशांश (२४°) व षोडशांश (२२/३०°) दृष्टि सम्बन्ध बने तो क्रमशः १८ व १५ घण्टे के अन्तर्गत षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर तेजी आवेगी।

मंगल या प्लूटो का शुक्र के साथ अष्ठदशांश (२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो मंगल या प्लूटो व शुक्र के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर की होती है।

मंगल या प्लूटो का शुक्र के साथ विंशांश (१८°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व शुक्र के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत इस योग की रचना के समय ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है।

मंगल या प्लूटो का शुक्र के साथ चतुर्विंशांश (१५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो मंगल या प्लूटो व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये ग्रह जिन राशि गत भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन

राशि गत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होती है।

मंगल या प्लूटो का शुक्र के साथ त्रिशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत मंगल या प्लूटो व शुक्र भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में ४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है और जब चत्वारिशांश (९°) या षष्ठयांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध ये ग्रह बनायें तो क्रमशः ३ घण्टे व २ घन्टे के अन्तर्गत इतनी ही तेजी आवेगी।

मंगल या प्लूटो का शुक्र के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो मंगल या प्लूटो व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर होता है।

मंगल या प्लूटो का शुक्र के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव प्रकट करती है।

मंगल या प्लूटो का शुक्र के साथ अष्ठमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो मंगल या प्लूटो व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत मंगल या प्लूटो व शुक्र भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हो उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

मंगल या प्लूटो का शनि के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

मंगल या प्लूटो का शनि के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सोना, चावल, तिलहन, धातु व खनिज उद्योग, मशीनरी, टीन, आर्डनरी शेअर्स, चमड़ा, धड़िया, तांबा, जस्ता, सीमेण्ट, कोयला, सीमेण्ट का सामान, अलसी, कालीमिर्च, मीठा तेल, मूंगफली, ऊन, लोहा, जूट, जौ, अचल सम्पत्ति जूते, रील, कृषि सम्बन्धी यन्त्र, संगमरमर, वनस्पति आदि मंगल या प्लूटो व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाने वाले ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तरगंत तेजी आती है ।

मंगल या प्लूटो का शनि के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि योग बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है और यदि इसी प्रकार मंगल या प्लूटो शनि के साथ तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो ३ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग की तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा यदि चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बन्ध बने तो ४ दिन के अन्तर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी से कुछ अधिक की मंदी समझें ।

मंगल या प्लूटो का शनि के साथ पचमांश (७२°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह योग बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन अन्तर्गत तेजी आती है इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव समझें ये योग अपना प्रभाव २ दिन के अन्तर्गत प्रकट करता है ।

मंगल या प्लूटो का शनि के साथ अष्टमांश (४५°) योग हो रहा हो तो मंगल या प्लूटो व शनि के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत

की वस्तुओं में १।। दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

मंगल या प्लूटो का शनि के साथ नवांश (४०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो मंगल या प्लूटो व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत मंगल या प्लूटो व शनि भ्रमण करते हुए इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है इसी प्रकार से ही इन ग्रहों के दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव भी २४ घण्टे में नवांश दृष्टि योग के तुल्य ही होता है और इन ग्रहों के पंचदशांश (२४°) व षोडशांश [२२/३०°] दृष्टि सम्बन्ध क्रमश १८ व १५ घन्टे के अन्तर्गत पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य अपना प्रभाव प्रकट करता है।

मंगल या प्लूटो का शनि के साथ अष्टादशांश [२०°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टियोग की मंदी के आधे के बराबर होता है।

मंगल या प्लूटो का शनि के साथ विंशांश [१८°] दृष्टि योग बन जाय तो इन ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत मंगल या प्लूटो व शनि भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

मंगल या प्लूटो का शनि के साथ चतुर्विंशांश [१५°] दृष्टि योग बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

मंगल या प्लूटो का शनि के साथ त्रिशांश [१२°] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो मंगल या प्लूटो व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि-गत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षोडशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है। इसी प्रकार इन ग्रहों के चत्वारिशांश [९°] व षष्ठांश [६°] दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव भी त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के समान ही होता है किन्तु यह तेजी क्रमशः ३ घण्टे व २ घण्टे के अन्तर्गत होती है।

मंगल या प्लूटो का शनि के साथ द्वादशांश रहित [१५०°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है।

मंगल या प्लूटो का शनि के साथ दशमांश रहित [१४४°] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव रखती है।

मंगल या प्लूटो का शनि के साथ अष्टमांश रहित [१३५°] दृष्टि योग बन जाय तो मंगल या प्लूटो व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना करते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

मंगल या प्लूटो का राहु अथवा केतु के साथ दृष्टि योग प्रभाव

जब मंगल या प्लूटो का राहु अथवा केतु के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि योग बन रहा हो तो सोना, चावल, तिलहन, धातु व खनिज उद्योग, मशीनरी, ईंट, काफी, चाय, बिजली के यन्त्र, रबड़ की बनी हुई वस्तुएँ, टीन, आर्डनरी शेअर्स, चमड़ा, घड़ियां तांबा, जस्ता आदि मंगल या प्लूटो व राहु अथवा केतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

मंगल या प्लूटो का राहु अथवा केतु के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व राहु अथवा केतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है। और यदि इसी प्रकार मंगल या प्लूटो व राहु अथवा केतु तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हों तो ३ दिन के अन्तर्गत उक्त योग की तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा यदि चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बंध बनावे तो ४ दिन के अंतर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई से कुछ अधिक की मंदी समझें।

मंगल या प्लूटो का राहु अथवा केतु के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन जाय तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत मंगल या प्लूटो व राहु अथवा केतु भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है और इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्ठयांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव भी इसी योग के समान ही २ दिन के अन्तर्गत होता है।

मंगल या प्लूटो का राहु अथवा केतु के साथ अष्ठमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो मंगल या प्लूटो व राहु अथवा केतु के अन्तर्गत की

वस्तुओं में तथा जिन राशिगत मंगल या प्लूटो व राहु अथवा केतु भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १।। दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर होता है।

मंगल या प्लूटो का राहु अथवा केतु के साथ नवांश (४०°) दृष्टि योग बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व राहु अथवा केतु के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेजी पंचमांश दृष्टियोग की तेजी के तिहाई के तुल्य अपना प्रभाव प्रकट करती है। इसी तरह से ही इन ग्रहों के दशांश (३६ °) एवं द्वादशांश (३० °) दृष्टि सम्बन्ध भी २४ घंटे के अन्तर्गत ही नवांश दृष्टि योग की तेजी के तुल्य अपना प्रभाव दिखाते हैं और पंचदशांश (२४°) व षोड़शांश (२२/३०°) दृष्टि योग क्रमशः १८ व १५ घन्टे के अन्तर्गत पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य अपना प्रभाव प्रकट करते हैं।

मंगल या प्लूटो का राहु अथवा केतु के साथ अष्टादशांश (२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व राहु अथवा केतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टियोग की मंदी के आधे के बराबर समझना चाहिये।

मंगल या प्लूटो का राहु अथवा केतु के साथ विशांश (१८°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व राहु अथवा केतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टियोग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

मंगल या प्लूटो का राहु अथवा केतु के साथ चतुर्विशांश (१५°) दृष्टि योग बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व राहु अथवा केतु के आधिपत्यत्व की

वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मदी आती है इस मन्दी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है ।

मंगल या प्लूटो का राहु अथवा केतु के साथ त्रिशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो मंगल या प्लूटो व राहु अथवा केतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा इस योग को बनाते समय मंगल या प्लूटो व राहु अथवा केतु जिन राशिगत हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है यह तेज षोड़शांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर की होती है । इसी प्रकार ही मंगल या प्लूटो का राहु अथवा केतु के साथ चत्वारिंशांश (९°) व षष्ठांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो क्रमशः ३ घंटे व २ घंटे के अन्तर्गत त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के समान प्रभाव वाली तेजी समझना चाहिये।

मंगल या प्लूटो का राहु अथवा केतु के साथ द्वादशांश रहित(१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो मंगल या प्लूटो व राहु अथवा केतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहें हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है ।

मंगल या प्लूटो का राहु अथवा केतु के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के स्वामित्व के अंतर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहें हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अंतर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही होता है ।

मंगल या प्लूटो का राहु अथवा केतु के साथ अष्टमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो मंगल या प्लूटो व राहु अथवा केतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक होता है ।

मंगल या प्लूटो का हर्शल के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

मंगल या प्लूटो का हर्शल के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो सोना, चावल, तिलहन, धातु व खनिज उद्योग, मशीनरी, ईंट, काफी, चाय, रबड़ की बनी हुई वस्तुएं, टीन, आर्डनरी शेअर्स, चमड़ा, घड़ियां, तांबा बिजली, वायुयान, मिट्टी की वस्तुएं, टेलीग्राम, वायरलेस, नेवीगेशन, कार, मोटर, ट्राम्वे, रेल, बस, गवर्नमेण्ट पेपर, ज्वाइन्ट कम्पनी, फिल्म उद्योग, वाटर उद्योग, एलमूनियम उद्योग जस्ता आदि मंगल या प्लूटो व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाने वाले ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

मंगल या प्लूटो का हर्शल के साथ द्वितीयांश (१८० °) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है और जब तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो ३ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग के तिहाई तुल्य मंदी आवेगी तथा जब चतुर्थांश (९०°) दृष्टि योग बनता हो तो ४ दिन के अन्तर्गत मंदी आवेगी यह मंदी तृतीयांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी की तिहाई के बराबर होती है।

मंगल या प्लूटो का हर्शल के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अन्दर तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के आधे के बराबर होता है और यदि मंगल या प्लूटो हर्शल के साथ षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग बनाये तो २ दिन के अन्तर्गत इतनी ही प्रभाव शाली तेजी समझना चाहिये।

मंगल या प्लूटो का हर्शल के साथ अष्टमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत

मंगल या प्लूटो व हर्शल भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १।। दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदीका प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है ।

मंगल या प्लूटो का हर्शल के साथ नवांश (४०°) दृष्टि योग बन जाय तो मंगल या प्लूटो व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि-गत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्टांश दृष्टी सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के बराबर होता है इसी प्रकार २४ घण्टे के अन्तर्गत इतना ही प्रभाव दशांश (३६°) व द्वादशांश(३०°) दृष्टि सम्बन्ध योग बनने से होगा तथा पंचदशांश (२४°) व षोडशांश (२२/३०°) दृष्टि सम्बन्ध बने तो क्रमशः १८ व १५ घण्टे के अन्तर्गत षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर तेजी आवेगी ।

मंगल या प्लूटो का हर्शल के साथ अष्ठदशांश (२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो मंगल या प्लूटो व हर्शल के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर की होती है ।

मंगल या प्लूटो का हर्शल के साथ विशांश (१८°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व हर्शल के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत इस योग की रचना के समय ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है ।

मंगल या प्लूटो का हर्शल के साथ चतुर्विशांश (१५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो मंगल या प्लूटो व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये ग्रह जिन राशि गत भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन

राशि गत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी अष्टा-दशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होती है।

मंगल या प्लूटो का हर्शल के साथ त्रिशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत मंगल या प्लूटो व हर्शल भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में ४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है और जब चत्वारिंशांश (९°) या षष्ठयांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध ये ग्रह बनायें तो क्रमशः ३ घण्टे व २ घन्टे के अन्तर्गत इतनी ही तेजी आवेगी।

मंगल या प्लूटो का हर्शल के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो मंगल या प्लूटो व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर होता है।

मंगल या प्लूटो का हर्शल के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव प्रकट करती है।

मंगल या प्लूटो का हर्शल के साथ अष्ठमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो मंगल या प्लूटो व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत मंगल या प्लूटो व हर्शल भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

मंगल या प्लूटो का नेपच्यून के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

मंगल या प्लूटो का नेपयून के साथ पूर्णांश(०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो सोना, चावल, तिलहन, धातु व खनिज उद्योग, मशीनरी, टीन, आर्डनरी शेयर्स, चमड़ा, बढ़िया, तांबा, जस्ता, सीमेण्ट, कोयला, चाय, काफी, औषधि, मिष्टान्न, तेल, मत्स्य–उद्योग, तम्बाकू, सिंडीकेट आदि मंगल या प्लूटो व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाने वाले ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है ।

मंगल या प्लूटो का नेपच्यून के साथ द्वितीयांश(१८०°)दृष्टि योग बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व नैपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है और यदि इसी प्रकार मंगल या प्लूटो नेपच्यून के साथ तृतीयांश(१२०°)दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो ३ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग की तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा यदि चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बन्ध बने तो ४ दिन के अन्तर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी की तिहाई से कुछ अधिक की मंदी समझें ।

मंगल या प्लूटो का नेपच्यून के साथ पंचमांश(७२°)दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह योग बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव समझें यह योग अपना प्रभाव २ दिन के अन्तर्गत प्रकट करता है ।

मंगल या प्लूटो का नेपच्यून के साथ अष्टमांश (४५°) योग हो रहा हो तो मंगल या प्लूटो व नेपच्यून के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत

की वस्तुओं में १॥ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

मंगल या प्लूटो का नेपच्यून के साथ नवांश (४०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो मंगल या प्लूटो व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत मंगल या प्लूटो व नेपच्यून भ्रमण करते हुए इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है इसी प्रकार से ही इन ग्रहों के दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव भी २४ घण्टे में नवांश दृष्टि योग के तुल्य ही होता है और इन ग्रहों के पंचदशांश (२४°) व षोडशांश [२२/३०°] दृष्टि सम्बन्ध क्रमशः १८ व १५ घन्टे के अन्तर्गत पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य अपना प्रभाव प्रकट करता है।

मंगल या प्लूटो का नेपच्यून के साथ अष्टादशांश [२०°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टियोग की मंदी के आधे के बराबर होता है।

मंगल या प्लूटो का नेपच्यून के साथ त्रिंशांश [१८°] दृष्टि योग बन जाय तो इन ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत मंगल या प्लूटो व नेपच्यून भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

मंगल या प्लूटो का नेपच्यून के साथ चतुर्विंशांश [१५°] दृष्टि योग बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की

वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

मंगल या प्लूटो का नेपच्यून के साथ त्रिशांश [१२°] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो मंगल या प्लूटो व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षोडशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है। इसी प्रकार इन ग्रहों के चत्वारिंशांश [९°] व षष्ठांश [६°] दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव भी त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के समान ही होता है किन्तु यह तेजी क्रमशः ३ घण्टे व २ घण्टे के अन्तर्गत होती है।

मंगल या प्लूटो का नेपच्यून के साथ द्वादशांश रहित [१५०°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो मंगल या प्लूटो व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है।

मंगल या प्लूटो का नेपच्यून के साथ दशमांश रहित [१४४°] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव रखती है।

मंगल या प्लूटो का नेपच्यून के साथ अष्टमांश रहित [१३५°] दृष्टि योग बन जाय तो मंगल या प्लूटो व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना करते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

मंगल का प्लूटो के साथ दृष्टि योग प्रभाव

जब मंगल का प्लूटो के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि योग बन रहा हो तो सोना चावल, तिलहन, धातु व खनिज उद्योग, मशीनरी, ईंट, काफी, चाय, रबड़, की बनी हुई वस्तुएँ, टीन, आर्डनरी शेयर्स, चमड़ा, घड़ियां, तांबा, जस्ता आदि मंगल या प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

मंगल का प्लूटो के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो मंगल व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है। और यदि इसी प्रकार मंगल का प्लूटो से तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो ३ दिन के अन्तर्गत उक्त योग की तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा यदि चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बंध बने तो ४ दिन के अंतर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई से कुछ अधिक की मंदी समझें।

मंगल का प्लूटो के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन जाय तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत मंगल व प्लूटो भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है और इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्ठयांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव भी इसी योग के समान ही २ दिन के अन्तर्गत होता है।

मंगल का प्लूटो के साथ अष्ठमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो मंगल व प्लूटो के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत मंगल व प्लूटो

भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११। दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदीका प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

मंगल का प्लूटो के साथ नवांश (४०°) दृष्टि योग बन जाय तो मंगल व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि-गत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्ठांश दृष्टी सबन्ध की तेजी के तिहाई के बराबर होता है इसी प्रकार २४ घण्टे के अन्तर्गत इतना ही प्रभाव दशांश (३६°) व द्वादशांश(३०°) दृष्टि सम्बन्ध योग बनने से होगा तथा पचदशांश (२४°) व षोडशांश (२२/३०°) दृष्टि सम्बन्ध बने तो क्रमशः १८ व १५ घण्टे के अन्तर्गत षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर तेजी आयेगी।

मंगल का प्लूटो के साथ अष्टादशांश (२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो मंगल व प्लूटो के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर की होती है।

मंगल का प्लूटो के साथ विंशांश (१८°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो मंगल व प्लूटो के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत इस योग की रचना के समय ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है।

मंगल का प्लूटो के साथ चतुर्विंशांश (१५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो मंगल व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये ग्रह जिन राशि गत भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन

राशि गत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी अष्टा-दशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होती है।

मंगल का प्लूटो के साथ त्रिशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत मंगल व प्लूटो भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में ४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है और जब चत्वारिंशांश (९°) या षष्ठयांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध ये ग्रह बनायें तो क्रमश: ३ घण्टे व ४ घन्टे के अन्तर्गत इतनी ही तेजी आवेगी।

मंगल का प्लूटो के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो मंगल व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर होता है।

मंगल का प्लूटो के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो मंगल व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह भ्या-तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव प्रकट करती है।

मंगल का प्लूटो के साथ अष्ठमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो मंगल व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत मंगल व प्लूटो भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हो उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

बुध या शुक्र का सूर्य के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

बुध या शुक्र का सूर्य के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो सोना, चावल, गेहूं अनाज, खाद्य पदार्थ, सिल्क, सूत, रुई, तांबा, फूट का सामान, शक्कर, चांदी के बर्तन, लेशियन सिल्क, मिष्ठान, मोती, कांच का उद्योग, सुगंधित पदार्थ, जवाहारात, गिलट व गिलट की बनी वस्तुएं, शहद, पुष्प, चांदी, सफेद कपड़ा, रंगा हुआ अथवा छपा हुआ कपड़ा, औषधि, नमक आदि दृष्टा व दृश्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाने वाले ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

बुध या शुक्र का सूर्य के साथ द्वितीयांश (१८० °) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है और जब तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो ३ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग के तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा जब चतुर्थांश (९०°) दृष्टि योग बनता हो तो ४ दिन के अन्तर्गत मंदी आवेगी यह मंदी तृतीयांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी की तिहाई के बराबर होती है।

बुध या शुक्र का सूर्य के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन रहा हो तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अन्दर तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के आधे के बराबर होता है और यदि उपरोक्त ग्रह सूर्य के साथ षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग बनाये तो २ दिन के अन्तर्गत इतनी ही प्रभाव वाली तेजी समझना चाहिये।

बुध या शुक्र का सूर्य के साथ अष्टमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो यह योग बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत

दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशि-गत की वस्तुओं में १।। दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होती है।

बुध या शुक्र का सूर्य के साथ नवांश (४०°) दृष्टि योग बन जाय तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्टांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के बराबर होता है इसी प्रकार २४ घण्टे के अन्तर्गत इतना ही प्रभाव दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध योग बनने से होगा तथा पंचदशांश (२४°) या षोडशांश [२२/३०°] दृष्टि सम्बन्ध बने तो क्रमश: १८ व १५ घण्टे के अन्तर्गत षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर तेजी आवेगी।

बुध या शुक्र का सूर्य के साथ अष्टादशांश [२०°] दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो दृष्टा व दृश्य ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि-गत यह योग बनाने वाले ग्रह हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर की होती है।

बुध या शुक्र का सूर्य के साथ विंशांश [१८°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इस योग को बनाने वालों के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग की रचना के समय ये ग्रह हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है।

बुध या शुक्र का सूर्य के साथ चतुर्विंशांश [१५°] दृष्टि योग हो रहा हो तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये ग्रह जिन राशिगत

भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मन्दी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

बुध या शुक्र का सूर्य के साथ त्रिशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो यह दृष्टि सम्बन्ध बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृष्टा व दृष्य ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर का होता है। और जब चत्वारिंशांश (६°) व षष्ठांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध ये ग्रह बनायें तो क्रमशः ३ घंटे व २ घंटे के अन्तर्गत इतनी ही तेजी आवेगी।

बुध या शुक्र का सूर्य के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो दृष्टा व दृश्य ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहें हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सबन्ध की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है।

बुध या शुक्र का सूर्य के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इस दृष्टि योग को बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहें हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अंतर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही होता है।

बुध या शुक्र का सूर्य के साथ अष्टमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो यह दृष्टि सम्बन्ध बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक होता है।

बुध या शुक्र का चन्द्र के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

बुध या शुक्र का चन्द्र के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो गेहूं, चावल, अनाज, खाद्य पदार्थ, सिल्क, सूत, शक्कर, रुई, तांबा, घृत, जूट का सामान, चांदी, लेशियन सिल्क, मिष्टान्न, मोती, कांच का उद्योग, पुष्प, सुगंधित पदार्थ शराब, कांच का सामान, पेट्रोलियम के शेयर्स, द्रव्य, दूध आदि बुध या शुक्र व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाने वाले ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है ।

बुध या शुक्र का चन्द्र के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि योग बन रहा हो तो बुध या शुक्र व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इसी प्रकार यदि बुध या शुक्र का चन्द्र के साथ तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो ३ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग की तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा यदि चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बन्ध बने तो ४ दिन के अन्तर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी की तिहाई से कुछ अधिक की मंदी समझें ।

बुध या शुक्र का चन्द्र के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह यह योग बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव समझें यह योग अपना प्रभाव २ दिन के अन्तर्गत प्रकट करता है ।

बुध या शुक्र का चन्द्र के साथ अष्टमांश (४५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो बुध या शुक्र व चन्द्र के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत

की वस्तुओं में १॥ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

बुध या शुक्र का चन्द्र के साथ नवांश (४०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो बुध या शुक्र व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत बुध या शुक्र व चन्द्र भ्रमण करते हुए इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है इसी प्रकार से ही इन ग्रहों के दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव भी २४ घण्टे में नवांश दृष्टि योग के तुल्य ही होता है और इन ग्रहों के पंचदशांश (२४) व षोडशांश [२२/३०°] दृष्टि सम्बन्ध क्रमशः १८ व १५ घन्टे के अन्तर्गत पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य अपना प्रभाव प्रकट करते है।

बुध या शुक्र का चन्द्र के साथ अष्टादशांश [२०°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो बुध या शुक्र व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टियोग की मंदी के आधे के बराबर होता है।

बुध या शुक्र का चन्द्र के साथ विंशांश [१८°] दृष्टि योग बन जाय तो इन ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत बुध या शुक्र व चन्द्र भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

बुध या शुक्र का चन्द्र के साथ चतुर्विंशांश [१५°] दृष्टि योग बन रहा हो तो बुध या शुक्र व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की

वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

बुध या शुक्र का चन्द्र के साथ त्रिशांश [१२°] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो बुध या शुक्र व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत मे ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षोडशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है। इसी प्रकार इन ग्रहों के चत्वारिंशांश [९°] व षष्ठांश [६°] दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव भी त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के समान ही होता है किन्तु यह तेजी क्रमशः ३ घण्टे व २ घण्टे के अन्तर्गत आती है।

बुध या शुक्र का चन्द्र के साथ द्वादशांश रहित [१५०°]दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो बुध या शुक्र व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है।

बुध या शुक्र का चन्द्र के साथ दशमांश रहित [१४४°] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत में यह इस योग को बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव रखती है।

बुध या शुक्र का चन्द्र के साथ षष्ठमांश रहित [१३५°] दृष्टि योग बन जाय तो बुध या शुक्र व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना करते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

बुध या शुक्र का मंगल के साथ दृष्टि योग प्रभाव

जब बुध या शुक्र का मंगल के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टियोग बन रहा हो तो चावल, तिलहन, धातु व खनिज उद्योग, मशीनरी, ईंट, काफी, चाय, सोना, गेंहूं अनाज, खाद्य पदार्थ सिल्क, सूत, शक्कर, रुई, जूट का सामान, तांबा, शराब, चांदी, लेसियनसिल्क, मिशन्न, मोती, कांच का उद्योग, पुष्प, सुगंधितपदार्थ आदि बुध या शुक्र व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

बुध या शुक्रका मंगल के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहाहो तो बुध या शुक्र व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है। यदि इसी प्रकार बुध या शुक्र का मंगल से तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो ३ दिन के अन्तर्गत उक्त योग की तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी और यदि चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बंध बने तो ४ दिन के अंतर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई से कुछ अधिक की मंदी समझें।

बुध या शुक्र का मंगल के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन जाय तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत बुध या शुक्र व मंगल भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है और इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्टयांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव भी इसी योग के समान ही २ दिन के अन्तर्गत होता है।

बुध या शुक्र का मंगल के साथ अष्ठमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो बुध या शुक्र व मंगल के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत बुध या शुक्र

मंगल भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १॥ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

बुध या शुक्र का मंगल के साथ नवांश (४०°) दृष्टि योग बन जाय तो बुध या शुक्र व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्टांश दृष्टी सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के बराबर होता है इसी प्रकार २४ घण्टे के अन्तर्गत इतना ही प्रभाव दशांश (३६°) व द्वादशांश(३०°) दृष्टि सम्बन्ध योग बनने से होगा तथा पंचदशांश (२४°) व षोडशांश (२२/३०°) दृष्टि सम्बन्ध बने तो क्रमशः १८ व १५ घण्टे के अन्तर्गत षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर तेजी आती है।

बुध या शुक्र का मंगल के साथ अष्टादशांश (२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो बुध या शुक्र व मंगल के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर की होती है।

बुध या शुक्र का मंगल के साथ विंशांश (१८°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो बुध या शुक्र व मंगल के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग की रचना के समय ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है।

बुध या शुक्र का मंगल के साथ चतुर्विंशांश (१५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो बुध या शुक्र व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये ग्रह जिन राशि गत भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन

राशि गत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होती है।

बुध या शुक्र का मंगल के साथ त्रिशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत बुध या शुक्र व मंगल भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में ४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है और जब चत्वारिंशांश (९°) या षष्ठयांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध ये ग्रह बनायें तो क्रमशः ३ घण्टे व ४ घन्टे के अन्तर्गत इतनी ही तेजी आवेगी।

बुध या शुक्र का मंगल के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो बुध या शु व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर होता है।

बुध या शु का मंगल के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो बुध या शुक्र व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव प्रकट करती है।

बुध या शु का मंगल के साथ अष्ठमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो बुध या शुक्र व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत बुध या शुक्र व मंगल भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हो उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

बुध या शुक्र का गुरु के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

बुध या शुक्र का गुरु के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो चांदी, चावल, गेहूं अनाज, खाद्य. पदार्थ, सिल्क, सूत, रुई तांबा, जूट का सामान, शक्कर. चांदी के बर्तन, लेशियन सिल्क, मिष्ठान, मोती, कांच का उद्योग, सुगंधित पदार्थ, टीन, रबड़, जस्ता. चना, जूट, तम्बाकू, विलासता की सामग्री क्लोथ मिल्स, अनेक प्रकार के शेयर्स, कपड़ा आदि दृष्टा व दृश्य ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाने वाले ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

बुध या शुक्र का गुरु के साथ द्वितीयांश (१८० °) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है और जब तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो ४ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग के तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा जब चतुर्थांश (९०°) दृष्टि योग बनता हो तो ३ दिन के अन्तर्गत मंदी आवेगी यह मंदी तृतीयांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी की तिहाई के बराबर होती है।

बुध या शुक्र का गुरु के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन रहा हो तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३ दिन के अन्दर तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के आधे के बराबर होता है और यदि उपरोक्त ग्रह गुरु के साथ षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग बनाये तो २ दिन के अन्तर्गत इतनी ही प्रभाव वाली तेजी समझना चाहिये।

बुध या शुक्र का गुरु के साथ अष्टमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो यह योग बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत

दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशि-गत की वस्तुओं में २ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होती है।

बुध या शुक्र का गुरु के साथ नवांश (४०°) दृष्टि योग बन जाय तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्टांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के बराबर होता है इसी प्रकार २४ घण्टे के अन्तर्गत इतना ही प्रभाव दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध योग बनने से होगा तथा पंचदशांश (२४°) या षोडशांश [२२/३०°] दृष्टि सम्बन्ध बने तो क्रमशः १८ व १५ घण्टे के अन्तर्गत षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर तेजी आवेगी।

बुध या शुक्र का गुरु के साथ अष्टादशांश [२०°] दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो दृष्टा व दृश्य ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि-गत यह योग बनाने वाले ग्रह हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर की होती है।

बुध या शुक्र का गुरु के साथ विंशांश [१८°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इस योग को बनाने वाले ग्रहों के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग की रचना के समय ये ग्रह हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है।

बुध या शुक्र का गुरु के साथ चतुर्विंशांश [१५°] दृष्टि योग हो रहा हो तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये ग्रह जिन राशिगत

भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मन्दी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

बुध या शुक्र का गुरु के साथ त्रिशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो यह दृष्टि सम्बन्ध बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृष्टा व दृश्य ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर का होता है। और जब चत्वारिंशांश (९°) व षष्ठांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध ये ग्रह बनायें तो क्रमश: ३ घंटे व २ घंटे के अन्तर्गत इतनी ही तेजी आवेगी।

बुध या शुक्र का गुरु के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो दृष्टा व दृश्य ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहें हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सबन्ध की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है।

बुध या शुक्र का गुरु के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इस दृष्टि योग को बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहें हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अंतर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही होता है।

बुध या शुक्र का गुरु के साथ अष्टमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो यह दृष्टि सम्बन्ध बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक होता है।

बुध का शुक्र के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

बुध का शुक्र के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो गेंहूं, चावल, अनाज, खाद्य पदार्थ, सिल्क, सूत, शक्कर, रुई, तांबा, जूट का सामान, चांदी, लेशियन सिल्क, मिष्टान्न, मोती, कांच का उद्योग, पुष्प, सुगंधित पदार्थ शराब आदि बुध या शुक्र व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाने वाले ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है ।

बुध का शुक्र के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि योग बन रहा हो तो बुध व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है । इसी प्रकार यदि बुध का शुक्र के साथ तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो ३ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग की तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा यदि चतुर्थांश (६०°) दृष्टि सम्बन्ध बने तो ४ दिन के अन्तर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी की तिहाई से कुछ अधिक की मंदी समझें ।

बुध का शुक्र के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत येग्रह यहयोग बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव समझें यह योग अपना प्रभाव २ दिन के अन्तर्गत प्रकट करता है ।

बुध का शुक्र के साथ अष्टमांश (४५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो बुध व शुक्र के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत

की वस्तुओं में १।। दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

बुध का शुक्र के साथ नवांश (४०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो बुध व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत बुध व शुक्र भ्रमण करते हुए इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है इसी प्रकार से ही इन ग्रहों के दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव भी २४ घण्टे में नवांश दृष्टि योग के तुल्य ही होता है और इन ग्रहों के पंचदशांश (२४°) व षोडशांश [२२/३०°] दृष्टि सम्बन्ध क्रमशः १८ व १५ घन्टे के अन्तर्गत पंचमांश दृष्टि योग का तेजी के आधे के तुल्य अपना प्रभाव प्रकठ करते है।

बुध का शुक्र के साथ अष्टादशांश [२०°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो बुध व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टियोग की मंदी के आधे के बराबर होता है।

बुध का शुक्र के साथ विंशांश [१८°] दृष्टि योग बन जाय तो इन ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत बुध व शुक्र भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

बुध का शुक्र के साथ चतुर्विंशांश [१५°] दृष्टि योग बन रहा हो तो बुध व शुक्र चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की

वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

बुध का शुक्र के साथ त्रिशांश [१२°] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो बुध व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षोडशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है। इसी प्रकार इन ग्रहों के चत्वारिंशांश [९°] व षष्ठांश [६°] दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव भी त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के समान ही होता है किन्तु यह तेजी क्रमशः ३ घण्टे व २ घण्टे के अन्तर्गत आती है।

बुध का शुक्र के साथ द्वादशांश रहित [१५०°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो बुध व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है।

बुध का शुक्र के साथ दशमांश रहित [१४४°] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव रखती है।

बुध शुक्र का के साथ अष्टमांश रहित [१३५°] दृष्टि योग बन जाय तो बुध व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना करते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

बुध या शुक्र का शनि के साथ दृष्टि योग प्रभाव

जब बुध या शुक्र का शनि के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टियोग बन रहा हो तो गेंहू चावल, अनाज, खाद्य पदार्थ सिल्क, सूत, शक्कर,रुई, जूट का सामान, तांबा, चांदी, लेसियनसिल्क, मिष्ठान्न, मोती, कांचकाउद्योग,पुष्प, सुगंधितपदार्थ कोयला सीमेन्ट व सीमेन्ट का सामान, तांबा, अलसी, तिलहन, काली मिर्च, मीठातेल, मूंगफली, ऊन, बर्तन, जूते, रील, कृषि सम्बन्धी यन्त्र, संगमरमर, वनास्पति आदि बुध या शुक्र व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

बुध या शुक्र का शनि के साथ द्वितीयांश(१८०°)दृष्टि सम्बन्ध बन रहाहो तो बुध या शुक्र व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है। यदि इसी प्रकार बुध या शुक्र का शनि से तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो ३ दिन के अन्तर्गत उक्त योग की तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी और यदि चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बंध बने तो ४ दिन के अंतर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई से कुछ अधिक की मंदी समझें।

बुध या शुक्र का शनि के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन जाय तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत बुध या शुक्र व शनि भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है और इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्ठयांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव भी इसी योग के समान ही ३ दिन के अन्तर्गत होता है।

बुध या शुक्र का शनि के साथ अष्ठमांश(४५°)दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो बुध या शुक्र व शनि के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत बुध या शुक्र

शनि भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

बुध या शुक्र का शनि के साथ नवांश (४०°) दृष्टि योग बन जाय तो बुध या शुक्र व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि-गत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्ठांश दृष्टी सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के बराबर होता है इसी प्रकार २४ घण्टे के अन्तर्गत इतना ही प्रभाव दशांश (३६°) व द्वादशांश(३०°) दृष्टि सम्बन्ध योग बनने से होगा तथा पंचदशांश (२४°) व षोडशांश (२२/३०°) दृष्टि सम्बन्ध बने तो क्रमशः १८ व १५ घण्टे के अन्तर्गत षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर तेजी आता है।

बुध या शुक्र का शनि के साथ अष्टादशांश (२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो बुध या शुक्र व शनि के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर की होती है।

बुध या शुक्र का शनि के साथ विंशांश (१८°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो बुध या शुक्र व शनि के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत इस योग की रचना के समय ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है।

बुध या शुक्र का शनि के साथ चतुर्विंशांश (१५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो बुध या शुक्र व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये ग्रह जिन राशि गत भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन

राशि गत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी अष्टा० दशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होती है।

बुध या शुक्र का शनि के साथ विंशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत बुध या शुक्र व शनि भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में ४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है और जब चत्वारिंशांश (६°) या षष्ठयांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध ये ग्रह बनायें तो क्रमशः ३ घण्टे व ४ घण्टे के अन्तर्गत इतनी ही तेजी आवेगी।

बुध या शुक्र का शनि के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो बुध या शुक्र व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत का वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर होता है।

बुध या शुक्र का शनि के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो बुध या शुक्र व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव प्रकट करती है।

बुध या शुक्र का शनि के साथ अष्ठमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो बुध या शुक्र व शनि के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत बुध या शुक्र व शनि भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हो उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

बुध या शुक्र का राहु अथवा केतु के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

बुध या शु का राहु अथवा केतु के साथ पूर्णांश (० °) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो चांदी, चावल, गेहूं अनाज, खाद्य. पदार्थ, सिल्क, सूत, रुई. तांबा, जूट का सामान. शक्कर. चांदी के बर्तन, लेशियन सिल्क, मिष्ठान, मोती, कांच का उद्योग, सुगंधित पदार्थ बिजली के यन्त्र तथा बिजली का सामान आदि दृष्टा व दृश्य ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाने वाले ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है ।

बुध या शुक्र का राहु अथवा केतु के साथ द्वितीयांश(१८० °)दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है और जब तृतीयांश (१२० °) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो ४ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग के तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा जब चतुर्थांश(९० °) दृष्टि योग बनता हो तो ३ दिन के अन्तर्गत मंदी आवेगी यह मंदी तृतीयांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी की तिहाई के बराबर होती है ।

बुध या शुक्र का राहु अथवा केतु के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन रहा हो तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३ दिन के अन्दर तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के आधे के बराबर होता है और यदि उपरोक्त ग्रह गुरु के साथ षष्ठांश (६० °) दृष्टि योग बनाये तो २ दिन के अन्तर्गत इतनी ही प्रभाव शाली तेजी समझना चाहिये ।

बुध या शुक्र का राहु अथवा केतु के साथ अष्टमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा होतो यह योग बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा

जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होती है।

बुध या शुक्र का राहु अथवा केतु के साथ नवांश(४०°)दृष्टि योग बन जाय तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्टांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के बराबर होता है इसी प्रकार २४ घण्टे के अन्तर्गत इतना ही प्रभाव दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध योग बनने से होगा तथा पंचदशांश (२४°) या षोडशांश [२२/३०°] दृष्टि सम्बन्ध बने तो क्रमशः १८ व १५ घण्टे के अन्तर्गत षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर तेजी आवेगी।

बुध या शुक्र का राहु अथवा केतु के साथ अष्टादशांश [२०°] दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो दृष्टा व दृश्य ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ग्रह हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे केअन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर की होती है।

बुध या शुक्र का राहु अथवा केतु के साथ विंशांश[१८°]दृष्टि सम्बन्ध बनरहा हो तो इस योग को बनाने वाले ग्रहों के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि-गत इस योग की रचना के समय ये ग्रह हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है।

बुध या शुक्र का राहु अथवा केतु के साथ चतुर्विंशांश [१५°]दृष्टि योग हो रहा हो तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये ग्रह जिन

राशिगत भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मन्दी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है ।

बुध या शुक्र का राहु अथवा केतु के साथ त्रिंशांश(१२°)दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो यह दृष्टि सम्बन्ध बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृष्टा व दृष्य ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर का होता है । और जब चत्वारिंशांश (९°) व षष्ठांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध ये ग्रह बनायें तो क्रमशः ३ घंटे व २ घंटे के अन्तर्गत इतनी ही तेजी आवेगी ।

बुध या शुक्र का राहु अथवा केतु के साथ द्वादशांश रहित(१५०°)दृष्टि योग बन जाय तो दृष्टा व दृश्य ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहें हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि संबन्ध की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है ।

बुध या शुक्र का राहु अथवा केतु के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इस दृष्टि योग को बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहें हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अंतर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही होता है ।

बुध या शुक्र का राहु अथवा केतु के साथ अष्टमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग होरहा हो तो यह दृष्टि सम्बन्ध बनानेवाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक होता है ।

बुध या शुक्र का हर्शल के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

बुध या शुक्र का हर्शल के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो गेहूं, चावल, अनाज, खाद्य पदार्थ, सिल्क, सूत, शक्कर, रुई, तांबा, जूट का सामान, चाँदी, लेशियन सिल्क, मिष्टान्न, मोती, कांच का सामान बिजली, मिट्टी की वस्तुएं, टेलीग्राम, वायरलेस, कार, मोटर, ट्राम्बे, बस, फिल्म उद्योग, वाटर उद्योग, एलयूमिनियम उद्योग आदि बुध या शुक्र व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाने वाले ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है ।

बुध या शुक्र का हर्शल के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि योग बन रहा हो तो बुध या शुक व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है। इसी प्रकार यदि बुध या शुक्र का हर्शल के साथ तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो ३ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग की तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा यदि चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बन्ध बने तो ४ दिन के अन्तर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी की तिहाई से कुछ अधिक की मंदी समझें ।

बुध या शुक्र का हर्शल के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत येग्रह यहयोग बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २।। दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव समझें यह योग अपना प्रभाव २ दिन के अन्तर्गत प्रकट करता है ।

बुध या शुक्र का हर्शल के साथ अष्टमांश (४५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो बुध या शुक्र व हर्शल के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत

की वस्तुओं में ११। दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

बुध या शुक्र का हर्शल के साथ नवांश (४०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो बुध या शुक्र व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत बुध या शुक्र व हर्शल भ्रमण करते हुए इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है इसी प्रकार से ही इन ग्रहों के दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव भी २४ घण्टे में नवांश दृष्टि योग के तुल्य ही होता है और इन ग्रहों के पंचदशांश (२४°) व षोडशांश [२२/३०°] दृष्टि सम्बन्ध क्रमशः १८ व १५ घन्टे के अन्तर्गत पंचमांश दृष्टि योग का तेजी के आधे के तुल्य अपना प्रभाव प्रकट करते है।

बुध या शुक्र का हर्शल के साथ अष्टादशांश [२०°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो बुध या शुक्र व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टियोग की मंदी के आधे के बराबर होता है।

बुध या शुक्र का हर्शल के साथ त्रिंशांश [१८°] दृष्टि योग बन जाय तो इन ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत बुध या शुक्र व हर्शल भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

बुध या शुक्र का हर्शल के साथ चतुर्विंशांश [१५°] दृष्टि योग बन रहा हो तो बुध या शुक्र व चन्द्र हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की

वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

बुध या शुक्र का हर्शल के साथ त्रिशांश [१२°] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो बुध या शुक्र व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षोडशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है। इसी प्रकार इन ग्रहों के चत्वारिंशांश [९°] व षष्ठ्यांश [६°] दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव भी त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के समान ही होता है किन्तु यह तेजी क्रमशः ३ घण्टे व २ घण्टे के अन्तर्गत आती है।

बुध या शुक्र का हर्शल के साथ द्वादशांश रहित [१५०°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो बुध या शुक्र व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है।

बुध या शुक्र का हर्शल के साथ दशमांश रहित [१४४°] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव रखती है।

बुध या शुक्र का हर्शल के साथ अष्टमांश रहित [१३५°] दृष्टि योग बन जाय तो बुध या शुक्र व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना करते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

बुध या शुक्र का नेपच्यून के साथ दृष्टि योग प्रभाव

जब बुध या शुक्र का नेपच्यून के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि योग बन रहा हो तो गेहूं चावल, अनाज, खाद्य पदार्थ सिल्क, सूत, शक्कर, रुई, जूट का सामान, तांबा, चांदी, लेसियनसिल्क, मिष्ठान्न, मोती कांचका उद्योग, पुष्प, सुगंधित पदार्थ शराब, चाय, कपास, औषधि, तेल, मत्स्य उद्योग, तम्बाकू, सिंडीकेट आदि बुध या शुक्र व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

बुध या शुक्र का शनि के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो बुध या शुक्र व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है। यदि इसी प्रकार बुध या शुक्र का नेपच्यून न से तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो ३ दिन के अन्तर्गत उक्त योग की तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी और यदि चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बंध बने तो ४ दिन के अंतर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई से कुछ अधिक की मंदी समझें।

बुध या शुक्र का नेपच्यून के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन जाय तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत बुध या शुक्र व नेपच्यून भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है और इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्ठयांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव भी इसी योग के समान ही ३ दिन के अन्तर्गत होता है।

बुध या शुक्र का नेपच्यून के साथ अष्ठमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो बुध या शुक्र व नेपच्यून के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत

ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है ।

बुध या शुक्र का नेपच्यून के साथ नवांश (४०°) दृष्टि योग बन जाय तो बुध या शुक्र व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि-गत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्टांश दृष्टी सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के बराबर होता है इसी प्रकार २४ घण्टे के अन्तर्गत इतना ही प्रभाव दशांश (३६°) व द्वादशांश(३०°) दृष्टि सम्बन्ध योग बनने से होगा तथा पंचदशांश (२४°) व षोडशांश (२२/३०°) दृष्टि सम्बन्ध बने तो क्रमशः १८ व १५ घण्टे के अन्तर्गत षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर तेजी आता है ।

बुध या शुक्र का नेपच्यून के साथ अष्टादशांश (२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो बुध या शुक्र व नेपच्यून के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर की होती है ।

बुध या शुक्र का नेपच्यून के साथ विंशांश (१८°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो बुध या शुक्र व नेपच्यून के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत इस योग की रचना के समय ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है ।

बुध या शुक्र का नेपच्यून के साथ चतुर्विंशांश (१५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो बुध या शुक्र व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये ग्रह जिन राशि गत भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन

राशि गत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होती है।

बुध या शुक्र का नेपच्यून के साथ त्रिशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत बुध या शुक्र व ननेपच्यून भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में ४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है और जब चत्वारिशांश (९°) या षष्ठयांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध ये ग्रह बनायें तो क्रमशः ३ घण्टे व ४ घन्टे के अन्तर्गत इतनी ही तेजी आवेगी।

बुध या शुक्र का नेपच्यून के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो बुध या शुक्र व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत का वस्तुओं में १० दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर होता है।

बुध या शुक्र का नेपच्यून के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो बुध या शुक्र व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव प्रकट करती है।

बुध या शुक्र का नेपच्यून के साथ अष्ठमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो बुध या शुक्र व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत बुध या शुक्र व नेपच्यू नभ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हो उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजा के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

बुध या शुक्र का प्लूटो के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

बुध या शुक्र का प्लूटो के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो चांदी, चावल, गेहूं अनाज, खाद्य, पदार्थ, सिल्क, सूत, रुई, तांबा, जूट का सामान, शक्कर, चांदी के बर्तन, लेशियन सिल्क, मिष्ठान, मोती, कांच का उद्योग, सुगंधित पदार्थ रबड़ की बनी हुई वस्तुएं, टीन, आर्डनरी शेयर्स, चमड़ा, घड़ियां मशीनरी, तांबा, जस्ता एल्यूमिनियम, तार, रेडियो, वॉयरलेस आदि दृष्टा व दृश्यग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योगको बनाने वाले ग्रह भ्रमण कर रहे हों उनराशिगत की वस्तुओं में ६ दिन केअन्तर्गत तेजीआती है।

बुध या शुक्र का प्लूटो के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है और जब तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो ४ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग के तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा जब चतुर्थांश(६०°) दृष्टि योग बनता हो तो ३दिन के अन्तर्गत मंदी आवेगी यह मंदी तृतीयांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी की तिहाई के बराबर होती है।

बुध या शुक्र का प्लूटो के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन रहा हो तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्दर तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के आधे के बराबर होता है और यदि उपरोक्त ग्रह गुरु के साथ षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग बनाये तो ४ दिन के अन्तर्गत इतनी ही प्रभाव वाली तेजी समझना चाहिये।

बुध या शुक्र का प्लूटो के साथ अष्टमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा होतो यह योग बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा

जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होती है।

बुध या शुक्र का प्लूटो के साथ नवांश (४०°) दृष्टि योग बन जाय तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं २४ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्टांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के बराबर होता है इसी प्रकार २४ घण्टे के अन्तर्गत इतना ही प्रभाव दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध योग बनने से होगा तथा पंचदशांश (२४°) या षोडशांश [२२/३०°] दृष्टि सम्बन्ध बने तो क्रमशः १८ व १५ घण्टे के अन्तर्गत षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर तेजी आवेगी।

बुध या शुक्र का प्लूटो के साथ अष्टादशांश [२०°] दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो दृष्टा व दृश्य ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ग्रह हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे केअन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर की होती है।

बुध या शुक्र का प्लूटो के साथ विंशांश [१८°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इस योग को बनाने वाले ग्रहों के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि-गत इस योग की रचना के समय ये ग्रह हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है।

बुध या शुक्र का प्लूटो के साथ चतुर्विंशांश [१५°] दृष्टि योग हो रहा हो तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये ग्रह जिन

राशिगत भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मन्दी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है ।

बुध या शुक्र का प्लूटो के साथ त्रिशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो यह दृष्टि सम्बन्ध बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृष्टा व दृश्य ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर का होता है । और जब चत्वारिंशांश (९°) व षष्ठांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध ये ग्रह बनायें तो क्रमशः ५ घंटे व ३ घंटे के अन्तर्गत इतनी ही तेजी आवेगी ।

बुध या शुक्र का प्लूटो के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो दृष्टा व दृश्य ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहें हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सबन्ध की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है ।

बुध या शुक्र का प्लूटो के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इस दृष्टि योग को बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहें हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अंतर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही होता है ।

बुध या शुक्र का प्लूटो के साथ अष्टमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो यह दृष्टि सम्बन्ध बनानेवाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक होता है ।

गुरु या नेपच्यून का सूर्य के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

गुरु या नेपच्यून का सूर्य के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो टीन, रबड़, चांदी, जस्ता, चना, जूट, विलासता की सामग्री चाय, तेल, कपास, औषधि, मिष्ठान्न, सोना, जवाहरात, गिलट व गिलट की बनी वस्तुएं, चावल, गुड़, तम्बाकू, सर्व प्रकार के शेयर्स, बैंक, बीमाकम्पनी, कपड़ा, घृत, श्वेत वस्तुएं, किराना, मुद्रा नारियल आदि गुरु या नेपच्यून व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाने वाले ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

गुरु या नेपच्युन का सूर्य के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि योग बन रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इसी प्रकार यदि गुरु या नेपच्यून का सूर्य के साथ तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो ४ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग की तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा यदि चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बन्ध बने तो ५ दिन के अन्तर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी की तिहाई से कुछ अधिक की मंदी समझें।

गुरु या नेपच्यून का सूर्य के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह यह योग बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३।। दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव समझें यह योग अपना प्रभाव ३ दिन के अन्तर्गत प्रकट करता है।

गुरु या नेपच्यून का सूर्य के साथ अष्टमांश(४५°)दृष्टि योग हो रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व सूर्य के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत

की वस्तुओं में २ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

गुरु या नेपच्यून का सूर्य के साथ नवांश (४०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो गुरु या नेपच्यून व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत गुरु या नेपच्यून व सूर्य भ्रमण करते हुए इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है इसी प्रकार से ही इन ग्रहों के दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव भी १॥ दिन में नवांश दृष्टि योग के तुल्य ही होता है और इन ग्रहों के पंचदशांश (२४°) व षोडशांश [२२/३०°] दृष्टि सम्बन्ध क्रमशः २० व १६ घन्टे के अन्तर्गत पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य अपना प्रभाव प्रकट करते है।

गुरु या नेपच्यून का सूर्य के साथ अष्टादशांश [२०°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १२ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टियोग की मंदी के आधे के बराबर होता है।

गुरु या नेपच्यून का सूर्य के साथ त्रिशांश [१८°] दृष्टि योग बन जाय तो इन ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत गुरु या नेपच्यून व सूर्य भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

गुरु या नेपच्यून का सूर्य के साथ चतुर्विंशांश [१५°] दृष्टि योग बन रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की

वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

गुरु या नेपच्यून का सूर्य के साथ त्रिंशांश [१२°] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षोडशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है। इसी प्रकार इन ग्रहों के चत्वारिंशांश [९°] व षष्ठयांश [६°] दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव भी त्रिंशांश दृष्टि योग की तेजी के समान ही होता है किन्तु यह तेजी क्रमशः ४ घण्टे व ३ घण्टे के अन्तर्गत आती है।

गुरु या नेपच्यून का सूर्य के साथ द्वादशांश रहित [१५०°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है।

गुरु या नेपच्यून का सूर्य के साथ दशमांश रहित [१४४°] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव रखती है।

गुरु या नेपच्यून का सूर्य के साथ अष्टमांश रहित [१३५°] दृष्टि योग बन जाय तो गुरु या नेपच्यून व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना करते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

गुरु या नेपच्यून का चन्द्र के साथ दृष्टि योग प्रभाव

जब गुरु या नेपच्यून का चन्द्र के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि योग बन रहा हो तो गुड़, तेल, टीन, रबड़, चांदी, जस्ता, चना, जूट, तम्बाकू, विलासता की सामग्री, चाय, कपास, काफ़ी, औषधि, पैट्रोलियम के शेअर्स, साधारण आयल शेअर्स, घृत, शराब कांच व कांचकासामान नारियल किराना आदि गुरु या नेपच्यून व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

गुरु या नेपच्यून का चन्द्र के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है। यदि इसी प्रकार गुरु या नेपच्यून का चन्द्र से तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो ४ दिन के अन्तर्गत उक्त योग की तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी और यदि चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बंध बने तो ५ दिन के अंतर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई से कुछ अधिक की मंदी समझें।

गुरु या नेपच्यून का चन्द्र के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन जाय तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत गुरु या नेपच्यून व चन्द्र भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३॥ दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है और इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव भी इसी योग के समान ही ३ दिन के अन्तर्गत होता है।

गुरु या नेपच्यून का चन्द्र के साथ अष्ठमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व चन्द्र के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत

ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हो उन राशिगत की वस्तुओं में ३ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है

गुरु या नेपच्यून का चन्द्र के साथ नवांश (४०°) दृष्टि योग बन जाय तो गुरु या नेपच्यून व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि-गत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १॥ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्टांश दृष्टी सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के बराबर होता है इसी प्रकार १॥ दिन के अन्तर्गत इतना ही प्रभाव दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध योग बनने से होगा तथा पंचदशांश (२४°) व षोडशांश (२२/३०°) दृष्टि सम्बन्ध बने तो क्रमशः २० व १८ घण्टे के अन्तर्गत षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर तेजी आती है

गुरु या नेपच्यून का चन्द्र के साथ अष्टादशांश (२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो गुरु या नेपच्यून व चन्द्र के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में १२ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर की होती है

गुरु या नेपच्यून का चन्द्र के साथ विशांश (१८°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो गुरु या नेपच्युन व चन्द्र के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत इस योग की रचना के समय ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है

गुरु या नेपच्यून का चन्द्र के साथ चतुर्विंशांश (१५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये ग्रह जिन राशि गत भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन

राशि गत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी अष्टा-दशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होती है।

गुरु या नेपच्यून का चन्द्र के साथ त्रिशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत गुरु या नेपच्यून व चन्द्र भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है और जब चत्वारिंशांश (९°) या षष्ठयांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध ये ग्रह बनायें तो क्रमशः ३ घण्टे व ४ घन्टे के अन्तर्गत इतनी ही तेजी आवेगी।

गुरु या नेपच्यून का चन्द्र के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो गुरु या नेपच्यून व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर होता है।

गुरु या नेपच्यून का चन्द्र के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव प्रकट करती है।

गुरु या नेपच्यून का चन्द्र के साथ अष्ठमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत गुरु या नेपच्यून व चन्द्र भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हो उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

गुरु या नेपच्यून का मंगल के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

गुरु या नेपच्यून का मंगल के साथ पूर्णांश(०°)दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो टीन, चांदी, जस्ता, चना, जूट, तम्बाकू, विलासता की सामग्री, चाय, कपास, औषधि, मिष्ठान, तेल, मत्स्य उद्योग, सोना, चावल, तिलहन, मशीनरी, लोहा, ईंट, काफी, जायदाद आदि दृष्टा व दृश्य ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योगको बनाने वाले ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

गुरु या नेपच्यून का मंगल के साथ द्वितीयांश (१८० °) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है और जब तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो ४ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग के तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा जब चतुर्थांश(९०°) दृष्टि योग बनता हो तो ५ दिन के अन्तर्गत मंदी आवेगी यह मंदी तृतीयांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी की तिहाई के बराबर होती है।

गुरु या नेपच्यून का मंगल के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन रहा हो तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३॥ दिन के अन्दर तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के आधे के बराबर होता है और यदि उपरोक्त ग्रह गुरु के साथ षष्ठांश (६० °) दृष्टि योग बनाये तो ३ दिन के अन्तर्गत इतनी ही प्रभाव वाली तेजी समझना चाहिये।

गुरु या नेपच्यून का मंगल के साथ अष्टमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो यह योग बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा

जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १॥ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होती है।

गुरु या नेपच्यून का मंगल के साथ नवांश (४०°) दृष्टि योग बन जाय तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं १॥ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्टांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के बराबर होता है इसी प्रकार २४ घण्टे के अन्तर्गत इतना ही प्रभाव दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध योग बनने से होगा तथा पंचदशांश (२४°) या षोडशांश [२२/३०°] दृष्टि सम्बन्ध बने तो क्रमशः २० व १८ घण्टे के अन्तर्गत षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर तेजी आवेगी।

गुरु या नेपच्यून का मंगल के साथ अष्टादशांश [२०°] दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो दृष्टा व दृश्य ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ग्रह हों उन राशिगत की वस्तुओं में १२ घण्टे केअन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर की होती है।

गुरु या नेपच्यून का मंगल के साथ विंशांश [१८°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इस योग को बनाने वाले ग्रहों के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग की रचना के समय ये ग्रह हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है।

गुरु या नेपच्यून का मंगल के साथ चतुर्विंशांश [१५°] दृष्टि योग हो रहा हो तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये ग्रह जिन

राशिगत भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मन्दी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

गुरु या नेपच्यून का मंगल के साथ त्रिशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो यह दृष्टि सम्बन्ध बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृष्टा व दृश्य ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ५ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर का होता है। और जब चत्वारिंशांश (६°) व षष्ठांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध ये ग्रह बनायें तो क्रमशः ४ घंटे व ३ घंटे के अन्तर्गत इतनी ही तेजी आवेगी।

गुरु या नेपच्यून का मंगल के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो दृष्टा व दृश्य ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सबन्ध की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है।

गुरु या नेपच्यून का मंगल के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इस दृष्टि योग को बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहें हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही होता है।

गुरु या नेपच्यून का मंगल के साथ अष्टमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो यह दृष्टि सम्बन्ध बनानेवाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक होता है।

गुरु या नेपच्यून का बुध के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

गुरु या नेपच्युन का बुध के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो टीन, रबड़, चांदी, जस्ता, चना, जूट, विलासता की सामग्री चाय, कपास, औषधि, मिष्ठान्न, गेंहू, चावल, खाद्य-पदार्थ, सिल्क, जूट शक्कर, गुड़, तम्बाकु, सर्व प्रकार के शेयर्स, बेंक, बीमाकम्पनी, कपड़ा, घृत, श्वेत वस्तुएं, रुई, सफेद वस्त्र ज्वार आदि गुरु या नेपच्यून व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाने वाले ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है ।

गुरु या नेपच्युन का बुध के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि योग बन रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इसी प्रकार यदि गुरु या नेपच्यून का सूर्य के साथ तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो ४ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग की तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा यदि चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बन्ध बने तो ५ दिन के अन्तर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी की तिहाई से कुछ अधिक की मंदी समझें ।

गुरु या नेपच्यून का बुध के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह यह योग बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३॥ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव समझें यह योग अपना प्रभाव ३ दिन के अन्तर्गत प्रकट करता है ।

गुरु या नेपच्यून का बुध के साथ अष्टमांश (४५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व बुध के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत

की वस्तुओं में २ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

गुरु या नेपच्यून का बुध के साथ नवांश (४०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो गुरु या नेपच्यून व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत गुरु या नेपच्यून व बुध भ्रमण करते हुए इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है इसी प्रकार से ही इन ग्रहों के दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव भी १॥ दिन में नवांश दृष्टि योग के तुल्य ही होता है और इन ग्रहों के पंचदशांश (२४°) व षोडशांश [२२/३०°] दृष्टि सम्बन्ध क्रमशः २० व १६ घन्टे के अन्तर्गत पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य अपना प्रभाव प्रकट करते है।

गुरु या नेपच्यून का बुध के साथ अष्टादशांश [२०°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १२ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टियोग की मंदी के आधे के बराबर होता है।

गुरु या नेपच्यून का बुध के साथ त्रिशांश [१८°] दृष्टि योग बन जाय तो इन ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत गुरु या नेपच्यून व बुध भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

गुरु या नेपच्यून का बुध के साथ चतुर्विशांश [१५°] दृष्टि योग बन रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की

वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

गुरु या नेपच्यून का बुध के साथ त्रिशांश [१२°] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षोडशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है। इसी प्रकार इन ग्रहों के चत्वारिंशांश [९°] व षष्ठयांश [६°] दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव भी त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के समान ही होता है किन्तु यह तेजी क्रमशः ४ घण्टे व ३ घण्टे के अन्तर्गत आती है।

गुरु या नेपच्यून का बुध के साथ द्वादशांश रहित [१५०°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है।

गुरु या नेपचून का बुध के साथ दशमांश रहित [१४४°] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव रखती है।

गुरु या नेपच्यून का बुध के साथ अष्टमांश रहित [१३५°] दृष्टि योग बन जाय तो गुरु या नेपच्यून व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना करते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

गुरु या नेपच्यून का शुक्र के साथ दृष्टि योग प्रभाव

जब गुरु या नेपच्यून का शुक्र के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि योग बन रहा हो तो गुड़, तेल, टीन, रबड़, चांदी, जस्ता, चना, जूट, तम्बाकू, विलासता की सामग्री, चाय, कपास, काफ़ी, औषधि, रुई, जूट का सामान, शक्कर, सूत, कपड़ा लेशियन सिल्क मोती, पुष्प, सुगंधित पदार्थ आदि गुरु या नेपच्यून व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

गुरु या नेपच्यून का शुक्र के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की-रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है। यदि इसी प्रकार गुरु या नेपच्यून का शुक्र से तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो ४ दिन के अन्तर्गत उक्त योग की तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी और यदि चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बंध बने तो ५ दिन के अंतर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई से कुछ अधिक की मंदी समझें।

गुरु या नेपच्यून का शुक्र के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन जाय तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत गुरु या नेपच्यून व शुक्र, भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३॥ दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है और इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव भी इसी योग के समान ही ३ दिन के अन्तर्गत होता है।

गुरु या नेपच्यून का शुक्र के साथ अष्ठमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व चन्द्र के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत

ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है

गुरु या नेपच्यून का शुक्र के साथ नवांश (४०°) दृष्टि योग बन जाय तो गुरु या नेपच्यून व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि-गत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहें हों उन राशिगत की वस्तुओं में १।। दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्टांश दृष्टी सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के बराबर होता है इसी प्रकार १।। दिन के अन्तर्गत इतना ही प्रभाव दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध योग बनने से होगा तथा पंचदशांश (२४°) व षोडशांश (२२/३०°) दृष्टि सम्बन्ध बने तो क्रमशः २० व १८ घण्टे के अन्तर्गत षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर तेजी आती है

गुरु या नेपच्यून का शुक्र के साथ अष्टादशांश (२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो गुरु या नेपच्यून व शुक्र के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में १२ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के-बराबर की होती है

गुरु या नेपच्यून का शुक्र के साथ विंशांश (१८°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व शुक्र के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत इस योग की रचना के समय ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है

गुरु या नेपच्यून का शुक्र के साथ चतुर्विंशांश (१५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये ग्रह जिन राशि गत भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन

राशि गत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी अष्टा-दशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होती है।

गुरु या नेपच्यून का शुक्र के साथ विंशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत गुरु या नेपच्यून व शुक्र भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है और जब चत्वारिंशांश (९°) या षष्ठयांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध ये ग्रह बनायें तो क्रमशः ३ घण्टे व ४ घन्टे के अन्तर्गत इतनी ही तेजी आवेगी।

गुरु या नेपच्यून का शुक्र के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो गुरु या नेपच्यून व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर होता है।

गुरु या नेपच्यून का शुक्र के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव प्रकट करती है।

गुरु या नेपच्यून का शुक्र के साथ अष्ठमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत गुरु या नेपच्यून व शुक्र भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हो उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

गुरु या नेपच्यून का शनि के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

गुरु या नेपच्यून का शनि के साथ पूर्णांश(०°)दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो टीन, चांदी, जस्ता, चना, जूट, तम्बाकू, विलासता की सामग्री, चाय, कपास, औषधि, मिष्ठान, तेल, मत्स्यउद्योग,मशीनरी,लोहा,रबड़, अरण्डा कोयला, सीमेण्ट, सीमेण्ट का सामान,तांबा, अलसी, कालीमिर्च मीठातेल, मूंगफली आदि दृष्टा व दृश्य ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योगको बनाने वालेग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है ।

गुरु या नेपच्यून का शनि के साथ द्वितीयांश (१८० °) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है और जब तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो ४ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग के तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा जब चतुर्थांश(९०°) दृष्टि योग बनता हो तो ५दिन के अन्तर्गत मंदी आवेगी यह मंदी तृतीयांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी की तिहाई के बराबर होती है ।

गुरु या नेपच्यून का शनि के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन रहा हो तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३॥ दिन के अन्दर तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के आधे के बराबर होता है और यदि उपरोक्त ग्रह गुरु के साथ षष्ठांश (६० °) दृष्टि योग बनाये तो ३ दिन के अन्तर्गत इतनी ही प्रभाव वाली तेजी समझना चाहिये ।

गुरु या नेपच्यून का शनि के साथ अष्टमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो यह योग बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा

जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १।। दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होती है।

गुरु या नेपच्यून का शनि के साथ नवांश (४०°) दृष्टि योग बन जाय तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं १।। दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्टांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के बराबर होता है इसी प्रकार २४ घण्टे के अन्तर्गत इतना ही प्रभाव दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध योग बनने से होगा तथा पंचदशांश (२४°) या षोडशांश [२२/३०°] दृष्टि सम्बन्ध बने तो क्रमशः २० व १८ घण्टे के अन्तर्गत षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर तेजी आवेगी।

गुरु या नेपच्यून का शनि के साथ अष्टादशांश [२०°] दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो दृष्टा व दृश्य ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ग्रह हों उन राशिगत की वस्तुओं में १२ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर की होती है।

गुरु या नेपच्यून का शनि के साथ विंशांश [१८°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इस योग को बनाने वाले ग्रहों के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि-गत इस योग की रचना के समय ये ग्रह हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है।

गुरु या नेपच्यून का शनि के साथ चतुर्विंशांश [१५°] दृष्टि योग हो रहा हो तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये ग्रह जिन

राशिगत भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मन्दी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

गुरु या नेपच्यून का शनि के साथ त्रिशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो यह दृष्टि सम्बन्ध बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृष्टा व दृश्य ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ५ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर का होता है। और जब चत्वारिंशांश (९°) व षष्ठांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध ये ग्रह बनायें तो क्रमशः ४ घंटे व ३ घंटे के अन्तर्गत इतनी ही तेजी आवेगी।

गुरु या नेपच्यून का शनि के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो दृष्टा व दृश्य ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहें हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सबन्ध की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है।

गुरु या नेपच्यून का शनि के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इस दृष्टि योग को बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहें हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही होता है।

गुरु या नेपच्यून का शनि के साथ अष्टमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो यह दृष्टि सम्बन्ध बनानेवाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक होता है।

गुरु या नेपच्यून का राहु केतु के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

गुरु या नेपच्यून का राहु केतु के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो टीन, रबड़, चांदी, जस्ता, चना, जूट, विलासता की सामग्री चाय, कपास, औषधि, मिष्ठान्न, बैंक, तेल तम्बाकू मत्स उद्योग, पीले वस्त्र, बैंकर्स बीमाकम्पनी, क्लोथ मिल्स आदि गुरु या नेपच्यून व राहु केतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाने वाले ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

गुरु या नेपच्युन का राहु केतु के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि योग बन रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व राहु केतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहेहों उन राशिगत की वस्तुओं में ७दिन के अन्तर्गत मंदी आती है। इसी प्रकार यदि गुरु या नेपच्यून का सूर्य के साथ तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो ४ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग की तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा यदि चतुर्थांश (६०°) दृष्टि सम्बन्ध बने तो ५ दिन के अन्तर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी की तिहाई मे कुछ अधिक की मंदी समझें।

गुरु या नेपच्यून का राहु केतु के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह यह योग बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३।। दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव समझें यह योग अपना प्रभाव ३ दिन के अन्तर्गत प्रकट करता है।

गुरु या नेपच्यून का राहु केतु के साथ अष्टमांश (४५°) दृष्टि योग हो रहाहो तो गुरु या नेपच्यून व राहु केतु के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन

राशिगत की वस्तुओं में २ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

गुरु या नेपच्यून का राहु केतु के साथ नवांश(४०°)दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो गुरु या नेपच्यून व राहुकेतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओंमें तथा जिन राशिगत गुरु या नेपच्यून व राहु केतु भ्रमण करते हुए इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २दिन के अन्तर्गत तेजी आतीहै इस तेजी का प्रभाव पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है इसी प्रकार से ही इन ग्रहों के दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव भी १।। दिन में नवांश दृष्टि योग के तुल्य ही होता है और इन ग्रहों के पंचदशांश (२४°) व षोडशांश [२२/३०°] दृष्टि सम्बन्ध क्रमशः २० व१६घन्टे के अन्तर्गत पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य अपना प्रभाव प्रकट करते हैं।

गुरु या नेपच्यून का राहु केतु के साथ अष्टादशांश[२०°]दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व राहु केतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १२ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टियोग की मंदी के आधे के बराबर होता है।

गुरु या नेपच्यून का राहु केतु के साथ त्रिंशांश [१८°]दृष्टि योग बन जाय तो इन ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत गुरु या नेपच्यून व राहु केतु भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

गुरु या नेपच्यून का राहु केतु के साथ चतुर्विंशांश [१५°] दृष्टि योग बन रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व राहु केतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की

वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

गुरु या नेपच्यून का राहु केतु के साथ त्रिशांश [१२°]दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व राहु केतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षोडशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है। इसी प्रकार इन ग्रहों के चत्वारिंशांश [९°] व षष्ठयांश [६°] दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव भी त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के समान ही होता है किन्तु यह तेजी क्रमशः ४ घण्टे व ३ घण्टे के अन्तर्गत आती है।

गुरु या नेपच्यून का राहु केतु के साथ द्वादशांश रहित [१५०°]दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व राहु केतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ग्रह योग बनाने वाले ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है।

गुरु या नेपयून का राहु केतु के साथ दशमांश रहित [१४४°]दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव रखती है।

गुरु या नेपच्यून का राहु केतु के साथ अष्टमांश रहित [१३५°]दृष्टि योग बन जाय तो गुरु या नेपच्यून व राहु केतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना करते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

गुरु या नेपच्यून का हर्शल के साथ दृष्टि योग प्रभाव

जब गुरु या नेपच्यून का हर्शल के साथ पूर्णांश(०°)दृष्टि योग बन रहा हो तो गुड़, तेल, टीन, रबड़, चांदी, जस्ता, चना, जूट, तम्बाकू, विलासता की सामग्री, चाय, कपास, काफ़ी, औषधि, वायुयान, मिट्टी की वस्तुए, कार, मोटर, बस, ज्वाइण्ट कम्पनी, फिल्म उद्योग, रेल आदि गुरु या नेपच्यून व हर्शल के आधिपत्यत्वकी वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

गुरु या नेपच्यून का हर्शल के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है। यदि इसी प्रकार गुरु या नेपच्यून का शुक्र से तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो ४ दिन के अन्तर्गत उक्त योग की तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी और यदि चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बंध बने तो ५ दिन के अंतर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई से कुछ अधिक की मंदी समझें।

गुरु या नेपच्यून का हर्शल के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन जाय तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत गुरु या नेपच्यून व हर्शल भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३॥ दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है और इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव भी इसी योग के समान ही ३ दिन के अन्तर्गत होता है।

गुरु या नेपच्यून का हर्शल के साथ अष्ठमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व हर्शल के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत

ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है

गुरु या नेपच्यून का हर्शल के साथ नवांश (४०°) दृष्टि योग बन जाय तो गुरु या नेपच्यून व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि-गत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १॥ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्टांश दृष्टी सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के बराबर होता है इसी प्रकार १॥ दिन के अन्तर्गत इतना ही प्रभाव दशांश (३६°) व द्वादशांश(३०°) दृष्टि सम्बन्ध योग बनने से होगा तथा पंचदशांश (२४°) व षोडशांश (२२/३०°) दृष्टि सम्बन्ध बने तो क्रमशः २० व १८ घण्टे के अन्तर्गत षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर तेजी आती है

गुरु या नेपच्यून का हर्शल के साथ अष्टादशांश (२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो गुरु या नेपच्यून व हर्शल के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में १२ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर की होती है

गुरु या नेपच्यून का हर्शल के साथ विंशांश (१८°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व हर्शल के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत इस योग की रचना के समय ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है

गुरु या नेपच्यून का हर्शल के साथ चतुर्विंशांश (१५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये ग्रह जिन राशि गत भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन

राशि गत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी षष्टा-दशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होती है।

गुरु या नेपच्यून का हर्शल के साथ विंशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत गुरु या नेपच्यून व हर्शल भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है और जब चत्वारिंशांश (९°) या षष्ठ्यांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध ये ग्रह बनायें तो क्रमशः ३ घण्टे व ४ घन्टे के अन्तर्गत इतनी ही तेजी आवेगी।

गुरु या नेपच्यून का हर्शल के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो गुरु या नेपच्यून व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर होता है।

गुरु या नेपच्यून का हर्शल के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों, उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव प्रकट करती है।

गुरु या नेपच्यून का हर्शल के साथ अष्ठमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत गुरु या नेपच्यून व हर्शल भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हो उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

गुरु का नेपच्यून के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

गुरु का नेपच्यून के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो टीन, चांदी, जस्ता, चना, जूट, तम्बाकू, विलासिता की सामग्री, चाय, कपास, औषधि, मिष्ठान, तेल, मत्स्यउद्योग, रबड़, सिण्डीकेट आदि दृष्टा व दृश्य ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योगको बनाने वालेग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

गुरु का नेपच्यून के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है और जब तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो ४ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग के तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा जब चतुर्थांश (९०°) दृष्टि योग बनता हो तो ५ दिन के अन्तर्गत मंदी आवेगी यह मंदी तृतीयांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी की तिहाई के बराबर होती है।

गुरु का नेपच्यून के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन रहा हो तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३॥ दिन के अन्दर तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के आधे के बराबर होता है और यदि उपरोक्त ग्रह गुरु के साथ षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग बनाये तो ३ दिन के अन्तर्गत इतनी ही प्रभाव वाली तेजी समझना चाहिये।

गुरु का नेपच्यून के साथ अष्टमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो यह योग बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा

जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १॥ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होती है।

गुरु का नेपच्यून के साथ नवांश (४०°) दृष्टि योग बन जाय तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं १॥ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्टांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के बराबर होता है इसी प्रकार २४ घण्टे के अन्तर्गत इतना ही प्रभाव दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध योग बनने से होगा तथा पंचदशांश (२४°) या षोडशांश [२२/३०°] दृष्टि सम्बन्ध बने तो क्रमशः २० व १८ घण्टे के अन्तर्गत षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर तेजी आवेगी।

गुरु का नेपच्यून के साथ अष्टादशांश [२०°] दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो दृष्टा व दृश्य ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ग्रह हों उन राशिगत की वस्तुओं में १२ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर की होती है।

गुरु का नेपच्यून के साथ विंशांश [१८°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इस योग को बनाने वाले ग्रहों के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग की रचना के समय ये ग्रह हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि-योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है।

गुरु का नेपच्यून के साथ चतुर्विंशांश [१५°] दृष्टि योग हो रहा हो तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये ग्रह जिन

राशिगत भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मन्दी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

गुरु का नेपच्यून के साथ त्रिशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो यह दृष्टि सम्बन्ध बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृष्टा व दृश्य ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ५ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर का होता है। और जब चत्वारिंशांश (६°) व षष्ठांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध ये ग्रह बनायें तो क्रमशः ४ घंटे व ३ घंटे के अन्तर्गत इतनी ही तेजी आवेगी।

गुरु का नेपच्यून के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो दृष्टा व दृश्य ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहें हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सबन्ध की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है।

गुरु का नेपच्यून के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इस दृष्टि योग को बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहें हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अंतर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही होता है।

गुरु का नेपच्यून के साथ अष्टमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग होरहा हो तो यह दृष्टि सम्बन्ध बनानेवाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक होता है।

गुरु या नेपच्यून का प्लूटो के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

गुरु या नेपच्यून का प्लूटो के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो टीन, रबड़, चांदी, जस्ता, चना, जूट, विलासता की सामग्री चाय, कपास, औषधि, मिष्ठान्न, रबड़ की बनी हुई वस्तुएं, आर्डनरी शेअर्स, चमड़ा, घड़ियां,, मशीनरी चमड़ेकीवस्तुएं आदि गुरु या नेपच्यून व प्लूटोके आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाने वाले ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

गुरु या नेपच्युन का प्लूटो के साथ द्वितीयांश(१८०°)दृष्टि योग बन रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहेहों उन राशिगत की वस्तुओं में ७दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इसी प्रकार यदि गुरु या नेपच्यून का सूर्य के साथ तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो ४ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग की तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा यदि चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बन्ध बने तो ५ दिन के अन्तर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी को तिहाई से कुछ अधिक की मंदी समझें।

गुरु या नेपच्यून का प्लूटो के साथ पंचमांश (७२°)दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह यह योग बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३।। दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव समझें यह योग अपना प्रभाव ३ दिन के अन्तर्गत प्रकट करता है।

गुरु या नेपच्यून का प्लूटो के साथ अष्टमांश(४५°)दृष्टि योग हो रहाहो तो गुरु या नेपच्यून व प्लूटो के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन

राशिगत की वस्तुओं में ३ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

गुरु या नेपच्यून का प्लूटो के साथ नवांश(४०°)दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो गुरु या नेपच्यून व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओंमें तथा जिन राशिगत गुरु या नेपच्यून व प्लूटो भ्रमण करते हुए इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २दिन के अन्तर्गत तेजी आतीहै इस तेजी का प्रभाव पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है इसी प्रकार से ही इन ग्रहों के दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव भी १॥ दिन में नवांश दृष्टि योग के तुल्य ही होता है और इन ग्रहों के पंचदशांश (२४°) व षोडशांश [२२/३०°] दृष्टि सम्बन्ध क्रमश: २० व १६घन्टे के अन्तर्गत पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य अपना प्रभाव प्रकट करते है।

गुरु या नेपच्यून का प्लूटो के साथ अष्टादशांश[२०°]दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १२ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टियोग की मंदी के आधे के बराबर होता है।

गुरु या नेपच्यून का प्लूटो के साथ त्रिंशांश [१८°]दृष्टि योग बन जाय तो इन ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत गुरु या नेपच्यन व प्लूटो भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

गुरु या नेपच्यून का प्लूटो के साथ चतुर्विशांश [१५°] दृष्टि योग बन रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की

वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

गुरु या नेपच्यून का प्लूटो के साथ त्रिशांश [१२°]दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि-गत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षोडशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है। इसी प्रकार इन ग्रहों के चत्वारिंशांश [९°] व षष्ठयांश [६°] दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव भी त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के समान ही होता है किन्तु यह तेजी क्रमशः ४ घण्टे व ३ घण्टे के अन्तर्गत आती है।

गुरु या नेपच्यून का प्लूटो के साथ द्वादशांश रहित [१५०°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो गुरु या नेपच्यून व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है।

गुरु या नेपयून का प्लूटो के साथ दशमांश रहित [१४४°] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव रखती है।

गुरु या नेपच्यून का प्लूटो के साथ अष्टमांश रहित [१३५°] दृष्टि योग बन जाय तो गुरु या नेपच्यून व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना करते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

शनि या हर्शल का सूर्य के साथ दृष्टि योग प्रभाव

जब शनि या हर्शल का सूर्य के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि योग बन रहा हो तो कोयला, सीमेण्ट, सीमेण्ट का सामान, अलसी, ऊन, तिलहन, काली मिर्च लोहा मूंगफली, अरंडा, जूट, रील, मिट्टी की वस्तुएं, कार मोटर, बस, फिल्म उद्योग, सोना, जवाहरात, गिलट आदि शनि या हर्शल व सूर्य के आधिपत्यत्वकी वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

शनि या हर्शल का सूर्य के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो शनि या हर्शल व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है। यदि इसी प्रकार शनि या हर्शल का सूर्य से तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो ४ दिन के अन्तर्गत उक्त योग की तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी और यदि चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बंध बने तो ५ दिन के अंतर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई से कुछ अधिक की मंदी समझें।

शनि या हर्शल का सूर्य के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन जाय तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत शनि या हर्शल व सूर्य भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३॥ दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है और इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव भी इसी योग के समान ही ३ दिन के अन्तर्गत होता है।

शनि या हर्शल का सूर्य के साथ अष्ठमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो शनि या हर्शल व सूर्य के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत

ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है

शनि या हर्शल का सूर्य के साथ नवांश (४०°) दृष्टि योग बन जाय तो शनि या हर्शल व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि-गत वे ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १॥ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्टांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के बराबर होता है इसी प्रकार १॥ दिन के अन्तर्गत इतना ही प्रभाव दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध योग बनने से होगा तथा पंचदशांश (२४°) व षोडशांश (२२/३०°) दृष्टि सम्बन्ध बने तो क्रमशः २० व १८ घण्टे के अन्तर्गत षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर तेजी आती है

शनि या हर्शल का सूर्य के साथ अष्टादशांश (२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो शनि या हर्शल व सूर्य के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में १२ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर की होती है

शनि या हर्शल का सूर्य के साथ विंशांश (१८°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो शनि या हर्शल व सूर्य के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत इस योग की रचना के समय ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है

शनि या हर्शल का सूर्य के साथ चतुर्विंशांश (१५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो शनि या हर्शल व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये ग्रह जिन राशि गत भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन

राशि गत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी षष्टा-दशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होती है।

शनि या हर्शल का सूर्य के साथ विंशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत शनि या हर्शल व सूर्य भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है और जब चत्वारिंशांश (९°) या षष्ठयांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध ये ग्रह बनायें तो क्रमशः ३ घण्टे व ४ घन्टे के अन्तर्गत इतनी ही तेजी आवेगी।

शनि या हर्शल का सूर्य के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो शनि या हर्शल व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर होता है।

शनि या हर्शल का सूर्य के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो शनि या हर्शल व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव प्रकट करती है।

शनि या हर्शल का सूर्य के साथ अष्ठमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो शनि या हर्शल व सूर्य के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत शनि या हर्शल व सूर्य भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

शनि या हर्शल का चन्द्र के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

शनि या हर्शल का चन्द्र के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो कोयला, सीमेण्ट, सीमेण्ट की बनी वस्तुएं, तांबा, अलसी, ऊन, तिलहन, काली मिर्च, मीठा तेल, मूंगफली, लोहा, जूते, रील, संगमरमर, बिजली, मिट्टी की वस्तुएं, कार, मोटर, बस, चांदी, जौ, द्रव्य, शराब, कांच व कांच का सामान, घृत आदि दृष्टा व दृश्य ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाने वाले ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

शनि या हर्शल का चन्द्र के साथ द्वितीयांश (१८० °) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है और जब तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो ४ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग के तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा जब चतुर्थांश (९०°) दृष्टि योग बनता हो तो ५ दिन के अन्तर्गत मंदी आवेगी यह मंदी तृतीयांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी की तिहाई के बराबर होती है।

शनि या हर्शल का चन्द्र के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन रहा हो तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३॥ दिन के अन्दर तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के आधे के बराबर होता है और यदि उपरोक्त ग्रह चन्द्र के साथ षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग बनाये तो ३ दिन के अन्तर्गत इतनी ही प्रभाव वाली तेजी समझना चाहिये।

शनि या हर्शल का चन्द्र के साथ अष्टमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो यह योग बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा

जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २।। दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

शनि या हर्शल का चन्द्र के साथ नवांश (४०°) दृष्टि योग बन जाय तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं १।। दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्टांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के बराबर होता है इसी प्रकार २४ घण्टे के अन्तर्गत इतना ही प्रभाव दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध योग बनने से होगा तथा पंचदशांश (२४°) या षोडशांश [२२/३०°] दृष्टि सम्बन्ध बने तो क्रमशः २० व १८ घण्टे के अन्तर्गत षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर तेजी आवेगी।

शनि या हर्शल का चन्द्र के साथ अष्टादशांश [२०°] दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो दृष्टा व दृश्य ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ग्रह हों उन राशिगत की वस्तुओं में १२ घण्टे केअन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर की होती है।

शनि या हर्शल का चन्द्र के साथ विंशांश [१८°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इस योग को बनाने वाले ग्रहों के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि-गत इस योग की रचना के समय ये ग्रह हों उन राशिगत की वस्तुओं में १०घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है।

शनि या हर्शल का चन्द्र के साथ चतुर्विंशांश [१५°] दृष्टि योग हो रहा हो तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये ग्रह जिन

राशिगत भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मन्दी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

शनि या हर्शल का चन्द्र के साथ त्रिशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो यह दृष्टि सम्बन्ध बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृष्टा व दृश्य ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ५ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर का होता है। और जब चत्वारिंशांश (९°) व षष्ठांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध ये ग्रह बनायें तो क्रमशः ४ घंटे व ३ घंटे के अन्तर्गत इतनी ही तेजी आवेगी।

शनि या हर्शल का चन्द्र के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो दृष्टा व दृश्य ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहें हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सबन्ध की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है।

शनि या हर्शल का चन्द्र के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इस दृष्टि योग को बनाने वाले ग्रहो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहें हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही होता है।

शनि या हर्शल का चन्द्र के साथ अष्टमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो यह दृष्टि सम्बन्ध बनानेवाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक होता है।

शनि या हर्शल का मंगल के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

शनि या हर्शल का मंगल के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो कोयला, सीमेण्ट व सीमेण्ट का सामान, अलसी, ऊन, तिलहन, काली मिर्च, लोहा, मूंगफली, अरंड, जूते, रील, मिट्टी की वस्तुए, कार, मोटर, बस, सोना, चावल, ईंट, काफी, मशीनरी, जायदाद, चाय, लाल वस्तुएं रेलवे शेअर्स धातु खनिज उद्योग, संगमरमर आदि शनि या हर्शल व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाने वाले ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

शनि या हर्शल का मंगल के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि योग बन रहा हो तो शनि या हर्शल व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है। इसी प्रकार यदि शनि या हर्शल का मंगल के साथ तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो ४ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग की तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा यदि चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बन्ध बने तो ५ दिन के अन्तर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी की तिहाई से कुछ अधिक की मंदी समझें।

शनि या हर्शल का मंगल के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह यह योग बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३।। दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव समझें यह योग अपना प्रभाव ३ दिन के अन्तर्गत प्रकट करता है।

शनि या हर्शल का मंगल के साथ अष्टमांश (४५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो शनि या हर्शल व मंगल के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा

जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

शनि या हर्शल का मंगल के साथ नवांश (४०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो शनि या हर्शल व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओंमें तथा जिन राशिगत शनि या हर्शल व मंगल भ्रमण करते हुए इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २दिन के अन्तर्गत तेजी आतीहै इस तेजी का प्रभाव पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है इसी प्रकार से ही इन ग्रहों के दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव भी १।। दिन में नवांश दृष्टि योग के तुल्य ही होता है और इन ग्रहों के पंचदशांश (२४°) व षोडशांश [२२/३०°] दृष्टि सम्बन्ध क्रमशः २० व१६घन्टे के अन्तर्गत पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य अपना प्रभाव प्रकट करते है।

शनि या हर्शल का मंगल के साथ अष्टादशांश[२०°]दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो शनि या हर्शल व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १२ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टियोग की मंदी के आधे के बराबर होता है।

शनि या हर्शल का मंगल के साथ विंशांश [१८°]दृष्टि योग बन जाय तो इन ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत शनि या हर्शल व मंगल भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

शनि या हर्शल का मंगल के साथ चतुर्विंशांश [१५°] दृष्टि योग बन रहा हो तो शनि या हर्शल व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की

वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

शनि या हर्शल का मंगल के साथ त्रिशांश [१२°] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो शनि या हर्शल व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षोडशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है। इसी प्रकार इन ग्रहों के चत्वारिंशांश [९°] व षष्ठयांश [६°] दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव भी त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के समान ही होता है किन्तु यह तेजी क्रमशः ४ घण्टे व ३ घण्टे के अन्तर्गत आती है।

शनि या हर्शल का मंगल के साथ द्वादशांश रहित [१५०°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो शनि या हर्शल व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है।

शनि या हर्शल का मंगल के साथ दशमांश रहित [१४४°] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव रखती है।

शनि या हर्शल का मंगल के साथ अष्टमांश रहित [१३५°] दृष्टि योग बन जाय तो शनि या हर्शल व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना करते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

शनि या हर्शल का बुध के साथ दृष्टि योग प्रभाव

यदि शनि या हर्शल का बुध के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि योग बन रहा हो तो कोयला, सीमेण्ट, सीमेण्ट का सामान, अलसी, ऊन, तिलहन, काली मिर्च लोहा मूंगफली, अरंडा, जूट, रील, मिट्टी की वस्तुएं, कार मोटर, बस, फिल्म उद्योग, गेहूं, अनाज, खाद्य पदार्थ, सफेद वस्तुएं आदि शनि या हर्शल व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

शनि या हर्शल का बुध के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो शनि या हर्शल व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है। यदि इसी प्रकार शनि या हर्शल का बुध से तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो ४ दिन के अन्तर्गत उक्त योग की तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी और यदि चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बंध बने तो ५ दिन के अंतर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई से कुछ अधिक की मंदी समझें।

शनि या हर्शल का बुध के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन जाय तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत शनि या हर्शल व बुध भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३॥ दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है और इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव भी इसी योग के समान ही ३ दिन के अन्तर्गत होता है।

शनि या हर्शल का बुध के साथ अष्ठमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो शनि या हर्शल व बुध के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत

ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है

शनि या हर्शल का बुध के साथ नवांश (४०°) दृष्टि योग बन जाय तो शनि या हर्शल व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि-गत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १॥ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्टांश दृष्टी सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के बराबर होता है इसी प्रकार १॥ दिन के अन्तर्गत इतना ही प्रभाव दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध योग बनने से होगा तथा पंचदशांश (२४°) व षोडशांश (२२/३०°) दृष्टि सम्बन्ध बने तो क्रमशः २० व १८ घण्टे के अन्तर्गत षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर तेजी आती है

शनि या हर्शल का बुध के साथ अष्टादशांश (२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो शनि या हर्शल व बुध के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में १२ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर की होती है

शनि या हर्शल का बुध के साथ विशांश (१८°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो शनि या हर्शल व बुध के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत इस योग की रचना के समय ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है

शनि या हर्शल का बुध के साथ चतुर्विंशांश (१५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो शनि या हर्शल व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये ग्रह जिन राशि गत भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन

राशि गत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी षष्टा-दशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होती है।

शनि या हर्शल का बुध के साथ त्रिंशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत शनि या हर्शल व बुध भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है और जब चत्वारिंशांश (९°) या षष्ठयांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध ये ग्रह बनायें तो क्रमशः ३ घण्टे व ४ घण्टे के अन्तर्गत इतनी ही तेजी आवेगी।

शनि या हर्शल का बुध के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो शनि या हर्शल व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर होता है।

शनि या हर्शल का बुध के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो शनि या हर्शल व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव प्रकट करती है।

शनि या हर्शल का बुध के साथ अष्ठमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो शनि या हर्शल व बुध के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत शनि या हर्शल व बुध भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हो उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

शनि या हर्शल का गुरु के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

शनि या हर्शल का गुरु के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो कोयला, सीमेण्ट, सीमेण्ट की बनी वस्तुएं, तांबा, अलसी, अरंडा, ऊन, तिलहन, काली मिर्च, मीठा तेल, मूंगफली, लोहा, जूते, रील, संगमरमर, टीन, रबड़, चांदी, जस्ता, चना, जूट, तम्बाकू, विलासता की सामग्री, आदि दृष्टा व दृश्य ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाने वाले ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

शनि या हर्शल का गुरु के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है और जब तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो ४ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग के तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा जब चतुर्थांश(९०°) दृष्टि योग बनता हो तो ५दिन के अन्तर्गत मंदी आवेगी यह मंदी तृतीयांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी की तिहाई के बराबर होती है।

शनि या हर्शल का गुरु के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन रहा हो तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३॥ दिन के अन्दर तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के आधे के बराबर होता है और यदि उपरोक्त ग्रह चन्द्र के साथ षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग बनाये तो ३ दिन के अन्तर्गत इतनी ही प्रभाव वाली तेजी समझना चाहिये।

शनि या हर्शल का गुरु के साथ अष्टमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो यह योग बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा

जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २।। दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

शनि या हर्शल का गुरु के साथ नवांश (४०°) दृष्टि योग बन जाय तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं १।। दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्टांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के बराबर होता है इसी प्रकार २४ घण्टे के अन्तर्गत इतना ही प्रभाव दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध योग बनने से होगा तथा पंचदशांश (२४°) या षोडशांश [२२/३०°] दृष्टि सम्बन्ध बने तो क्रमश: २० व १८ घण्टे के अन्तर्गत षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर तेजी आवेगी।

शनि या हर्शल का गुरु के साथ अष्टादशांश [२०°] दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो दृष्टा व दृश्य ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ग्रह हों उन राशिगत की वस्तुओं में १२ घण्टे केअन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर की होती है।

शनि या हर्शल का गुरु के साथ विंशांश [१८°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इस योग को बनाने वाले ग्रहों के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि-गत इस योग की रचना के समय ये ग्रह हों उन राशिगत की वस्तुओं में १०घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है।

शनि या हर्शल का गुरु के साथ चतुर्विंशांश [१५°] दृष्टि योग हो रहा हो तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये ग्रह जिन

राशिगत भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मन्दी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है ।

शनि या हर्शल का गुरु के साथ त्रिशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो यह दृष्टि सम्बन्ध बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृष्टा व दृश्य ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर का होता है । और जब चत्वारिंशांश (९°) व षष्ठांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध ये ग्रह बनायें तो क्रमशः ४ घंटे व ३ घंटे के अन्तर्गत इतनी ही तेजी आवेगी ।

शनि या हर्शल का गुरु के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो दृष्टा व दृश्य ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहें हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सबन्ध की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है ।

शनि या हर्शल का गुरु के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इस दृष्टि योग को बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहें हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही होता है ।

शनि या हर्शल का गुरु के साथ अष्टमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग होरहा हो तो यह दृष्टि सम्बन्ध बनानेवाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक होता है ।

शनि या हर्शल का शुक्र के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

शनि या हर्शल का मगल के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो कोयला, सीमेण्ट व सीमेण्ट का सामान, अलसी, ऊन, तिलहन, काली मिर्च, लोहा, मूंगफली, जूते, रील, मिट्टी की वस्तुएं, कार, मोटर, बस, रुई, जूट का सामान, सूत, शक्कर, गेहू चावल, लेशियन, सिल्क, मिष्ठान्न, मोती, कांच, पुष्प, सुगन्धित पदार्थ, शराब, नासपाती आदि शनि या हर्शल व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाने वाले ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

शनि या हर्शल का शुक्र के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि योग बन रहा हो तो शनि या हर्शल व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इसी प्रकार यदि शनि या हर्शल का शुक्र के साथ तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो ३ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग की तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा यदि चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बन्ध बने तो ४ दिन के अन्तर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी की तिहाई से कुछ अधिक की मंदी समझें।

शनि या हर्शल का शुक्र के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह यह योग बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३॥ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है. इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव समझें यह योग अपना प्रभाव २ दिन के अन्तर्गत प्रकट करता है।

शनि या हर्शल का शुक्र के साथ अष्टमांश (४५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो शनि या हर्शल व शुक्र के आधिपत्यत्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा

जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

शनि या हर्शल का शुक्र के साथ नवांश (४०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो शनि या हर्शल व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओंमें तथा जिन राशिगत शनि या हर्शल व शुक्र भ्रमण करते हुए इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३दिन के अन्तर्गत तेजी आतीहै इस तेजी का प्रभाव पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है इसी प्रकार से ही इन ग्रहों के दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव भी १॥ दिन में नवांश दृष्टि योग के तुल्य ही होता है और इन ग्रहों के पंचदशांश (२४°) व षोडशांश [२२/३०°] दृष्टि सम्बन्ध क्रमशः २० व १६घन्टे के अन्तर्गत पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य अपना प्रभाव प्रकट करते है।

शनि या हर्शल का शुक्र के साथ अष्टादशांश[२०°]दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो शनि या हर्शल व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १२ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टियोग की मंदी के आधे के बराबर होता है।

शनि या हर्शल का शुक्र के साथ विंशांश [१८°]दृष्टि योग बन जाय तो इन ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत शनि या हर्शल व शुक्र भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

शनि या हर्शल का शुक्र के साथ चतुर्विंशांश [१५°] दृष्टि योग बन रहा हो तो शनि या हर्शल व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की

वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

शनि या हर्शल का शुक्र के साथ त्रिशांश [१२°]दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो शनि या हर्शल व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि-गत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षोडशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है। इसी प्रकार इन ग्रहों के चत्वारिशांश [९°] व षष्ठयांश [६°] दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव भी त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के समान ही होता है किन्तु यह तेजी क्रमशः ४ घण्टे व ३ घण्टे के अन्तर्गत आती है।

शनि या हर्शल का शुक्र के साथ द्वादशांश रहित [१५०°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो शनि या हर्शल व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है।

शनि या हर्शल का शुक्र के साथ दशमांश रहित [१४४°] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव रखती है।

शनि या हर्शल का शुक्र के साथ अष्टमांश रहित [१३५°] दृष्टि योग बन जाय तो शनि या हर्शल व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना करते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

शनि या हर्शल का राहुकेतु के साथ दृष्टि योग प्रभाव

जब शनि या हर्शल का राहुकेतु के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि योग बन रहा हो कोयला, सीमेण्ट, सीमेण्ट का सामान, अलसी, ऊन, तिलहन, काली मिर्च, लोहा मूंगफली, अरंडा जूट, रील, मिट्टी की वस्तुएं, कार मोटर, बस, फिल्म उद्योग, एममूनियम उद्योग, बिजली का सामान यंत्र आदि शनि या हर्शल व राहुकेतु के आधिपत्यत्वकी वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

शनि या हर्शल का राहुकेतु के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो शनि या हर्शल व राहुकेतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है। यदि इसी प्रकार शनि या हर्शल का राहुकेतु से तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो ४ दिन के अन्तर्गत उक्त योग की तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी और यदि चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बंध बने तो ५ दिन के अंतर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई से कुछ अधिक की मंदी समझें।

शनि या हर्शल का राहुकेतु के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन जाय तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत शनि या हर्शल व राहुकेतु भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३॥ दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है और इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव भी इसी योग के समान ही ३ दिन के अन्तर्गत होता है।

शनि या हर्शल का राहुकेतु के साथ अष्ठमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो शनि या हर्शल व राहुकेतु के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत

ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है

शनि या हर्शल का राहुकेतु के साथ नवांश (४०°) दृष्टि योग बन जाय तो शनि या हर्शल व राहुकेतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १।। दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्ठांश दृष्टी सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के बराबर होता है इसी प्रकार १।। दिन के अन्तर्गत इतना ही प्रभाव दशांश (३६°) व द्वादशांश(३०°) दृष्टि सम्बन्ध योग बनने से होगा तथा पंचदशांश (२४°) व षोडशांश (२२/३०°) दृष्टि सम्बन्ध बने तो क्रमशः २० व १८ घण्टे के अन्तर्गत षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर तेजी आती है

शनि या हर्शल का राहुकेतु के साथ अष्टादशांश (२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो शनि या हर्शल व राहुकेतु के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में १२ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर की होती है

शनि या हर्शल का राहुकेतु के साथ विंशांश (१८°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो शनि या हर्शल व राहुकेतु के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत इस योग की रचना के समय ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है

शनि या हर्शल का राहुकेतु के साथ चतुर्विंशांश (१५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो शनि या हर्शल व राहुकेतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये ग्रह जिन राशि गत भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन

राशि गत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी अष्टा-दशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होती है।

शनि या हर्शल का राहुकेतु के साथ त्रिंशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत शनि या हर्शल व राहुकेतु भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है और जब चत्वारिंशांश (९°) या षष्ठयांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध ये ग्रह बनायें तो क्रमश: ३ घण्टे व ४ घन्टे के अन्तर्गत इतनी ही तेजी आवेगी।

शनि या हर्शल का राहुकेतु के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो शनि या हर्शल व राहुकेतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर होता है।

शनि या हर्शल का राहुकेतु के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो शनि या हर्शल व राहुकेतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव प्रकट करती है।

शनि या हर्शल का राहुकेतु के साथ अष्ठमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो शनि या हर्शल व राहुकेतु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत शनि या हर्शल व राहुकेतु भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

शनि का हर्शल के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

शनि का हर्शल के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो कोयला, सीमेण्ट, सीमेण्ट की बनी वस्तुएं, तांबा, अलसी, अरंडा, ऊन, तिलहन, काली मिर्च, मीठा तेल, मूंगफली, रील, रबड़, की बनी वस्तुएं, टीन, आर्डनरी शेअर्स, चमड़ा, घड़ियां, जस्ता, आदि दृष्टा व दृश्य ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाने वाले ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

शनि का हर्शल के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहें हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है और जब तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो ४ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग के तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा जब चतुर्थांश (९०°) दृष्टि योग बनता हो तो ५ दिन के अन्तर्गत मंदी आवेगी यह मंदी तृतीयांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी की तिहाई के बराबर होती है।

शनि का हर्शल के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन रहा हो तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३॥ दिन के अन्दर तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के आधे के बराबर होता है और इसी प्रकार इन ग्रहों के साथ षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग बनाये तो ३ दिन के अन्तर्गत इतनी ही प्रभाव वाली तेजी समझना चाहिये।

शनि का हर्शल के साथ अष्टमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो यह योग बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा

जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

शनि का हर्शल के साथ नवांश (४०°) दृष्टि योग बन जाय तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १॥दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्टांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के बराबर होता है इसी प्रकार २४ घण्टे के अन्तर्गत इतना ही प्रभाव दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्वन्ध योग बनने से होगा तथा पंचदशांश (२४°) या षोडशांश [२२/३०°] दृष्टि सम्बन्ध बने तो क्रमशः २० व १८ घण्टे के अन्तर्गत षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर तेजी आवेगी।

शनि का हर्शल के साथ अष्टादशांश [२०°] दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो दृष्टा व दृश्य ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ग्रह हों उन राशिगत की वस्तुओं में १२ घण्टे केअन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर की होती है।

शनि का हर्शल के साथ विंशांश [१८°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इस योग को बनाने वाले ग्रहों के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि-गत इस योग की रचना के समय ये ग्रह हों उन राशिगत की वस्तुओं में १०घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है।

शनि का हर्शल के साथ चतुर्विंशांश [१५°] दृष्टि योग हो रहा हो तो दश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये ग्रह जिन

राशिगत भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मन्दी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

शनि का हर्शल के साथ त्रिंशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो यह दृष्टि सम्बन्ध बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृष्टा व दृश्य ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर का होता है। और जब चत्वारिंशांश (९°) व षष्ठयांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध ये ग्रह बनायें तो क्रमशः ४ घंटे व ३ घंटे के अन्तर्गत इतनी ही तेजी आवेगी।

शनि का हर्शल के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाए तो दृष्टा व दृश्य ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहें हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सबन्ध की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है।

शनि का हर्शल के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इस दृष्टि योग को बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहें हो उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अंतर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही होता है।

शनि का हर्शल के साथ अष्टमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो यह दृष्टि सम्बन्ध बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक होता है।

शनि या हर्शल का नेपच्यून के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

शनि या हर्शल का नेपच्यून के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो कोयला, सीमेण्ट व सीमेण्ट का सामान, अलसी, ऊन, तिलहन, काली मिर्च, लोहा, मूंगफली, जूते, रील, मिट्टी की वस्तुए, कार, मोटर, बस, फिल्म उद्योग, चाय, कपास, औषधि, मिष्ठान्न, तेल, मत्स्य उद्योग, मीठा तेल, एलमूनियम उद्योग, सिण्डीकेट आदि शनि या हर्शल व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाने वाले ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओ में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

शनि या हर्शल का नेपच्यून् के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि योग बन रहा हो तो शनि या हर्शल व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहेहों उन राशिगत की वस्तुओं में ७दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इसी प्रकार यदि शनि या हर्शल का नेपच्यून के साथ तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो ३ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग की तिहाई के तुल्य मंदी आयेगी तथा यदि चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बन्ध बने तो ४ दिन के अन्तर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी की तिहाई से कुछ अधिक की मंदी समझें।

शनि या हर्शल का नेपच्यून के साथ पचमांश (७२°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह यह योग बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३॥ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव समझें यह योग अपना प्रभाव २ दिन के अन्तर्गत प्रकट करता है।

शनि या हर्शल का नेपच्यून के साथ अष्टमांश (४५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो शनि या हर्शल व नेपच्यून के आधिपत्यत्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा

जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

शनि या हर्शल का नेपच्यून के साथ नवांश (४०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो शनि या हर्शल व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओंमें तथा जिन राशिगत शनि या हर्शल व नेपच्यून भ्रमण करते हुए इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३दिन के अन्तर्गत तेजी आतीहै इस तेजी का प्रभाव पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है इसी प्रकार से ही इन ग्रहों के दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव भी १।। दिन में नवांश दृष्टि योग के तुल्य ही होता है और इन ग्रहों के पंचदशांश (२४°) व षोडशांश [२२/३०°] दृष्टि सम्बन्ध क्रमशः २० व१६घन्टे के अन्तर्गत पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य अपना प्रभाव प्रकट करते है।

शनि या हर्शल का नेपच्यून के साथ अष्टादशांश[२०°]दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो शनि या हर्शल व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १२ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टियोग की मंदी के आधे के बराबर होता है।

शनि या हर्शल का नेपच्यून के साथ त्रिशांश [१८°] दृष्टि योग बन जाय तो इन ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत शनि या हर्शल व नेपच्यून भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

शनि या हर्शल का नेपच्यून के साथ चतुर्विंशांश [१५°] दृष्टि योग बन रहा हो तो शनि या हर्शल व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की

वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

शनि या हर्शल का नेपच्यून के साथ त्रिशांश [१२°] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो शनि या हर्शल व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षोडशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है। इसी प्रकार इन ग्रहों के चत्वारिंशांश [९°] व षष्ठयांश [६°] दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव भी त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के समान ही होता है किन्तु यह तेजी क्रमशः ४ घण्टे व ३ घण्टे के अन्तर्गत आती है।

शनि या हर्शल का नेपच्यून के साथ द्वादशांश रहित [१५०°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो शनि या हर्शल व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है।

शनि या हर्शल का नेपच्यून के साथ दशमांश रहित [१४४°] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव रखती है।

शनि या हर्शल का नेपच्यून के साथ अष्टमांश रहित [१३५°] दृष्टि योग बन जाय तो शनि या हर्शल व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना करते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

शनि या हर्शल का प्लूटो के साथ दृष्टि योग प्रभाव

जब शनि या हर्शल का प्लूटो के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि योग बन रहा हो कोयला, सीमेण्ट, सीमेण्ट का सामान अलसी, ऊन, तिलहन काली मिर्च लोहा मूंगफली, अरंडा, जूट, रील, मिट्टी की वस्तुएं, कार मोटर, बस, फिल्म उद्योग, चमड़ा, घड़ियां, जस्ता, आर्डनरी शेअर्स आदि शनि या हर्शल व प्लूटो के आधिपत्यत्वकी वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

शनि या हर्शल का प्लूटो के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो शनि या हर्शल व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है। यदि इसी प्रकार शनि या हर्शल का प्लूटो से तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो ४ दिन के अन्तर्गत उक्त योग की तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी और यदि चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बंध बने तो ५ दिन के अंतर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई से कुछ अधिक की मंदी समझें।

शनि या हर्शल का प्लूटो के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन जाय तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत शनि या हर्शल व प्लूटो भ्रमण करते हुए इस योगकी रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३।। दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है और इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव भी इसी योग के समान ही ३ दिन के अन्तर्गत होता है।

शनि या हर्शल का प्लूटो के साथ अष्टमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो शनि या हर्शल व प्लूटो के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत

ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है

शनि या हर्शल का प्लूटो के साथ नवांश (४०°) दृष्टि योग बन जाय तो शनि या हर्शल व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १॥ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्टांश दृष्टी सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के बराबर होता है इसी प्रकार १॥ दिन के अन्तर्गत इतना ही प्रभाव दशांश (३६°) व द्वादशांश(३०°) दृष्टि सम्बन्ध योग बनने से होगा तथा पंचदशांश (२४°) व षोडशांश (२२/३०°) दृष्टि सम्बन्ध बनें तो क्रमशः २० व १८ घण्टे के अन्तर्गत षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर तेजी आती है

शनि या हर्शल का प्लूटो के साथ अष्टादशांश (२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो शनि या हर्शल व प्लूटो के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में १२ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर की होती है

शनि या हर्शल का प्लूटो के साथ विशांश (१८°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो शनि या हर्शल व प्लूटो के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत इस योग की रचना के समय ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है

शनि या हर्शल का प्लूटो के साथ चतुर्विशांश (१५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो शनि या हर्शल व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये ग्रह जिन राशि गत भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन

राशि गत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होती है।

शनि या हर्शल का प्लूटो के साथ त्रिशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत शनि या हर्शल व प्लूटो भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है और जब चत्वारिंशांश (९°) या षष्ठयांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध ये ग्रह बनायें तो क्रमशः ३ घण्टे व ४ घन्टे के अन्तर्गत इतनी ही तेजी आवेगी।

शनि या हर्शल का प्लूटो के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो शनि या हर्शल व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर होता है।

शनि या हर्शल का प्लूटो के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो शनि या हर्शल व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव प्रकट करती है।

शनि या हर्शल का प्लूटो के साथ अष्ठमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो शनि या हर्शल व प्लूटो के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत शनि या हर्शल व प्लूटो भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हो उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

राहु या केतु का सूर्य के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

राहु या केतु का सूर्य के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो बिजली व बिजली के यन्त्र तथा सामान, सोना, जवाहरात, गिलट व गिलट की बनी वस्तुएं खाउण्ड, चावल, शहद, शासकीय मुद्रा, जड़ी बूटियां, श्वेत वस्तुएं आदि दृष्टा व दृश्य ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाने वाले ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन रशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

राहु या केतु का सूर्य के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है और जब तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो ४ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग के तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा जब चतुर्थांश (९०°) दृष्टि योग बनता हो तो ५ दिन के अन्तर्गत मंदी आवेगी यह मंदी तृतीयांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी की तिहाई के बराबर होती है।

राहु या केतु का सूर्य के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन रहा हो तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३॥ दिन के अन्दर तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के आधे के बराबर होता है और इसी प्रकार इन ग्रहों के साथ षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग बनाये तो ३ दिन के अन्तर्गत इतनी ही प्रभाव वाली तेजी समझना चाहिये।

राहु या केतु का सूर्य के साथ अष्टमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो यह योग बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा

जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

राहु या केतु का सूर्य के साथ नवांश (४०°) दृष्टि योग बन जाय तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १॥ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्ठांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के बराबर होता है इसी प्रकार २४ घण्टे के अन्तर्गत इतना ही प्रभाव दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध योग बनने से होगा तथा पंचदशांश (२४°) या षोडशांश [२२/३०°] दृष्टि सम्बन्ध बने तो क्रमशः २० व १८ घण्टे के अन्तर्गत षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर तेजी आवेगी।

राहु या केतु का सूर्य के साथ अष्टादशांश [२०°] दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो दृष्टा व दृश्य ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ग्रह हों उन राशिगत की वस्तुओं में १२ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर की होती है।

राहु या केतु का सूर्य के साथ विंशांश [१८°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इस योग को बनाने वाले ग्रहों के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि-गत इस योग की रचना के समय ये ग्रह हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है।

राहु या केतु का सूर्य के साथ चतुर्विंशांश [१५°] दृष्टि योग हो रहा हो तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये ग्रह जिन

राशिगत भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मन्दी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

राहु या केतु का सूर्य के साथ त्रिशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो यह दृष्टि सम्बन्ध बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृष्टा व दृश्य ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर का होता है। और जब चत्वारिंशांश (९°) व षष्ठयांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध ये ग्रह बनायें तो क्रमशः ४ घंटे व ३ घंटे के अन्तर्गत इतनी ही तेजी आवेगी।

राहु या केतु का सूर्य के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो दृष्टा व दृश्य ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सबन्ध की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है।

राहु या केतु का सूर्य के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इस दृष्टि योग को बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अंतर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही होता है।

राहु या केतु का सूर्य के साथ अष्टमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग होरहा हो तो यह दृष्टि सम्बन्ध बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक होता है।

राहु या केतु का चन्द्र के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

राहु या केतु का चन्द्र के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो बिजली का सामान व यन्त्र, चांदी, दूध, चावल, पेट्रोलियम के शेअर्स, क्रीम, बिस्कुट, जौ द्रव्य, शराब, आयल कम्पनी के साधारण शेअर्स, मछली, नेवीगेशन, कांच व कांच कांच का सामान, घृत श्वेत वस्तुएं आदि राहु या केतु व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाने वाले ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

राहु या केतु का चन्द्र के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि योग बन रहा हो तो राहु या केतु व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७दिन के अन्तर्गत मंदी आती है। इसी प्रकार यदि राहु या केतु का चन्द्र के साथ तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो ३ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग की तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा यदि चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बन्ध बने तो ४ दिन के अन्तर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी की तिहाई से कुछ अधिक की मंदी समझें।

राहु या केतु का चन्द्र के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह यह योग बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३॥ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव समझें यह योग अपना प्रभाव २ दिन के अन्तर्गत प्रकट करता है।

राहु या केतु का चन्द्र के साथ अष्टमांश(४५°)दृष्टि योग हो रहा हो तो राहु या केतु व चन्द्र के आधिपत्यत्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा

जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

राहु या केतु का चन्द्र के साथ नवांश (४०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो राहु या केतु व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओंमें तथा जिन राशिगत राहु या केतु व चन्द्र भ्रमण करते हुए इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है इसी प्रकार से ही इन ग्रहों के दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव भी १॥ दिन में नवांश दृष्टि योग के तुल्य ही होता है और इन ग्रहों के पंचदशांश (२४°) व षोडशांश [२२/३०°] दृष्टि सम्बन्ध क्रमशः २० व १६घन्टे के अन्तर्गत पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य अपना प्रभाव प्रकट करते है।

राहु या केतु का चन्द्र के साथ अष्टादशांश [२०°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो राहु या केतु व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १२ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टियोग की मंदी के आधे के बराबर होता है।

राहु या केतु का चन्द्र के साथ त्रिशांश [१८°] दृष्टि योग बन जाय तो इन ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत राहु या केतु व चन्द्र भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

राहु या केतु का चन्द्र के साथ चतुर्विंशांश [१५°] दृष्टि योग बन रहा हो तो राहु या केतु व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की

वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

राहु या केतु का चन्द्र के साथ त्रिशांश [१२०] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो राहु या केतु व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षोडशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है। इसी प्रकार इन ग्रहों के चत्वारिंशांश [९°] व षष्ठयांश [६°] दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव भी त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के समान ही होता है किन्तु यह तेजी क्रमशः ४ घण्टे व ३ घण्टे के अन्तर्गत आती है।

राहु या केतु का चन्द्र के साथ द्वादशांश रहित [१५०°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो राहु या केतु व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है।

राहु या केतु का चन्द्र के साथ दशमांश रहित [१४४°] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव रखती है।

राहु या केतु का चन्द्र के साथ अष्टमांश रहित [१३५°] दृष्टि योग बन जाय तो राहु या केतु व चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना करते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

राहु या केतु का मंगल के साथ दृष्टि योग प्रभाव

जब राहु या केतु का मंगल के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि योग बन रहा हो बिजली व बिजली का सामान व यन्त्र, सोना, चावल, तिलहन, रेलवे शेयर्स धातु खनिज उद्योग, जौ, मशीनरी, जायदाद, लोहा, इंट, चाय, काफी, गुड़ लाल वस्तुएं आदि राहु या केतु व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

राहु या केतु का मंगल के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो राहु या केतु व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है। यदि इसी प्रकार शनि या हर्शल का प्लूटो से तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो ४ दिन के अन्तर्गत उक्त योग की तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी और यदि चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बंध बने तो ५ दिन के अंतर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई से कुछ अधिक की मंदी समझें।

राहु या केतु का मंगल के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन जाय तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत राहु या केतु व मंगल भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३॥ दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है और इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव भी इसी योग के समान ही ३ दिन के अन्तर्गत होता है।

राहु या केतु का मंगल के साथ अष्ठमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो राहु या केतु व मंगल के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत

ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है

राहु या केतु का मंगल के साथ नवांश (४०°) दृष्टि योग बन जाय तो राहु या केतु व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १।। दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्टांश दृष्टी सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के बराबर होता है इसी प्रकार १।। दिन के अन्तर्गत इतना ही प्रभाव दशांश (३६°) व द्वादशांश(३०°) दृष्टि सम्बन्ध योग बनने से होगा तथा पंचदशांश (२४°) व षोडशांश (२२/३०°) दृष्टि सम्बन्ध बने तो क्रमशः २० व १८ घण्टे के अन्तर्गत षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर तेजी आती है

राहु या केतु का मंगल के साथ अष्टादशांश (२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो राहु या केतु व मंगल के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में १२ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर की होती है

राहु या केतु का मंगल के साथ विंशांश (१८°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो राहु या केतु व मंगल के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत इस योग की रचना के समय ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है

राहु या केतु का मंगल के साथ चतुर्विंशांश (१५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो राहु या केतु व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये ग्रह जिन राशि गत भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन

राशिगत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी अष्टा–दशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होती है।

राहु या केतु का मंगल के साथ विशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत-राहु या केतु व मंगल भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है और जब चत्वारिंशांश (९°) या षष्ठयांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध ये ग्रह बनायें तो क्रमशः ३ घण्टे व ४ घन्टे के अन्तर्गत इतनी ही तेजी आवेगी।

राहु या केतु का मंगल के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो राहु या केतु व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर होता है।

राहु या केतु का मगल के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो राहु या केतु व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं मे ९ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव प्रकट करती है।

राहु या केतु का मगल के साथ अष्ठमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो राहु या केतु व मंगल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत राहु या केतु व मंगल भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक ही होता है।

राहु या केतु का बुध के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

राहु या केतु का बुध के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो बिजली व बिजली के यन्त्र तथा सामान, गेहूँ, चावल, अनाज, खाद्य पदार्थ, सिल्क, सन, शक्कर, रुई, तांबा, अर्थ सम्बन्धी सामन, ज्वार, श्वेत वस्त्र आदि दृष्टा व दृश्य ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाने वाले ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

राहु या केतु का बुध के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है और जब तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो ४ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग के तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा जब चतुर्थांश (९०°) दृष्टि योग बनता हो तो ५ दिन के अन्तर्गत मंदी आवेगी यह मंदी तृतीयांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी की तिहाई के बराबर होती है।

राहु या केतु का बुध के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन रहा हो तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३॥ दिन के अन्दर तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के आधे के बराबर होता है और इसी प्रकार इन ग्रहों के साथ षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग बनाये तो ३ दिन के अन्तर्गत इतनी ही प्रभाव शाली तेजी समझना चाहिये।

राहु या केतु का बुध के साथ अष्टमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो यह बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा

जिन-राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

राहु या केतु का बुध के साथ नवांश (४०°) दृष्टि योग बन जाय तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १॥ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्ठांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के बराबर होता है इसी प्रकार २४ घण्टे के अन्तर्गत इतना ही प्रभाव दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध योग बनने से होगा तथा पंचदशांश (२४°) या षोडशांश [२२/३०°] दृष्टि सम्बन्ध बने तो क्रमशः २० व १८ घण्टे के अन्तर्गत षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर तेजी आवेगी।

राहु या केतु का बुध के साथ अष्टादशांश [२०°] दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो दृष्टा व दृश्य ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ग्रह हों उन राशिगत की वस्तुओं में १२ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर की होती है।

राहु या केतु का बुध के साथ विंशांश [१८°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इस योग को बनाने वाले ग्रहों के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग की रचना के समय ये ग्रह हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है।

राहु या केतु का बुध के साथ चतुर्विंशांश [१५°] दृष्टि योग हो रहा हो तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये ग्रह जिन

राशिगत भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मन्दी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

राहु या केतु का बुध के साथ त्रिशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो यह दृष्टि सम्बन्ध बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृष्टा व दृश्य ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर का होता है। और जब चत्वारिशांश (९°) व षष्ठयांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध ये ग्रह बनायें तो क्रमश: ४ घंटे व ३ घंटे के अन्तर्गत इतनी ही तेजी आवेगी।

राहु या केतु का बुध के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो दृष्टा व दृश्य ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सबन्ध की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है।

राहु या केतु का बुध के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इस दृष्टि योग को बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही होता है।

राहु या केतु का बुध के साथ अष्टमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो यह दृष्टि सम्बन्ध बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक होता है।

राहु या केतु का गुरु के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

राहु या केतु का गुरु के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो बिजली का सामान व यन्त्र, टीन, रबड़, जस्ता, चना, जूट, तम्बाकू, शेअर्स, बैंक बैंकर्स, बीमा कम्पनी; क्लोथ मिल्स, पीले वस्त्र, हल्दी, पीली वस्तुएं, पुखराज, क्रीम-पाऊडर, विलासता की सामग्री आदि राहु या केतु व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाने वाले ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

राहु या केतु का गुरु के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि योग बन रहा हो तो राहु या केतु व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इसी प्रकार यदि राहु या केतु का गुरु के साथ तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो ३ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग की तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा यदि चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बन्ध बने तो ४ दिन के अन्तर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी की तिहाई से कुछ अधिक की मंदी समझें।

राहु या केतु का गुरु के साथ पचमांश (७२°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह यह योग बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३॥ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव समझें यह योग अपना प्रभाव २ दिन के अन्तर्गत प्रकट करता है।

राहु या केतु का गुरु के साथ अष्टमांश (४५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो राहु या केतु व गुरु के आधिपत्यत्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा

जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

राहु या केतु का गुरु के साथ नवांश (४०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो राहु या केतु व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओंमें तथा जिन राशिगत राहु या केतु व गुरु भ्रमण करते हुए इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है इसी प्रकार से ही इन ग्रहों के दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव भी १।। दिन में नवांश दृष्टि योग के तुल्य ही होता है और इन ग्रहों के पंचदशांश (२४°) व षोडशांश [२२/३०°] दृष्टि सम्बन्ध क्रमशः २० व१६घन्टे के अन्तर्गत पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य अपना प्रभाव प्रकट करते है।

राहु या केतु का गुरु के साथ अष्टादशांश [२०°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो राहु या केतु व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १२ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टियोग की मंदी के आधे के बराबर होता है।

राहु या केतु का गुरु के साथ त्रिंशांश [१८°] दृष्टि योग बन जाय तो इन ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत राहु या केतु व गुरु भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

राहु या केतु का गुरु के साथ चतुर्विंशांश [१५°] दृष्टि योग बन रहा हो तो राहु या केतु व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की

वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

राहु या केतु का गुरु के साथ त्रिशांश [१२०] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो राहु या केतु व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग का बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षोडशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है। इसी प्रकार इन ग्रहों के चत्वारिंशांश [९°] व षष्ठयांश [६°] दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव भी त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के समान ही होता है किन्तु यह तेजी क्रमशः ४ घण्टे व ३ घण्टे के अन्तर्गत आती है।

राहु या केतु का गुरु के साथ द्वादशांश रहित [१५०°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो राहु या केतु व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है।

राहु या केतु का गुरु के साथ दशमांश रहित [१४४°] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव रखती है।

राहु या केतु का गुरु के साथ अष्टमांश रहित [१३५°] दृष्टि योग बन जाय तो राहु या केतु व गुरु के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना करते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

राहु या केतु का शुक्र के साथ दृष्टि योग प्रभाव

जब राहु या केतु का शुक्र के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि योग बन रहा हो बिजली व बिजली का सामान व यन्त्र, सूत, शक्कर, गेहूं, चावल, चांदी, लेशियन सिल्क, शक्कर कम्पनी के शेअर्स, मिष्ठान्न, मोती, पुष्प, सुगंधित पदार्थ आदि राहु या केतु व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

राहु या केतु का शुक्र के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो राहु या केतु व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है। यदि इसी प्रकार राहु या केतु का शुक्र से तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो ४ दिन के अन्तर्गत उक्त योग की तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी और यदि चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बंध बने तो ५ दिन के अंतर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई से कुछ अधिक की मंदी समझें।

राहु या केतु का शुक्र के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन जाय तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत राहु या केतु व शुक्र भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३॥ दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है और इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव भी इसी योग के समान ही ३ दिन के अन्तर्गत होता है।

राहु या केतु का शुक्र के साथ अष्ठमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो राहु या केतु व शुक्र के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत

ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है

राहु या केतु का शुक्र के साथ नवांश (४०°) दृष्टि योग बन जाय तो राहु या केतु व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १।। दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्टांश दृष्टी सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के बराबर होता है इसी प्रकार १।। दिन के अन्तर्गत इतना ही प्रभाव दशांश (३६°) व द्वादशांश(३०°) दृष्टि सम्बन्ध योग बनने से होगा तथा पंचदशांश (२४°) व षोडशांश (२२/३०°) दृष्टि सम्बन्ध बने तो क्रमशः २० व १८ घण्टे के अन्तर्गत षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर तेजी आती है

राहु या केतु का शुक्र के साथ अष्टादशांश (२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो राहु या केतु व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में १२ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर की होती है

राहु या केतु का शुक्र के साथ विंशांश (१८°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो राहू या केतु व शुक्र के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत इस योग की रचना के समय ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है

राहु या केतु का शुक्र के साथ चतुर्विंशांश (१५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो राहु या केतु व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये ग्रह जिन राशि गत भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन

राशिगत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी अष्टा-दशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होती है।

राहु या केतु का शुक्र के साथ विशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत-राहु या केतु व शुक्र भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है और जब चत्वारिशांश (९°) या षष्ठयांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध ये ग्रह बनायें तो क्रमशः ३ घण्टे व ४ घन्टे के अन्तर्गत इतनी ही तेजी आवेगी।

राहु या केतु का शुक्र के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो राहु या केतु व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर होता है।

राहु या केतु का शुक्र के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो राहु या केतु व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव प्रकट करती है।

राहु या केतु का शुक्र के साथ अष्ठमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो राहु या केतु व शुक्र के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत राहु या केतु व शुक्र भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

राहु या केतु का शनि के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

राहु या केतु का शनि के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो जली व बिजली के यन्त्र तथा सामान, कोयला सीमेन्ठ, सीमेन्ट का सामान, मशीनरी, जूते, रील, ...बो, अलसी, तिलहन, काली मिर्च, मीठा तेल, लोहा, ...गफली आदि दृष्टा व दृश्य ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाने वाले ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन रशिगत की वस्तुओं ...६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

राहु या केतु का शनि के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है और जब तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो ४ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग के तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा जब चतुर्थांश (९०°) दृष्टि योग बनता हो तो ५दिन के अन्तर्गत मंदी आवेगी यह मंदी तृतीयांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी की तिहाई के बराबर होता है।

राहु या केतु का शनि के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन रहा हो तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३॥ दिन के अन्दर तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के आधे के बराबर होता है और इसी प्रकार इन ग्रहों के साथ षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग बनाये तो ३ दिन के अन्तर्गत इतनी ही प्रभाव वाली तेजी समझना चाहिये।

राहु या केतु का शनि के साथ अष्टमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो यह बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा

जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २।। दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

राहु या केतु का शनि के साथ नवांश (४०°) दृष्टि योग बन जाय तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व का वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १।। दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्ठांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के बराबर होता है इसी प्रकार २४ घण्टे के अन्तर्गत इतना ही प्रभाव दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध योग बनने से होगा तथा पंचदशांश (२४°) या षोडशांश [२२/३०°] दृष्टि सम्बन्ध बने तो क्रमशः २० व १८ घण्टे के अन्तर्गत षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर तेजी आवेगी।

राहु या केतु का शनि के साथ अष्टादशांश [२०°] दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो दृष्टा व दृश्य ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ग्रह हों उन राशिगत की वस्तुओं में १८ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर की होती है।

राहु या केतु का शनि के साथ विंशांश [१८°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इस योग को बनाने वाले ग्रहों के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग की रचना के समय ये ग्रह हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है।

राहु या केतु का शनि के साथ चतुर्विंशांश [१५°] दृष्टि योग हो रहा हो तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये ग्रह जिन

राशिगत भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मन्दी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है ।

राहु या केतु का शनि के साथ त्रिशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो यह दृष्टि सम्बन्ध बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृष्टा व दृश्य ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर का होता है । और जब चत्वारिंशांश (९°) व षष्ठयांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध ये ग्रह बनायें तो क्रमश: ४ घंटे व ३ घंटे के अन्तर्गत इतनी ही तेजी आवेगी ।

राहु या केतु का शनि के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो दृष्टा व दृश्य ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहें हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सबन्ध की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है ।

राहु या केतु का शनि के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इस दृष्टि योग को बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अंतर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही होता है ।

राहु या केतु का शनि के साथ अष्टमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो यह दृष्टि सम्बन्ध बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक होता है ।

राहु या केतु का हर्शल के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

राहु या केतु का हर्शल के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो बिजली व बिजली का सामान व यन्त्र, वायुयान, मिट्टीकी वस्तुएं, टैलीग्राफ, वायरलैस, नेवीगेशन, कार, मोटर, रेल, ट्राम्वे, बस, गवर्नमेन्ट पेपर, ज्वाइन्ट कम्पनी, फिल्म उद्योग आदि राहु या केतु व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाने वाले ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

राहु या केतु का हर्शल के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि योग बन रहा हो तो राहु या केतु व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७दिन के अन्तर्गत मंदी आती है। इसी प्रकार यदि राहु या केतु का हर्शल के साथ तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो ३ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग की तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा यदि चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बन्ध बने तो ४ दिन के अन्तर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी की तिहाई से कुछ अधिक की मंदी समझें।

राहु या केतु का हर्शल के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह यह योग बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३॥ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव समझें यह योग अपना प्रभाव २ दिन के अन्तर्गत प्रकट करता है।

राहु या केतु का हर्शल के साथ अष्टमांश (४५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो राहु या केतु व हर्शल के आधिपत्यत्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा

जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ४ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

राहु या केतु का हर्शल के साथ नवांश (४०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो राहु या केतु व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओंमें तथा जिन राशिगत राहु या केतु व हर्शल भ्रमण करते हुए इस दृष्टि सम्बन्ध को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है इसी प्रकार से ही इन ग्रहों के दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव भी १॥ दिन में नवांश दृष्टि योग के तुल्य ही होता है और इन ग्रहों के पंचदशांश (२४°) व षोडशांश [२२/३०°] दृष्टि सम्बन्ध क्रमशः २० व१६घन्टे के अन्तर्गत पंचमांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य अपना प्रभाव प्रकट करते है।

राहु या केतु का हर्शल के साथ अष्टादशांश [२०°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो राहु या केतु व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १२ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टियोग की मंदी के आधे के बराबर होता है।

राहु या केतु का हर्शल के साथ विंशांश [१८°] दृष्टि योग बन जाय तो इन ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत राहु या केतु व हर्शल भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है।

राहु या केतु का हर्शल के साथ चतुविंशांश [१५°] दृष्टि योग बन रहा हो तो राहु या केतु व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की

वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

राहु या केतु का हर्शल के साथ त्रिशांश [१२°] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो राहु या केतु व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षोडशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है। इसी प्रकार इन ग्रहों के चत्वारिशांश [९°] व षष्ठयांश [६°] दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव भी त्रिशांश दृष्टि योग की तेजी के समान ही होता है किन्तु यह तेजी क्रमशः ४ घण्टे व ३ घण्टे के अन्तर्गत आती है।

राहु या केतु का हर्शल के साथ द्वादशांश रहित [१५०°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो राहु या केतु व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है।

राहु या केतु का हर्शल के साथ दशमांश रहित [१४४°] दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग को बनाते हुए भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव रखती है।

राहु या केतु का हर्शल के साथ अष्टमांश रहित [१३५°] दृष्टि योग बन जाय तो राहु या केतु व हर्शल के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना करते समय हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

राहु या केतु का नेपच्यून के साथ दृष्टि योग प्रभाव

जब राहु या केतु का नेपच्यून के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि योग बन रहा हो तो बिजली व बिजली का सामान व यन्त्र, चाय, कपास, औषधि, मिष्ठान्न, तेल, मत्स्य उद्योग, हल्के रंग की पीली वस्तुएं व वस्त्र, तम्बाकू, सिंडीकेट आदि राहु या केतु व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

राहु या केतु का नेपच्यून के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो राहु या केतु व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह इस योग की रचना के समय भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है। यदि इसी प्रकार राहु या केतु का नेपच्यून से तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो ४ दिन के अन्तर्गत उक्त योग की तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी और यदि चतुर्थांश (९०°) दृष्टि सम्बंध बने तो ५ दिन के अंतर्गत तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के तिहाई से कुछ अधिक की मंदी समझें।

राहु या केतु का नेपच्यून के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन जाय तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत राहु या केतु व नेपच्यून भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३।। दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस, तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है और इसी प्रकार ही इन ग्रहों के षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग का प्रभाव भी इसी योग के समान ही ३ दिन के अन्तर्गत होता है।

राहु या केतु का नेपच्यून के साथ अष्ठमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो राहु या केतु व नेपच्यून के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत

ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है

राहु या केतु का नेपच्यून के साथ नवांश (४०°) दृष्टि योग बन जाय तो राहु या केतु व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि-गत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १।। दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्टांश दृष्टी सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के बराबर होता है इसी प्रकार १।। दिन के अन्तर्गत इतना ही प्रभाव दशांश (३६°) व द्वादशांश(३०°) दृष्टि सम्बन्ध योग बनने से होगा तथा पंचदशांश (२४°) व षोडशांश (२२/३०°) दृष्टि सम्बन्ध बने तो क्रमशः २० व १८ घण्टे के अन्तर्गत षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर तेजी आती है

राहु या केतु का नेपच्यून के साथ अष्टादशांश (२०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो राहु या केतु व नेपच्यून के अधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में १२ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर की होती है

राहु या केतु का नेपच्यून के साथ विंशांश (१८°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो राहू या केतु व नेपच्यून के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशि-गत इस योग की रचना के समय ये ग्रह हों उन राशि गत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है

राहु या केतु का नेपच्यून के साथ चतुर्विंशांश (१५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो राहु या केतु व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये ग्रह जिन राशि गत भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन

राशिगत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी अष्टा-दशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होती है।

राहु या केतु का नेपच्यून के साथ विंशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशि गत-राहु या केतु व नेपच्यून भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशि गत की वस्तुओं में ६ घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर होता है और जब चत्वारिंशांश (९°) या षष्ठयांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध ये ग्रह बनायें तो क्रमशः ३ घण्टे व ४ घन्टे के अन्तर्गत इतनी ही तेजी आवेगी।

राहु या केतु का नेपच्यून के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो राहु या केतु व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि योग की तेजी के तिहाई के बराबर होता है।

राहु या केतु का नेपच्यून के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो राहु या केतु व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाते हुए ये ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही अपना प्रभाव प्रकट करती है।

राहु या केतु का नेपच्यून के साथ अष्ठमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो राहु या केतु व नेपच्यून के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत राहु या केतु व नेपच्यून भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक का होता है।

राहु या केतु का प्लूटो के साथ दृष्टि सम्बन्ध प्रभाव

राहु या केतु का प्लूटो के साथ पूर्णांश (०°) दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो बिजली व बिजली के यन्त्र तथा सामान, रबड़ की बनी हुई वस्तुएं, टीन, आर्डनरी शेयर्स, चमड़ा, घड़ियां, तांबा, मशीनरी, जस्ता, चमड़े की वस्तुएं आदि दृष्टा व दृश्य ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग को बनाने वाले ग्रह भ्रमण कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है।

राहु या केतु का प्लूटो के साथ द्वितीयांश (१८०°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इन ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है और जब तृतीयांश (१२०°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो ४ दिन के अन्तर्गत द्वितीयांश दृष्टि योग के तिहाई के तुल्य मंदी आवेगी तथा जब चतुर्थांश (९०°) दृष्टि योग बनता हो तो ५ दिन के अन्तर्गत मंदी आवेगी यह मंदी तृतीयांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी की तिहाई के बराबर होती है।

राहु या केतु का प्लूटो के साथ पंचमांश (७२°) दृष्टि योग बन रहा हो तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ३॥ दिन के अन्दर तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के आधे के बराबर होता है और इसी प्रकार इन ग्रहों के साथ षष्ठांश (६०°) दृष्टि योग बनाये तो ३ दिन के अन्तर्गत इतनी ही प्रभाव वाली तेजी समझना चाहिये।

राहु या केतु का प्लूटो के साथ अष्टमांश (४५°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो यह बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा

जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में २॥ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव द्वितीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के तुल्य होता है।

राहु या केतु का प्लूटो के साथ नवांश (४०°) दृष्टि योग बन जाय तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में १॥ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव षष्टांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के बराबर होता है इसी प्रकार २४ घण्टे के अन्तर्गत इतना ही प्रभाव दशांश (३६°) व द्वादशांश (३०°) दृष्टि सम्बन्ध योग बनने से होगा तथा पंचदशांश (२४°) या षोडशांश [२२/३०°] दृष्टि सम्बन्ध बने तो क्रमशः २० व १८ घण्टे के अन्तर्गत षष्ठांश दृष्टि योग की तेजी के बराबर तेजी आवेगी।

राहु या केतु का प्लूटो के साथ अष्टादशांश [२०°] दृष्टि सम्बन्ध बन जाय तो दृष्टा व दृश्य ग्रहों के स्वामित्व के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत यह योग बनाने वाले ग्रह हों उन राशिगत की वस्तुओं में १२ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है यह मंदी तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के आधे के बराबर की होती है।

राहु या केतु का प्लूटो के साथ विंशांश [१८°] दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इस योग को बनाने वाले ग्रहों के अन्तर्गत की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत इस योग की रचना के समय ये ग्रह हों उन राशिगत की वस्तुओं में १० घण्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के तुल्य होता है।

राहु या केतु का प्लूटो के साथ चतुर्विंशांश [१५°] दृष्टि योग हो रहा हो तो दृश्य व दृष्टा ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा ये ग्रह जिन

राशिगत भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ८ घण्टे के अन्तर्गत मंदी आती है इस मन्दी का प्रभाव अष्टादशांश दृष्टि सम्बन्ध की मंदी के आधे के तुल्य होता है ।

राहु या केतु का प्लूटो के साथ त्रिशांश (१२°) दृष्टि सम्बन्ध हो रहा हो तो यह दृष्टि सम्बन्ध बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृष्टा व दृश्य ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ६ घन्टे के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पंचदशांश दृष्टि योग की तेजी के आधे के बराबर का होता है । और जब चत्वारिंशांश (९°) व षष्ठयांश (६°) दृष्टि सम्बन्ध ये ग्रह बनायें तो क्रमशः ४ घंटे व ३ घंटे के अन्तर्गत इतनी ही तेजी आवेगी ।

राहु या केतु का प्लूटो के साथ द्वादशांश रहित (१५०°) दृष्टि योग बन जाय तो दृष्टा व दृश्य ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत ये ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग की रचना कर रहें हों उन राशिगत की वस्तुओं में ११ दिन के अन्तर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव पूर्णांश दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई के तुल्य होता है ।

राहु या केतु का प्लूटो के साथ दशमांश रहित (१४४°) दृष्टि सम्बन्ध बन रहा हो तो इस दृष्टि योग को बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ९ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है इस मंदी का प्रभाव तृतीयांश दृष्टि योग की मंदी के समान ही होता है ।

राहु या केतु का प्लूटो के साथ अष्टमांश रहित (१३५°) दृष्टि योग हो रहा हो तो यह दृष्टि सम्बन्ध बनाने वाले ग्रहों के आधिपत्यत्व की वस्तुओं में तथा जिन राशिगत दृश्य व दृष्टा ग्रह भ्रमण करते हुए इस योग को बना रहे हों उन राशिगत की वस्तुओं में ७ दिन के अंतर्गत तेजी आती है इस तेजी का प्रभाव द्वादशांश रहित दृष्टि सम्बन्ध की तेजी के तिहाई से कुछ अधिक होता है ।

परिशिष्ट

इस पुस्तक में हमारे द्वारा बारहों ग्रह सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु, हर्षल, नेपच्यून व प्लूटो के साथ प्रत्येक ग्रह के २१ दृष्टि योगों ०°, १८०°, १२०°, ९०°, ७२°, ६०°, ४५°, ४०°, ३६°, ३०°, २४°, २२/३०°, २०°, १८°, १५°, १२°, ९°, ६°, १५०°, १४४° व १३५° अंश के प्रभावों का फल क्रमशः वर्णित किया गया है। इस प्रकार इसमें आप को २७७२ युतियों का फलादेश मिलेगा इन फलादेशों में आपको प्रत्येक युति के सम्बन्ध में, उसके फल का समय एवं वह युति किस युति से कितनी प्रभाव कारी है इसका तो उल्लेख मिलेगा किन्तु किस वस्तु में यह युति कितने टके की तेजी या मंदी लायेगी इसका उल्लेख नहीं मिलेगा इसकी भी जानकारी दे देना हम उचित ही समझते हैं इस सम्बन्ध में हम यहां कुछ उदाहरण देकर तथा उनकी व्याख्या करके इन युतियों की तेजी मंदी करने की शक्ति का दिग्दर्शन करा रहे हैं।

किन्हीं २ ग्रहों का जब कोई सा भी दृष्टि सम्बन्ध स्थापित हो रहा हो तो हमें यह देखना है कि यह योग किन किन वस्तुओं पर कितनी तेजी मंदी लायगा इसके मूल्यांकन का सही ज्ञान प्राप्त करने के लिये हमें यह देखना चाहिये कि ये ग्रह किस राशिगत अपने किस नवांश पर भ्रमण कर रहे हैं साथ ही साथ यह भी ध्यान रखना चाहिये कि ये ग्रह व राशि तथा नवांश तेजी कारक हैं या मंदी कारक जैसे—

इस पुस्तक के पृष्ठ १५८ पर बुध या शुक्र का शनि के साथ पूर्णांश दृष्टि सम्बन्ध का प्रभाव तेजी कारक ४ दिन के अन्तर्गत दिया गया है। इस योग की रचना २७ दिसम्बर १९५६ को रात्रि के १२ बजकर ३८ मिनट पर शुक्र का शनि के साथ बन रहा है। यह योग १२ बजे बनने के कारण २८ दिसम्बर को १२ बजे से अपना प्रभाव प्रकट करेगा जो ४ दिन के अन्तर्गत यानी १ जनवरी १९५७ के दोपहर १२ बजे तक रहेगा। इसमें शुक्र ग्रह चांदी, रुई

सूत, वस्त्र आदि और शनि अलसी, अरण्डा, तिलहन, कालीमिर्च मूंगफली का अधिष्ठाता होने से यह योग इन वस्तुओं पर अपना प्रभाव दिखायेगा। इसके अतिरिक्त शुक्र वृश्चिक राशिगत १७° अंश पर तथा शनि भी वृश्चिक राशिगत १६° अंश पर होने के कारण इस योग का प्रभाव वृश्चिक राशिगत की वस्तुओं पर भी पड़ेगा जो कि तेजी कारक ४ दिन के अन्तर्गत होगा। चूंकि वृश्चिक राशि तेजी कारक है व शनि ग्रह भी तेजी कारक है तथा शुक्र वृश्चिक राशिगत होने से तेजी कारक हो गया है और यह योग स्वयं भी तेजी कारक है इस कारण से अब हम देख रहे हैं कि सभी विषय तेजी कारक हैं अतः इस योग को सभी दृष्टियों से तेजी कारक समर्थन प्राप्त होने से हमें इस योग से लम्बी रूखी तेजी विचारनी चाहिये। हमने अपने विधान में इस तेजी के प्रभाव का समय ४ दिन के अन्तर्गत का दिया है इस प्रकार से ४, ८, १२, १६ दिन की लम्बी लायन भी इस योग से बन सकती है।

मूल्यांकन विधि—

यह हम पूर्व में ही बता चुके हैं कि किसी भी वस्तु की तेजी मंदी का मूल्यांकन उस वस्तु के अधिष्ठाता ग्रह जिस राशिगत जिस नवांश पर भ्रमण कर रहा है उस नवांश द्वारा ज्ञात की जा सकती है नवांशों का उल्लेख हमारे द्वारा इस पुस्तक के पृष्ठ संख्या २४ से २७ तक किया जा चुका है कि प्रत्येक राशि के ९ नवांश होते हैं और १२ राशियों के १०८ नवांश हुये किसी राशिगत ग्रह ३०° अंश चलता है इस प्रकार एक नवांश ३° अंश २० कला का होता है। हम यहां एक कोष्टक दे रहे हैं जिसमें मुख्य मुख्य वस्तुओं के तेजी-मंदी का मूल्यांकन नवांशों के आधार पर लिख रहे हैं जिससे वस्तु की कितनी तेजी या मंदी होगी उसको अति सरलता से ज्ञात किया जा सके:—

कोष्टक मूल्यांकन नवांशों से

(दिन संख्या ४ का)

राशि के अंश	३°२०'	६°४०'	१०°०'	१३°२०'	१६°४०'	२०°०'	२३°२०'	२६°४०'	३०°०'
क्रमांक नवांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९
मूल्यांकन रुई	२)	४)	६)	८)	१२)	१०)	८)	६)	४)
" चांदी	॥)	१)	१॥)	२)	३)	२॥)	२)	१॥)	१)
" सोना	।)	।)	।॥)	१)	१॥)	१।)	१)	।॥)	॥)
" अलसी	।=)	।≡)	।≡)॥	॥)	॥=)	॥–)	॥)	।≡)	।=)
" अरण्डा	२)	४)	६)	८)	१०)	९)	८)	६)	४)
" मूंगफली	१=)	२।)	२॥)	३॥)	४॥)	२॥=)	२॥)	१।=)	१॥)
" कालीमिर्च	४)	८)	१२)	१६)	२४)	२०)	१६)	१२)	८)
" सरसों	।=)	।≡)	।≡)॥	॥)	॥=)	॥–)	॥)	।≡)	।=)
" गुड़	।–)	।=)	।≡)	॥)	॥=)	॥–)	॥)	।≡)	।≡)
" मटर	–)	=)	≡)	।)	।=)	।–)	॥)	≡)	=)
" गुवार	–)	=)	≡)	।)	।=)	।–)	।)	≡)	=)
" अरहर	=)	।)	।=)	॥)	।॥)	॥=)	।।)	।=)	।)
" जूट वी टूयल	॥)	१।)	१॥)	२)	२॥)	२।)	२)	१॥)	॥।)
" टाटा आर्डनरी	।॥)	१)	१॥)	२)	३)	२॥)	२)	१॥)	१)
" इण्डियन आयरन	=)	।)	।=)	॥)	॥)	॥=)	॥)	।=)	।)

सूचना:—

उपरोक्त कोष्टक में ४ दिन को आधार मानकर मूल्यांकन किया गया है कम अथवा अधिक दिन होने पर इससे अनुपात करके बता लेना चाहिये और यदि वस्तु का स्वामी वक्री हो अथवा २ या ३ पाप ग्रहों से युक्त हो तो द्विगुणित तथा मार्गी हो या २-३ सौम्य ग्रहों से युक्त हो तो उपरोक्त कोष्टक के समान ही मूल्यांकन समझना चाहिये।

उदाहरण—

(१) कोष्टक द्वारा उपर्युक्त योग की तेजी का मूल्यांकन ज्ञात करना है। हमने पूर्व में ही बता दिया कि यह योग तेजी की लाइन ४, १२ व १६ दिन की बता रहा है। यह योग शुक्र का शनि के साथ हो रहा है। शुक्र ग्रह चांदी व रुई तथा शनि ग्रह अरण्डा व मूंगफली का अधिष्ठता है अतः अब हम चांदी रुई, अरण्डा व मूंगफली आदि वस्तुओं के तेजी का मूल्यांकन निकाल रहे हैं। शुक्र वृश्चिक राशिगत १७° अंश पर भ्रमण कर रहा है तो कोष्टक में देखने से ज्ञात हुआ कि शुक्र पांचवें नवांश का भोग कर छठे नवांश में प्रवेश कर रहा है अतः अनुपात द्वारा ज्ञात हुआ कि दिनांक २८ दिसं. १९५६ से १ जनवरी १९५७ तक अर्थात् ४ दिन के अन्तर्गत चांदी में ३ टके तक की व रुई में १२ टके तक की तेजी आवेगी तथा शनि वृश्चिक राशिगत १६° अंश पर भ्रमण करने से ज्ञात हुआ कि पांचवे नवांश का भोग कर रहा है अतः कोष्टक में देखने से जानकारी प्राप्त हुई अरण्डा में १० टके तक व मूंगफली में ४॥ टके तक की तेजी आवेगी। इसी प्रकार से अन्य वस्तुओं की तेजी-मन्दी आंकी जा सकती है।

(२) इस पुस्तक के पृष्ठ संख्या ७१ पर चन्द्र का सूर्य के साथ पूर्णांश दृष्टि योग का फलादेश तेजीकारक ४ दिन के अन्तर्गत बताया गया है व पृष्ठ संख्या ८७ पर चन्द्र का शुक्र के साथ भी इस युति का फलादेश ४ दिन के

अन्तर्गत तेजीकारक बताया गया है ये दोनों युतियां ३० अप्रैल १९५७ को बन रही हैं जो एक साथ हो रही है अब हमें यह जानकारी प्राप्त करनी है कि इस युति से किन किन वस्तुओं में कितने टकों तक की तेजी आवेगी। सर्व प्रथम हमें यह देखना है कि ये ग्रह किस राशिगत भ्रमण कर रहे हैं। पंचांग या एफेमरीज आदि साधनों से ज्ञात हुआ कि चन्द्र, मेष राशिगत १६° अंश, व शुक्र भी मेष राशिगत २०° अंश पर भ्रमण कर रहा है। मेष राशिगत चन्द्र व शुक्र के भ्रमण करने से इन ग्रहों का स्वभाव भी तेजी कारक हो गया है। अत: सभी ग्रह तेजी कारक व राशि तेजी कारक तथा युति भी तेजी कारक होने से चतुर्कारण तेजी बन जाने से तथा एक साथ डबल योग होवे से यह तेजी ८, १२, १६, २० दिन तक की लम्बी लाइन भी बना रही है। चन्द्र चांदी आदि, सूर्य सोना आदि व शुक्र रुई आदि वस्तुओं के अधिष्ठाता हैं व मेष राशिगत गुड़, गुवार आदि वस्तुएं आती हैं। चन्द्र व सूर्य १६° अंश के होने से पंचम नवांश पर है कोष्टक में देखने से ज्ञात हुआ चांदी में ६ टके तक व सोना में ३ टके तक तथा शुक्र २०° अंश का होने से ६ठे नवांश का है जिससे रुई में १० टके तक और मेष राशिगत की वस्तुएं गुड़ व गुवार में ।।।) तक की तेजी आवेगी। इसी प्रकार से अन्य वस्तुओं की तेजी का मूल्यांकन किया जा सकेगा।

सूचना:—

एक साथ दो योग होने से समय व प्रभाव द्विगुणित हो गया है अर्थात ४ दिन के बजाय यह तेजी ८ दिन तक अपना प्रभाव दिखायेगी व तेजी भी दूनी हो जायगी जैसा कि उपरोक्त कोष्टक में ४ दिन के प्रभाव, का सानुपात दिया है उसका द्विगुणित करने से ८ दिन की तेजी निकल आवेगी।

(२) इस पुस्तक के पृष्ठ संख्या ७६ पर चन्द्र का मंगल के साथ चतुर्थांश दृष्टि योग मंदी कारक ४ दिन के अन्तर्गत लिखा गया है व पृष्ठ संख्या ६२ पर चन्द्र का शनि के साथ त्रितीयांश दृष्टि योग का फलादेश मंदी कारक ३ दिन

के अन्तर्गत लिखा हुआ है। ये दोनों योग एक साथ दिनांक २५ मई १९५७ को क्रमश: ८ बजकर ५० मिनट व ११ बजकर २६ मिनट पर बन रहे हैं। ये दोनों युतियां ३ घंटे के अन्तर्गत होने से विशेष फलकारी है अर्थात दोनों युतियां मिलकर डबल मंदीकारक हो जाती हैं। पंचांग अथवा एफेमरीज या अन्य किसी साधन से ज्ञात हुआ कि चन्द्र मीन राशिगत १९° अंश, मंगल मिथुन राशिगत १९° अंश शनि वृश्चिक राशिगत १८° अंश का है चन्द्र मंदी कारक है तथा मंगल मिथुन राशिगत होने से मंदी कारक हुआ क्योंकि मिथुन राशि मंदी कारक है किन्तु शनि स्वयं तेजी कारक है शनि का वृश्चिक राशिगत होने से इस मंदी को स्थिर नहीं रहने देगा अर्थात यह मंदी रियेक्शन देकर एक दम तेजी की ओर अग्रसर होगी। चन्द्र चांदी, मंगल अरण्डा व गुड़, शनि अलसी, सरसों, मूंगफली का अधिष्ठाता है। चन्द्र १९ अंश व मंगल भी १९° अंश के होने से ६ ठे नवांश के होते हैं अतः कोष्टक में देखने से ज्ञात होता है कि चांदी में ३ टके तक की अरण्डा में १९ टके तक की व गुड़ में १ टके तक की तथा शनि १८° अंश का होने से यह भी ६ ठे नवांशमें भ्रमण कर रहा है इस कारण अलसी में १ टके तक की, सरसों में १ टके तक की मूंगफली में ५ टके तक की मंदी आवेगी किन्तु यह मंदी स्थिर न रह कर अति शीघ्र ही बदल जायेगी क्योंकि पूर्व में ही बता चुके हैं कि शनि स्वयं भी तेजी कारक है और तेजी कारक राशि वृश्चिक पर भ्रमण कर रहा है।

(४) इस पुस्तक के पृष्ठ संख्या ७६ पर चन्द्र का मंगल के साथ तृतीयांश दृष्टि योग का फलादेश मंदी कारक ३ दिन के अन्तर्गत वर्णित है व चन्द्र का बुध के साथ द्वितियांश दृष्टियोग का फलादेश ७ दिन के अन्तर्गत मंदी कारक पृष्ठ संख्या ७९ पर लिखा हुआ है। ये दोनों युतियां १० जून १९५७ को हो रही हैं एक साथ डबल युति होने से डबल मन्दी का योग बन रहा है। चन्द्र तुला राशिगत २६° अंश, मंगल मिथुन राशिगत २९° अंश व बुध वृषभ राशिगत ३° का है। चन्द्र व बुध मंदी कारक है तथा मंगल भी मिथुन राशिगत होने

से मंदी कारक हो गया है । अतः चतुर्कोण मंदी कारक हैं । इस कारण से चन्द्र के आधिपत्यत्व की वस्तु चांदी में कोष्टक देखने से ४ टके तक की मंदी की सूचना देता है क्योंकि चन्द्र २६° अंश का होने से ८ वें नवांश में है कोष्टक में ८ वे नवांश पर १।। टका लिखा हुआ है चूंकि डबल योग होने से एक योग का समय ३ दिन दूसरे योग का समय ७ दिन दोनों का जोड़ १० दिन हुआ ४ दिन का १।। टका तो १० दिन का १।। का ढाई गुणा लगभग ४ टके होता है । इसी प्रकार से अन्य ग्रहों की वस्तुओं का मूल्यांकन किया जा सकता है ।

उपरोक्त ४ उदाहरण देकर हमने पूर्ण रूप से समझाने का प्रयत्न किया है आशा करता हूं कि बहुत कुछ समझ में आगया होगा । चूंकि यह पुस्तक वैसे ही बहुत बड़ी होगई फिर भी यदि इन सभी युतियों को अलग २ से समझाने का प्रयत्न भी करूं तो और भी बड़ी हो जायगी जिससे जन साधारण के क्रय करने के सामर्थ के बाहर हो जायगी । इस कारण से हमने सोचा है कि यदि आप लोगों की इच्छा हुई और यदि मांग अधिक बढ़ी तो हम २७७२ युतियों की सप्ली मेण्ट्री तैयार करके अलग से प्रकाशित करवा देंगे जिस से इन योगों के समझने में और भी सरलता रहेगी ।

सूचना:—

दृष्टि योगों को समझने के लिये कौनसा योग कब बन रहा है- हमारे यहां की प्रकाशित एस्ट्रोनोमीकल भारतीय एफेमरीज सन १९५५ से १९७० तक की क्रय करें । जिस में १२ ग्रह १६ वर्ष के दैनिक स्पष्ट किये गए हैं जिसके द्वारा भविष्य की तेजी, मंदी जानने के लिये दैनिक अंशात्मक दृष्टि योग शुद्ध बनाने की सुविधा प्राप्त हो सकेगी तथा ये भी ज्ञात किया जा सकेगा कि कौन सा ग्रह कब और कौनसी युति किस ग्रह के साथ बना रहा है ।

आपको दृश्य गणित के आधार पर सूक्ष्म दैनिक ग्रह स्पष्ट इस पुस्तक के प्राप्त हो जावेंगे मूल्य. १८।।) नेट ।

श्री महालक्ष्मी पंचांग ज्योतिष कार्यालय के नियम

इस कार्यालय में ज्योतिष सम्बन्धी प्रत्येक कार्य शास्त्रानुसार संतोषजनक रीति से किए जाते हैं। जन्मपत्र वर्षफल में आयु, सन्तान, स्त्री, धन, व्यौपार, नौकरी, शरीर का सुख-दुख, भाग्योदय का पूरा-पूरा विचार शास्त्र प्रमाणनुसार लेखा जाता है। प्रचीन तथा नवीन दोनों पक्षों से गणित होता है। दोनों पद्धतियों का पारिश्रमिक (शुल्क) भिन्न भिन्न है। जन्मपत्र बनाने की फीस २१) से १००) रु० तक। वर्षफल ११) से ५१) तक। एक भाव का सूक्ष्म विचार (यथार्थ निर्णय) के २५) रु०। आयु विचार (अंशायुगणित मारकेश विचार मृत्यु समय स्थान रोग आदि के निर्णय सहित)।

व्यापार के चांस—

चांदी, सोना, रुई, गुड़, तिलहन आदि के अनुभव सिद्ध लम्बी लाइन के एक तरफा पक्के चांस वर्ष भर में कभी कभी एक दो बार ही आते हैं—ऐसे समयों पर यदि पहले से ही सावधान होकर अपनी ग्रहदशा के अनुकूल होने पर व्यापार किया जाय तो अवश्य लाभ होता है। जो व्यापारी इस प्रकार की सीधी लाइनों से लाभ उठाना चाहते हों वे सज्जन अपनी कुण्डली के साथ ५१) रुपया पेशगी नीचे लिखे पते पर हमारे कार्यालय में भेजकर स्थाई ग्राहकों में नाम लिखाकर रसीद प्राप्त करले, समय पर उन्हें लाभदायक चांस भेजा जायगा। जो हमसे प्रत्यक्ष मिलना चाहें वे जबाबी पत्र भेजकर मिलने की तिथी (तारीख) पहिले ही निश्चित करलो।

अन्य प्रत्येक कार्य की आधी फीस मनीआर्डर द्वारा पत्र के साथ ही भेजना आवश्यक है। बिना प्रारम्भिक (एडवांस) प्राप्त हुए कार्य आरम्भ नहीं किया जायगा। उत्तर प्राप्त करने के लिये जबाबी कार्ड भेजना आवश्यक है।

श्री पं० गंगाप्रसादजी ज्योतिषाचार्य, ज्योतिषमार्त्तण्ड, ज्योतिषविद्यारत्न
अध्यक्ष—श्री महालक्ष्मी पंचांग कार्यालय मुरार, (मध्य प्रदेश)

प्रकाशक—श्री महालक्ष्मी पब्लिकेशन्स् मुरार (मध्य प्रदेश)

पिछले २५-३० वर्षों से सतत प्रयास द्वारा ज्योतिष शास्त्र को [illegible] आम [illegible] बनाते जो विषय सम्पादित किया गया है हम उस बहुमूल्य ज्योतिष [illegible] हिरण्यरत्न को जनता जनार्दन की सेवा में समर्पित करने आ रहे हैं। [illegible] लेख [illegible] से पाठकों को विदित हो जायगा कि ज्योतिष शास्त्र की क्या स्थिति है। [illegible] ढाई लाख श्लोकात्मक ग्रन्थों का जीर्णोद्धार करके नूतन रचना, जिसमें [illegible] संहिता और फलित शास्त्र को भारत [illegible] द्वीप ही नहीं अपितु पंच-[illegible] अन्तर्गत यूरोप, अमेरिका, रूस आदि देशान्तरों में भी ज्योतिष की ध्वनि को गुंजाना हमारा ध्येय है। खगोल का साहित्य तीन विभागों में पाया जाता है (१) सिद्धांत (२) संहिता (३) होरा त्रिस्कन्धों में विभक्त ज्योतिष शास्त्र की २५०००० ढाई लाख श्लोकों में रचना की गई है। सर्व प्रथम सिद्धांत भाग है। [illegible] कि २५-३० ग्रन्थ हैं और ३० हजार श्लोकों में अंकित है। आकाश और [illegible] का संबंध महर्षियों ने निरूपण किया है वही शास्त्र ज्योतिष का सिद्धांत है [illegible] कक्षा विभाग में प्रकाशित ग्रहों की स्थिति, चाल, वक्र, मार्ग, उदय, अस्तादि [illegible] ज्ञान सिद्धांत ग्रन्थों में प्रतिपादन किया है। ग्रहों का आकार एवं छोटाई, [illegible] लम्बाई चौड़ाई ऊंचाई निचाई और गणना का स्पष्टीकरण (गणित) [illegible] बताया है। आकाशीय जानकारी के लिये सिद्धांत विभाग ने पृथ्वी आकाश [illegible] बीच के स्तर को आतिवृत्त निरूपण किया है और आकाश में दिव्य ज्योतियों की जानकारी ग्रह के नामों से बतायी गई है। सूर्य, पृथ्वी, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, प्रजापति (हर्शल) वरुण (नेपच्यून) यम (प्लूटो) के नामों से आकाश में विद्यमान हैं।

ग्रहों का कक्षा भ्रमण—(१) सूर्य या रवि एक [illegible] (२) पृथ्वी का [illegible] [illegible] दिन (३) चन्द्र या सोम २७ दिन (४) मंगल या भौम [illegible] वर्ष (५) बुध या सौम्य साढ़े आठ मास (६) बृहस्पति या गुरु तेरह वर्ष (७) शुक्र या [illegible] १२ मास (८) शनि या मन्द तीस वर्ष (९) राहु या [illegible] १८ वर्ष (१०) केतु या शिखी १८ वर्ष (११) प्रजापति या हर्शल ८४ वर्ष (१२) वरुण [illegible] नेपच्यून १६५ वर्ष (१३) यम या प्लूटो २४८ वर्ष में कक्षा भ्रमण करते हैं।